सुबह सवेरे

A Daily News Magazine
भोपाल
शुक्रवार, 06 मार्च, 2026

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 23, अंक 182, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

खामेनेई की मौत का दुनिया के मुस्लिम देशों पर क्या असर होगा?

रौहान अहमद

अमेरिका और इसराइल के हमलों में ईरान के सर्वोच्च नेता आयतुल्लाह अली ख़ामेनेई की मौत के बाद ईरानी राष्ट्रपति मसूद पेज़ेश्कियान की ओर से एक संदेश जारी किया गया है। इसमें कहा गया है कि इस 'भयानक अपराध' का जवाब दिया जाएगा। पेज़ेश्कियान ने कहा, 'हम अपनी पूरी ताकत और पुख्तान इरादे के साथ, मुस्लिम समुदाय और दुनिया की आजाद जनता के समर्थन से, इस 'भयानक अपराध' के दोषियों को पछताने पर मजबूर कर देंगे। अली ख़ामेनेई ने 37 वर्षों तक 'बेहद अक्लमंदी और दूरदर्शिता के साथ इस्लाम के मोर्चे का नेतृत्व किया और उनकी मौत के बाद ईरान एक मुश्किल दौर से गुज़रेगा।'

कहने को तो 86 वर्षीय ख़ामेनेई ईरान के सर्वोच्च नेता थे लेकिन ईरान से बाहर जैसे पाकिस्तान सहित दुनिया के कई देशों में शिया विचारधारा के बीच उनके पैरोकारों की एक बड़ी संख्या मौजूद है। भारत का शिया समुदाय भी उन्हें अपना सुप्रीम लीडर मानता है। इराक़, पाकिस्तान, सीरिया और दुनिया के दूसरे मुस्लिम देशों में रैलियों के दौरान शिया मुसलमान ख़ामेनेई की तस्वीरें हाथों में लिए दिखाई दिए। पाकिस्तान में तो अमेरिकी दूतावास में आग लगा दी गई और गोलीबारी में कई लोग मारे गए। इसके अलावा, गिलगित-बाल्टिस्तान में हिंसक प्रदर्शनों के दौरान संयुक्त राष्ट्र के कार्यालयों और दूसरी संपत्तियों को आग लगा दी गई।

ऐसे में सवाल उठता है कि अमेरिका और इसराइल के हमलों में ख़ामेनेई की मौत का दुनिया पर क्या असर पड़ेगा? अतीत में ईरान और इसराइल के बीच तनाव के दौरान मध्य पूर्व में हिज़्बुल्लाह, हूती विद्रोहियों और इसी तरह के समूहों ने ईरान का समर्थन किया था, लेकिन पिछले दो वर्षों में इन समूहों को अमेरिका और इसराइल की सैन्य कार्रवाइयों में भारी नुकसान हुआ है। अमेरिका के 'न्यू लाइन्स इंस्टीट्यूट' के सीनियर डायरेक्टर और मध्य पूर्व की राजनीति पर गहरी नज़र रखने वाले डॉक्टर कामरान बुखारी मानना है कि ख़ामेनेई की मौत के बाद अमेरिका और उसके सहयोगियों के लिए खतरे जरूर पैदा हो सकते हैं। हालांकि यह इस बात पर निर्भर करता है कि रिवोल्यूशनरी गार्ड्स और उसकी क़ुद्स फ़ोर्स की क्षमताएं अब क्या हैं और अन्य देशों में उनके प्रॉक्सी ग्रुप्स में कितना दम बचा है। हाल के महीनों में हमने देखा कि इसराइल ने हिज़्बुल्लाह के पूरे केंद्रीय नेतृत्व को ख़त्म कर दिया और सीरिया में बशर अल-असद की सरकार गिर गई लेकिन ईरान उनकी मदद के लिए कुछ नहीं कर सका।' बुखारी का मानना है कि अली ख़ामेनेई की मौत का दुनिया भर के शिया मुसलमानों को दुख ज़रूर होगा, लेकिन इराक़, लेबनान और सीरिया जैसे देशों में ईरान के सर्वोच्च नेता की तुलना में आयतुल्लाह सिस्तानी के अनुयायियों की संख्या अधिक है 'और वे धर्मगुरुओं के राजनीति में आने को पसंद नहीं करते।'

मध्य पूर्व पर गहरी नज़र रखने वाले दूसरे विश्लेषक हिब्रू यूनिवर्सिटी में एशियाई अध्ययन, इस्लामी और मध्य पूर्व अध्ययन विभाग के एसोसिएट प्रोफ़ेसर सिमोन वोल्फ़गांग फुक्स कहते हैं कि इसकी संभावना है कि हिज़्बुल्लाह इस स्थिति में मूकदर्शक की भूमिका निभाना बंद कर दे। हालांकि अक्टूबर 2023 के बाद से हिज़्बुल्लाह सहित दूसरे ईरान समर्थित समूह कमज़ोर हो गए हैं और वह अब शक्ति संतुलन को बिगाड़ नहीं सकते। मुस्लिम दुनिया के कुछ वर्ग ख़ामेनेई के साम्राज्यवाद विरोधी रुख़ का समर्थन ज़रूर करते हैं, लेकिन मुझे नहीं लगता कि वह ख़ामेनेई की मौत पर आंसू बहाएंगे। '

ख़ामेनेई की मौत का ईरानी सरकार पर क्या असर पड़ेगा और क्या इसके प्रभाव देश से बाहर भी पड़ेंगे? जानकारों का मानना है कि ख़ामेनेई की मौत से ईरान की वर्तमान सरकार का तंत्र पूरी तरह ध्वस्त तो नहीं होगा, लेकिन 'यह फिर कभी पहले जैसा भी नहीं हो पाएगा।' डॉक्टर कामरान बुख़ारी कहते हैं, 'रहबर-ए-आला (सर्वोच्च नेता) इस व्यवस्था के केंद्रीय पुर्जे थे, हालांकि वह कई वर्षों से बीमार थे और राज्य के मामलों को चलाने के लिए उनका झुकाव पूरी तरह से रिवोल्यूशनरी गार्ड्स या ईरानी सेना पर था। रिवोल्यूशनरी गार्ड्स अब अतीत की तुलना में कम शक्तिशाली हैं। ख़ामेनेई की मौत एक युग का अंत है। इसके बाद वर्तमान व्यवस्था फ़िलहाल पूरी तरह से ध्वस्त नहीं होगी लेकिन इसमें बदलाव तो ज़रूर आएंगे।'

'ख़ामेनेई ने अपनी ज़िंदगी में हमेशा पश्चिम और खास तौर से अमेरिका को अविश्वास की निगाह से देखा और शोधकर्ताओं को लगता है कि उनके बाद बदलाव आना तय है। भविष्य में ईरान के नए सर्वोच्च नेता को ईरान की राह बदलने की आज़ादी होगी।'

शासन व्यवस्था में क्या बदलाव आएगा, यह तो वक़्त ही बताएगा लेकिन ख़ामेनेई की मौत कई दूसरे देशों के लिए परेशानी की वजह ज़रूर बन सकती है। दुनिया भर में ईरान समर्थक समूहों पर शोध करने वाले फ़िलिप स्मिथ कहते हैं, 'जब आप इस्लामी क्रांति की कट्टर विचारधाराओं से जूझते हैं, तो आप 'विलायत-ए-फ़क़ीह' (इस्लामी धार्मिक नेतृत्व का संरक्षण) को नज़रअंदाज़ नहीं कर सकते। यह विचारधारा धार्मिक, राजनीतिक और सामाजिक भी है। रिवोल्यूशनरी गार्ड्स को पता है कि इन सिद्धांतों के ज़रिए लोगों को सामुदायिक सहित कई मोर्चों पर सक्रिय किया जा सकता है।'

फ़िलिप के अनुसार, 'समस्या यह है कि ख़ामेनेई पूरी मुस्लिम उम्माह के नेता बनना चाहते थे, लेकिन वह सही मायने में एक आयतुल्लाह नहीं थे और वह आयतुल्लाह सिस्तानी के मुक़ाबले कम हैसियत रखते थे।'

इसीलिए खुमैनी की मौत के बाद ईरानी संविधान में संशोधन करके 'रहबर' (नेता) के लिए 'मरजा' (अथॉरिटी) होने की शर्त ख़त्म कर दी गई थी। ख़ामेनेई अयातुल्लाह रूहोल्लाह खुमैनी के पैरोकार थे, जिसके तहत उलेमा को 'इमाम-ए-ज़माना' का नायब (प्रतिनिधि) और इस्लामी न्यायशास्त्र और शिक्षा का विशेषज्ञ होने के नाते राजनीतिक शक्ति का स्रोत माना जाता है। आमतौर पर शिया धार्मिक और राजनीतिक विचार में इमाम-ए-ज़माना की 'अरसा-ए-ग़ायबत' (ओझल होने) की अवधि में स्थापित राज्य शक्ति को ज़बरदस्ती क़ब्ज़ाया हुआ माना जाता था।

दूसरी तरफ़ अयातुल्लाह खामेनेई ने इसके विपरीत इस पर ज़ोर दिया कि 'इमाम-ए-ज़माना' के प्रकट होने तक सरकार या राजनीतिक शक्ति से दूरी नहीं बनाई जा सकती। इसलिए, उनके अनुसार ज़रूरत इस बात की थी कि विद्वान और मुजतहिद (नई परिस्थितियों में इस्लाम के अनुसार फ़ैसला लेने वाले) आगे बढ़ें और सत्ता संभालकर समाज में सुधार करें। ईरान ने 'विलायत-ए-फ़क़ीह' को लोगों को सक्रिय करने के हथियार के रूप में इस्तेमाल किया और अपनी सीमाओं के बाहर इसे राजनीति के लिए इस्तेमाल किया। प्रोफ़ेसर फ़ुक्स कहते हैं, 'पाकिस्तान, भारत, इराक़ और लेबनान में भले ही लोग अपने जीवन में उनके धार्मिक आदेशों का पालन न करते हों, लेकिन वह इन जगहों पर अपने अनुयायियों के बीच एक गर्व और शक्ति के प्रतीक के रूप में याद रखे जाएंगे।'

(बीबीसी हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

नीतीश कुमार ने राज्यसभा के लिए नामांकन दाखिल किया

● बोले- नई सरकार को सहयोग रहेगा, जेडीयू ऑफिस में तोड़फोड़ ● तेजस्वी ने कहा- भाजपा ने हाईजैक किया

पटना (एजेंसी)। बिहार के सीएम नीतीश कुमार ने गुरुवार को विधानसभा पहुंचकर राज्यसभा कैंडिडेट के लिए नामांकन दाखिल किया। सीएम के साथ बीजेपी अध्यक्ष नितिन नवीन, रामनाथ ठाकुर, उपेन्द्र कुशवाहा और शिवेश कुमार ने भी नामांकन दाखिल किया। इस दौरान केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह भी मौजूद रहे।

नीतीश का कार्यकाल बिहार के इतिहास में स्वर्णिम पृष्ठ के रूप में लिखा जाएगा : अमित शाह: नामांकन के बाद अमित शाह ने कहा, उनका ये कार्यकाल बिहार के इतिहास में स्वर्णिम पृष्ठ के रूप में लिखा जाएगा। बिहार के विकास के सारे मायने को उन्होंने गति देने का काम किया। उन्होंने अपने शासनकाल में बिहार को

जंगलराज से मुक्त करने का काम किया। उन्होंने न केवल बिहार की सड़कों को गांव तक जोड़ा, उसकी स्थिति में भी सुधार किया। इतने लंबे कार्यकाल में विधायक, सांसद, मुख्यमंत्री व केंद्रीय मंत्री रहते हुए उनके कुर्ते पर कभी दाग नहीं लगा।

नीतीश बोले- नई सरकार को पूरा सपोर्ट

नामांकन से पहले नीतीश कुमार ने अपने एक्स पर लिखा कि, 'संसदीय जीवन शुरू करने के समय से ही मेरे मन में एक इच्छा थी कि मैं बिहार विधान मंडल के दोनों सदनों के साथ संसद के भी दोनों सदनों का सदस्य बनूं। इसी क्रम में इस बार हो रहे चुनाव में राज्यसभा का सदस्य बनना चाह रहा हूं। बिहार की नई सरकार को मेरा सपोर्ट रहेगा। नीतीश के ऐलान पर तेजस्वी यादव ने कहा है कि, बिहार में महाराष्ट्र मॉडल बीजेपी ने लागू किया है। भाजपा ने नीतीश कुमार को इतना टॉर्चर किया कि उन्हें इस्तीफा देना पड़ रहा है। बीजेपी अपनी सहयोगी पार्टी को खत्म कर देती है।

कांग्रेस ने 6 उम्मीदवारों का ऐलान किया

आज सुबह ही कांग्रेस ने राज्यसभा चुनाव के लिए 6 उम्मीदवारों का ऐलान किया। तेलंगाना से अभिषेक मनु सिंघवी और छत्तीसगढ़ से फूलो देवी नेताम को दोबारा उम्मीदवार बनाया है। दोनों वर्तमान में राज्यसभा सांसद हैं।पार्टी ने हरियाणा से करमवीर सिंह बौद्ध और हिमाचल प्रदेश से अनुराग शर्मा को उम्मीदवार बनाया है। तेलंगाना की दूसरी सीट के लिए कांग्रेस ने वेम नरेंद्र रेड्डी को मैदान में उतारा है। तमिलनाडु में स्टालिन की पार्टी डीएमके ने कांग्रेस को एक राज्यसभा सीट दी है। कांग्रेस ने यहां से एम. क्रिस्टोफर तिलक को उम्मीदवार बनाया है। इधर, भाजपा भी दो बार में 13 उम्मीदवारों के नाम की घोषणा कर चुकी है।

शरद की सुबह

नक़्श की तरह उभरना
भी तुम्ही से सीखा
रफ़्ता रफ़्ता नज़र आना
भी तुम्ही से सीखा

तुम से हासिल हुआ इक
गहरे समुंदर का सुकूत
और हर मौज से लड़ना
भी तुम्ही से सीखा

अच्छे शेरों की परख तुम ने
ही सिखलाई मुझे
अपने अंदाज़ से कहना
भी तुम्ही से सीखा

तुम ने समझाए मिरी सोच
को आदाब अदब
लफ़्ज़ ओ मअनी से
उलझना भी तुम्ही से सीखा

रिश्ता-ए-नाज़ को जाना
भी तो तुम से जाना
जामा-ए-फ़ख़्र पहनना
भी तुम्ही से सीखा

छोटी सी बात पे ख़ुश
होना मुझे आता था
पर बड़ी बात पे चुप
रहना तुम्ही से सीखा।

– ज़ेहरा निगाह

जल गंगा संवर्धन अभियान विकास का आधार और भावी पीढ़ियों के भविष्य को सुरक्षित रखने का प्रयास : मुख्यमंत्री

सार्वजनिक स्थलों पर सुगमता से स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराना व्यक्तिगत और सामाजिक दायित्व हो

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि जल गंगा संवर्धन अभियान केवल पर्यावरण नहीं, विकास का आधार भी है। यह भावी पीढ़ियों के भविष्य को सुरक्षित रखने का भी एक प्रयास है। अभियान अंतर्गत संचालित हर गतिविधि में राज्य से ग्राम स्तर तक जनभागीदारी को प्रोत्साहित करना आवश्यक है। भू-जल स्त्रोतों के दोहन से गिरते भू-जल स्तर, प्राचीन जल संग्रहण संरचनाओं के क्षरण और नदियों के कम होते प्रवाह का प्रभाव सभी पर पड़ रहा है। इस स्थिति में सुधार के लिए भी सभी को मिलकर प्रयास करना होगा। प्रदेश में पिछले जल गंगा संवर्धन अभियान के सुखद परिणाम प्राप्त हुए हैं। वर्ष-2026 के अभियान में भी हमें जन-जन की भागीदारी सुनिश्चित करते हुए अभियान को प्रभावी और परिणामूलक बनाना है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव मंत्रालय में गुरूवार को आयोजित बैठक को संबोधित कर रहे थे। बैठक में अपर मुख्य सचिव डॉ. राजेश राजौरा, श्री अशोक बर्णवाल, श्री संजय दुबे, श्री नीरज मंडलोई, श्रीमती दीपाली रस्तोगी, श्री शिवशेखर शुक्ला एवं अन्य अधिकारी उपस्थित थे। समस्त जिला कलेक्टर्स वर्चुअली शामिल हुए। बैठक में वर्ष 2025 के जल गंगा संवर्धन अभियान की प्रमुख उपलब्धियों और वर्ष-2026 की कार्ययोजना पर चर्चा हुई।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने जल संरचनाओं के जलग्रहण क्षेत्र पर अतिक्रमण के विरूद्ध कार्यवाही करने के निर्देश दिए। उन्होंने ऐसी गतिविधियों पर सतत् रूप से निगरानी रखने की आवश्यकता बताई। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रदेश से निकलने वाली नदियों के उद्गम स्थलों को व्यवस्थित रूप से विकसित किया जाएगा और उनके आस-पास सघन पौधरोपण किया जाए। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने ग्रामीण और शहरी क्षेत्र में व्यक्तिगत पहल तथा सामुदायिक सहभागिता से प्याऊ लगाने की व्यवस्था को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता बताई। उन्होंने प्लास्टिक की बोतल के उपयोग को हतोत्साहित करने के निर्देश दिए। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सार्वजनिक स्थलों पर सुगमता से स्वच्छ शीतल पेयजल उपलब्ध कराने को सामाजिक दायित्व के रूप में समाज में स्थापित करने की आवश्यकता बताई। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि जल गंगा संवर्धन अभियान के अंतर्गत जिन जिलों में बेहतर नवाचार हुए हैं, वे अपने यह प्रयास अन्य जिलों से साझा करें तथा जिले परस्पर इस तरह के नवाचारों का आदान-प्रदान करें।

19 मार्च से प्रारंभ होगा राज्य स्तरीय अभियान

बैठक में बताया गया कि जल गंगा संवर्धन अभियान वर्ष प्रतिपदा 19 मार्च से एक साथ आरंभ किया जाएगा। प्रदेश के सभी जिलों में विक्रम संवत् और पर्यावरण, जलीय संरचनाओं के संरक्षण व संवर्धन पर गतिविधियां संचालित होंगी। अभियान के अंतर्गत 23 से 24 मई तक भोपाल में अंतर्राष्ट्रीय जल सम्मेलन का आयोजन होगा, 25 से 26 मई तक शिप्रा परिक्रमा यात्रा, 26 मई को गंगा दशहरा के अवसर पर शिप्रा तट उज्जैन में महादेव नदी कथा, 30 मई से 7 जून तक भारत भवन भोपाल में सदानीरा समागम होगा। इसमें प्रदेश की कृषि भूमि के सैटेलाइट मैपिंग का लोकार्पण किया जाएगा। अभियान के अंतर्गत विभिन्न विभागों द्वारा अभियान अंतर्गत कार्य प्रस्तावित किये गये।

उदयपुर में तोप गरजे, गोलियों की तड़तड़ाहट से सहमा इलाका

आधी रात 451 साल पुरानी परंपरा निभाने जुटे हजारों लोग, बारूद की होली खेली

उदयपुर (एजेंसी)। लाल पगड़ियों और सजे-धजे कपड़ों में आधी रात को हाथों में तलवारें लिए लोग खड़े थे। चारों तरफ आग उगलती तोपें थीं। एक के बाद एक धमाके हो रहे थे। बंदूकों से गोलियां चल रही थीं। माहौल ऐसा जैसे कोई महायुद्ध छिड़ गया हो।

यह नजारा उदयपुर से 45 किलोमीटर दूर उदयपुर-चित्तौड़गढ़ नेशनल हाईवे पर स्थित मेनार गांव में बुधवार (4 मार्च) की रात का है। करीब 451 साल पहले मुगल चौकी ध्वस्त करने की खुशी में मेनारिया ब्राह्मण समाज बारूद की होली खेलता है। हर साल होलिका दहन के 48 घंटे बाद यानि तीसरी रात (जमरा बीज) को यह आयोजन होता है। खास बात यह है कि बुज़ुर्ग पीछे नहीं रहते। वह भी युवाओं के साथ मिलकर धमाके करते हैं। ढोल-दुंदुभि बजाया जाता है। तलवारों के साथ गैर डांस (राजस्थान का पारम्परिक प्रसिद्ध नृत्य) किया जाता है। मशाल लेकर गांव के रास्तों की मोर्चाबंदी होती है। यह सब देखने के लिए महाराष्ट्र, गुजरात, मध्य प्रदेश और विदेशों तक से लोग मेनार गांव पहुंचे थे। कहा जाता है मेवाड़ में महाराणा अमर सिंह के साम्राज्य के दौरान जगह-जगह मुगलों की छावनियां (सेना की टुकड़ियां) बनी हुई थीं। मेनार गांव के पूर्वी छोर पर भी मुगल छावनी थी। छावनी के आतंक से लोग परेशान थे। मेनारिया ब्राह्मणों की भी परेशानियां बढ़ने लगी थीं। मेनारवासियों को वल्लभनगर छावनी पर जीत का समाचार मिला तो गांव के लोग ओंकारेश्वर चबूतरे पर जुटे और छावनी पर हमले की रणनीति बनाई।

चारों तरफ भीड़, धमाके, जोश और गर्व

मेनार गांव में जमरा बीज की रात का माहौल किसी युद्ध स्थल से कम नहीं था। चारों तरफ भीड़। पैर रखने की जगह नहीं। गांव के लोगों ने सेना वाली पोशाक पहनी थी। हाथों में मशाल और तलवारें थीं। टुकड़ियां जब बारूद की होली खेलने गांव के ओंकारेश्वर चौक पहुंचीं तो शोर मच गया। रोम-रोम में रोमांच दौड़ गया। देखते ही देखते तोपें बारूद उगलने लगीं। गोला-बारूद से पूरा इलाका दहलने लगा।

- **परंपरा निभाई, जाजम बिछाकर की मेहमान नवाजी–** दोपहर ऐतिहासिक बारूद की होली की शुरुआत हुई। सबसे पहले गांव के ओंकारेश्वर मंदिर के चौक में शाही लाल जाजम बिछाई गई। गांव और आसपास के इलाकों से यहां पहुंचे मेनारिया ब्राह्मण समाज के पंचों, मौतवीरों (बुजुर्ग) का स्वागत किया गया। उनकी मेहमाननवाजी की गई। इसके बाद गांव के जैन समाज के लोगों ने अबीर-गुलाल बरसाना शुरू किया। सभी लोग आपस में गले मिले और होली की शुभकामनाएं दीं।
- **गांव के 5 रास्तों की मोर्चाबंदी की गई–** रात 10 :15 बजे के बाद रस्में शुरू हुईं। पूर्व रजवाड़ों के सदस्य सैनिकों की पोशाक धोती-कुर्ता और कसुमल पाग (साफा) बांधे तलवारें और बंदूकें लेकर घरों से निकले। अलग-अलग रास्तों से ललकारते हुए वे गोलियां दागते-तलवारें लहराते हुए ओंकारेश्वर चौक पहुंचे। यहां चबूतरे पर गांव के 5 रास्तों की मोर्चाबंदी का आदेश दिया गया। पांच टुकड़ियां 5 मशालें लेकर ढोल की थाप पर गांव की मोर्चाबंदी करने के लिए रवाना हो गईं। पांचों दलों ने शोर करते हुए जब एक साथ कूच किया तो रोमांच चरम पर पहुंच गया। हजारों लोग इस नजारे के गवाह बने।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 20 °c

न्यूनतम 18°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ शुक्रवार, 06 मार्च 2026

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

पांच मंजिला इमारत में लगी आग, पति-पत्नी की मौत

15 घायल; 40 गाड़ियां जलकर खाक

गाजियाबाद/खोड़ा (एजेंसी)। गाजियाबाद के खोड़ा क्षेत्र में स्थित एक पांच मंजिला इमारत में भीषण आग लग गई। इस दुखद दुर्घटना में एक पति-पत्नी की मौत हो गई है, जबकि 15 से अधिक लोग घायल हुए हैं। घायलों में से पांच लोगों की हालत अभी भी गंभीर बनी हुई है। यह आग 3 फरवरी की आधी रात को लगी थी, जिसका कारण शॉर्ट सर्किट बताया जा रहा है। आग की शुरुआत बेसमेंट में खड़ी एक दुपहिया वाहन में हुए शॉर्ट सर्किट से हुई। इस आग ने तेजी से बेसमेंट में मौजूद सभी वाहनों को अपनी चपेट में ले लिया। आग की लपटें इतनी भीषण थीं कि उन्होंने पूरी पांच मंजिला इमारत को घेर लिया। इमारत में कुल 43 फ्लैट बने हुए हैं, जिनमें से कई प्रभावित हुए। आग की चपेट में 40 से अधिक दुपहिया वाहन आए और पूरी तरह जल गए। आग लगने के समय इमारत के भीतर 200 से अधिक लोग फंसे हुए थे। मृतक पति-पत्नी की मौत का कारण दम घुटना बताया गया है।

देश को मजबूत नेतृत्व की जरूरत : राहुल गांधी

ईरानी युद्धपोत पर हमले को लेकर राहुल ने मोदी पर किया कड़ा प्रहार

नईदिल्ली (एजेंसी)। श्रीलंका के तट के पास अमेरिकी पनडुब्बी द्वारा ईरानी युद्धपोत 'आईआरआईएस देना' को डुबोए जाने के बाद भारत में राजनीतिक पारा चढ़ गया है। लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने इस घटना पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की खामोशी पर सवाल उठाते हुए उन्हें जमकर घेरा है। राहुल गांधी ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर पोस्ट करते हुए कहा कि पश्चिम एशिया का संघर्ष अब भारत के पिछले दरवाजे तक पहुंच गया है। उन्होंने आरोप लगाया कि जब देश को एक मजबूत नेतृत्व की जरूरत है, तब प्रधानमंत्री ने भारत की रणनीतिक स्वायत्तता का सरेंडर कर दिया है। राहुल ने आगाह किया कि भारत की 40 प्रतिशत तेल आपूर्ति और गैस (एलपीजी/एलएनजी) का बड़ा हिस्सा होर्मुज जलडमरूमध्य से होकर गुजरता है, जिस पर अब सीधा खतरा मंडरा रहा है।

मेहमान नवाजी और विश्वासघात का सवाल- पूर्व विदेश सचिव कंवल सिब्बल ने इस घटना पर भारत की संवेदनशीलता का मुद्दा उठाया। उन्होंने बताया कि आईआरआईएस देना विशाखापत्तनम में आयोजित इंटरनेशनल फ्लीट रिव्यू 2026 2026 और मिलन 2026 अभ्यास में भारत के विशेष निमंत्रण पर शामिल होने आया था।

पीएनबी ने एटीएम से कैश निकालने की लिमिट 50 प्रतिशत घटाई

नईदिल्ली (एजेंसी)। पंजाब नेशनल बैंक (पीएनबी) ने अपने चुनिंदा डेबिट कार्ड्स (एटीएम कार्ड) से रोजाना कैश निकालने की लिमिट को आधा कर दिया है। नए नियम 1 अप्रैल, 2026 से लागू होंगे। बैंक ने यह फैसला रिस्क कंट्रोल को मजबूत करने और ग्राहकों की सुरक्षा बढ़ाने के लिए लिया है।

1 लाख वाली लिमिट अब 50,000 हुई- पीएनबी ने अपने डेबिट कार्ड्स को दो मुख्य कैटेगरी में बांटकर लिमिट रिवाइज की है। जिनकी डेली लिमिट पहले 1 लाख रुपए थी, इसे अब 50 हजार रुपए कर दिया है। वहीं दूसरी कैटेगरी में प्रीमियम कार्ड्स की लिमिट 1.5 लाख रुपए से घटाकर 75 हजार रुपए कर दी गई है।

युद्ध का छठवां दिन

होर्मुज बंद, तेल की सप्लाई बाधित

● ईरान के खिलाफ बड़े ऑपरेशन की प्लानिंग कर रहा इजरायल ● ईरान के मोबाइल मिसाइल लॉन्च ट्रक को उड़ाया, अहम ठिकानों पर मिसाइलें दागीं

नईदिल्ली (एजेंसी)। अमेरिका और इस्त्राइल की ओर से ईरान पर किए जा रहे हमलों के छठे दिन युद्ध का दायरा अब मिडिल ईस्ट की सीमाओं को पार कर हिंद महासागर तक फैल चुका है। एक तरफ जहां ईरान के 33 नागरिक और सैन्य ठिकानों पर बड़े हमले हुए हैं, वहीं दूसरी तरफ होर्मुज जलडमरूमध्य के बंद होने से वैश्विक व्यापार और ऊर्जा सप्लाई पर बड़ा संकट खड़ा हो गया है।

ईरान में अब 1,045 लोगों की मौत,6000 घायल

ईरानी स्टेट मीडिया के मुताबिक, हमलों के पांच दिनों में अब तक 1,045 लोगों की मौत हो चुकी है और 6,000 से ज्यादा लोग घायल हुए हैं। ईरानी विदेश मंत्रालय ने दावा किया है कि अमेरिका और इस्त्राइल ने 33 नागरिक ठिकानों को निशाना बनाया है। यूएस सेंट्रल कमांड ने गुरुवार को अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर एक वीडियो शेयर किया। इसमें ईरान के मोबाइल मिसाइल लॉन्च ट्रक को उड़ाया। इजराइली और अमेरिकी सेनाओं ने गुरुवार को भी ईरान के अहम ठिकानों पर मिसाइलें दागीं। ईरान के इजराइल और गल्फ देशों में अमेरिकी सैन्य ठिकानों के साथ अन्य जगहों पर भी हमले जारी हैं।

युद्ध का ग्लोबल शिपिंग और अंतरराष्ट्रीय व्यापार पर रहा है असर ?

वैश्विक व्यापार के लिए हालात बेहद गंभीर हैं क्योंकि आईआरजीसी ने रणनीतिक रूप से अहम होर्मुज जलडमरूमध्य को बंद करने की घोषणा कर दी है, इससे समुद्री व्यापार लगभग ठप हो गया है। वहीं, कूटनीतिक मोर्चे पर स्पेन ने अमेरिका को अपने सैन्य ठिकानों के इस्तेमाल की इजाजत नहीं दी है। इसके जवाब में अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने स्पेन के साथ

सभी तरह का व्यापार बंद करने की कड़ी धमकी दी है। गोल्डमैन सैक्स की एक रिपोर्ट के मुताबिक, रणनीतिक होर्मुज जलडमरूमध्य के आसपास बढ़ते खतरे से तेल और गैस की वैश्विक सप्लाई प्रभावित हो सकती है, जिससे भारत सहित एशिया के बड़े आयातक देशों की चिंता बढ़ गई है। **वैश्विक एलएनजी व्यापार का लगभग 19 प्रतिशत हिस्सा इसी जलमार्ग से गुजरता है-** रिपोर्ट के अनुसार, दुनिया के कुल तेल व्यापार का लगभग एक-पांचवां हिस्सा और तरलीकृत प्राकृतिक गैस (एलएनजी) की बड़ी मात्रा सामान्यत : इसी जलडमरूमध्य से होकर गुजरती है। इसलिए यह मार्ग ऊर्जा आयात पर निर्भर देशों के लिए बेहद महत्वपूर्ण माना जाता है।

सैन्य संघर्ष समाधान नहीं : पीएम मोदी

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गुरुवार को दिल्ली में फिनलैंड के राष्ट्रपति अलेक्जेंडर स्टब के साथ द्विपक्षीय वार्ता की। इस दौरान उन्होंने मिडिल ईस्ट और यूक्रेन में जारी जंग को जल्दी खत्म करने की अपील की। मोदी ने कहा कि मिलिट्री लड़ाई (सैन्य संघर्ष) से कोई भी मसला हल नहीं हो सकता। पीएम मोदी ने कहा कि भारत और फिनलैंड दोनों ही कानून के शासन, संवाद और कूटनीति में विश्वास रखते हैं। उन्होंने कहा- हम इस बात पर सहमत हैं कि सिर्फ सैन्य संघर्ष से कोई भी समस्या हल नहीं हो सकती। चाहे यूक्रेन का मुद्दा हो या मिडिल ईस्ट का भारत सभी विवादों के शांतिपूर्ण समाधान और शांति स्थापित करने की कोशिशों का समर्थन करता रहेगा।

खामेनेई की मौत पर भारत ने जताई संवेदना

नई दिल्ली (एजेंसी)। ईरान के सुप्रीम लीडर अयातुल्ला अली खामेनेई की मौत के बाद भारत ने आधिकारिक संवेदना व्यक्त की है। विदेश सचिव विक्रम मिस्री ने नई दिल्ली स्थित ईरान दूतावास में शोक पुस्तिका पर हस्ताक्षर किए। इससे पहले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी क्षेत्र में शांति और कूटनीति के जरिए समाधान की अपील की है। भारत सरकार की ओर से विदेश सचिव विक्रम मिस्री ने नई दिल्ली स्थित ईरान के दूतावास पहुंचकर ईरान के मारे गए सुप्रीम लीडर अयातुल्ला अली खामेनेई के प्रति शोक व्यक्त किया। इस दौरान उन्होंने दूतावास में रखी शोक पुस्तिका पर हस्ताक्षर कर अपनी संवेदनाएं दर्ज कीं।

ईरानी युद्धपोत पर अमेरिका का हमला,87 सैनिकों की मौत, 32 का रेस्क्यू किया,ईरान बोला अमेरिका को भुगतना होगा

अमेरिका-इजराइल और ईरान जंग में अमेरिका ने भारत से लौट रहे एक ईरानी युद्धपोत आईआरआईएस देना को श्रीलंका के पास हमला कर डुबा दिया है। हमले में अब तक 87 ईरानी नौसैनिक मारे गए हैं। यह जानकारी श्रीलंकाई सरकार ने दी है। वहीं ईरान ने अमेरिका को अंजाम भुगतने को तैयार रहना चाहिए।

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष व विधायक

खंडेलवाल ने पार्टी कार्यालय परिवार के सदस्यों को गुलाल लगाकर दी होली की शुभकामनाएं

भोपाल। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष व विधायक श्री हेमंत खण्डेलवाल ने गुरुवार को भाजपा प्रदेश कार्यालय में कार्यालय परिवार के समस्त सदस्यों को गुलाल लगाकर होली पर्व की हार्दिक शुभकामनाएं दीं। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि होली केवल रंगों का त्योहार नहीं, बल्कि आपसी स्नेह, विश्वास, सहयोग और एकता का प्रतीक है। उन्होंने कहा कि भारतीय जनता पार्टी की निरंतर बढ़ती ताकत और सफलता के पीछे कार्यकर्ताओं के साथ-साथ कार्यालय परिवार के सदस्यों का भी अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान है। पार्टी कार्यालय में कार्य करने वाले कर्मचारी संगठन की उस मजबूत नींव की तरह हैं, जो निरंतर और निष्ठापूर्वक अपने दायित्वों का निर्वहन करते हुए संगठन को सशक्त बनाते हैं।

भाजपा की कार्य संस्कृति परिवार भाव आधारित - भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष श्री हेमंत खण्डेलवाल ने कहा कि भाजपा की कार्य संस्कृति परिवार भाव पर आधारित है। यहां कार्य करने वाला प्रत्येक कर्मचारी, चाहे वह स्वच्छता कर्मी हो, तकनीकी सहयोगी हो या प्रशासनिक कार्यों से जुड़ा कर्मचारी पूरी ईमानदारी और समर्पण के साथ पार्टी के कार्यों को गति देता है। इनकी मेहनत और अनुशासन के कारण संगठन की गतिविधियां सुचारू रूप से संचालित होती हैं। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देश और मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में मध्यप्रदेश में भाजपा परिवार निरंतर विस्तार कर रहा है और संगठन की मजबूती में कार्यालय परिवार की भूमिका भी उतनी ही महत्वपूर्ण है।

कर्मचारियों के सुख-दुख में साथ खड़ी है पार्टी- भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष श्री हेमंत खण्डेलवाल ने कहा कि होली का यह पावन पर्व हमें यह संदेश देता है कि जैसे विभिन्न रंग मिलकर सुंदरता और उत्साह का वातावरण बनाते हैं, उसी प्रकार संगठन में कार्य करने वाले सभी लोग मिलकर भाजपा को और अधिक मजबूत बनाते हैं, जिसमें कार्यालय परिवार के सदस्यों की भूमिका महत्वपूर्ण है। श्री खण्डेलवाल ने कहा कि भाजपा में कार्य करने वाले कर्मचारी केवल कर्मचारी नहीं, बल्कि परिवार के सदस्य हैं। संगठन सदैव उनके हितों और सम्मान का ध्यान रखता है तथा सुख-दुख के हर अवसर पर उनके साथ खड़ा रहता है। उन्होंने कहा कि विधानसभा और लोकसभा चुनावों में पार्टी को मिली ऐतिहासिक विजय में कार्यालय परिवार के सदस्यों का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

सुरक्षा धर्म से ऊपर है: बॉम्बे हाईकोर्ट

● मुंबई एयरपोर्ट के पास नमाज अदा करने की अनुमति मांगने वाले लोगों को राहत देने से किया इनकार

मुंबई (एजेंसी)। बॉम्बे हाईकोर्ट ने गुरुवार को अहम फैसला सुनाया है। बॉम्बे हाईकोर्ट ने रमजान के दौरान छत्रपति शिवाजी महाराज इंटरनेशनल एयरपोर्ट के पास एक अस्थायी शेड में नमाज पढ़ने की इजाजत मांग रहे टैक्सी और ऑटो-रिक्शा चालकों को राहत देने से इनकार कर दिया। इस दौरान हाईकोर्ट ने कहा कि सुरक्षा धर्म से ऊपर है। जस्टिस बी पी कोलाबावाला और जस्टिस फिरदौस पूनीवाला की बेंच ने कहा कि रमजान इस्लाम का जरूरी हिस्सा है, लेकिन इसे मानने वाले किसी भी जगह खासकर हवाई अड्डे के आस-पास, जहां सुरक्षा को लेकर उच्च स्तर की चिंता है, नमाज पढ़ने का धार्मिक अधिकार होने का दावा नहीं कर सकते।

बंगाल में वोट देना लोगों की जान के लिए खतरा

सीएम धामी बोले- एसआईआर में फर्जी वोटर हटने से घबराईं दीदी, योजनाओं पर उठाए सवाल

देहरादून (एजेंसी)। उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह होली मनाने के बाद मिशन बीजेपी के जुड़ चुके हैं। होली मनाने के बाद सीएम धामी अपना कर्तव्य निभाते हुए बंगाल पहुंचे। वहां उन्होंने दीदी की सरकार पर जमकर हमला बोला। सीएम पुष्कर सिंह धामी ने कहा-दीदी ने घुसपैठियों को यहां पर घुसपैठ कराई है। उत्तराखंड के राज्यपाल के साथ होली खेलने के बाद सीएम धामी दोपहर को पड़ोसी देश बाग्लादेश की सीमा पर स्थित पश्चिमी बंगाल के कूचबिहार पहुंचे। जहां से उन्होंने भाजपा के मिशन बंगाल की शुरुआत की।

बीजेपी के लिए क्यों अहम 'पोरिबोर्तन यात्रा'- जनता तक पहुंच और समर्थन जुटाना: यह यात्रा बीजेपी को पश्चिम बंगाल के हर विधानसभा क्षेत्र में सीधे जनता से जुड़ने का मौका देगी। इससे पार्टी को जमीनी स्तर पर अपनी बात पहुंचाने और समर्थन जुटाने में मदद मिलेगी। रैलियों और जनसभाओं के माध्यम से, बीजेपी मतदाताओं को आकर्षित करने और उन्हें अपने पक्ष में करने की कोशिश करेगी।

अमेरिका-इजराइल ईरान जंग का 6वां दिन, कोलकाता-दुबई फ्लाइट शुरू

नई दिल्ली (एजेंसी)। अमेरिका-इजराइल और ईरान जंग का छठा दिन था। 28 फरवरी से शुरू हुई जंग के कारण मिडिल ईस्ट के देशों में भारत के लिए उड़ान सेवा प्रभावित हुई है। हालांकि बीते 2 दिन में हालात आंशिक रूप से सुधरे हैं।

स्पाइसजेट मिडिल ईस्ट में फंसे यात्रियों की वापसी के लिए गुरुवार को यूएई से 13 स्पेशल फ्लाइट्स चलाएगी। इनमें 12 फुजैराह से और 1 दुबई से चलेंगी। फुजैराह से मुंबई के लिए सात और दिल्ली के लिए पांच स्पेशल फ्लाइट्स चलेंगी। वहीं एक फ्लाइट दुबई से मुंबई आएगी।

इधर, ईरान के सुप्रीम लीडर खामेनेई की मौत पर जम्मू-कश्मीर के श्रीनगर में विरोध प्रदर्शन हुए। 1 मार्च से आज लगातार पांचवे दिन श्रीनगर में लाल चौक पर बैरिकेडिंग है, सुरक्षाबल की तैनाती है।

डिप्टी सीएम ने होली पर भगवान जगन्नाथ के दर्शन किये

भोपाल। होली पर्व पर उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने भगवान जगन्नाथ के दर्शन कर आशिर्वाद प्राप्त किया तथा प्रदेश वासियों की सुख, समृद्धि एवं मंगल कामना की। उन्होंने भगवान जगन्नाथ के महाप्रसाद कढ़ी-भात एवं खीर का श्रृद्धालुओं को वितरण कर पुण्य कार्य में सेवाभाव से सहभागिता की।

प्राकृतिक खेती का किया निरीक्षण

भोपाल। उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने हरिहरपुर धाम में प्राकृतिक खेती का निरीक्षण किया। उन्होंने प्राकृतिक रूप से उगाई गई पालक व चुंकदर की खेती को देखा तथा निर्माणाधीन वायो इनपुट सेंटर मल्टी वेयर फार्मिंग प्रकल्प का अवलोकन कर आवश्यक निर्देश दिये। उल्लेखनीय है कि रीवा जिले में प्राकृतिक खेती का बसामन मामा सहित हरिहरपुर में भी किसानों के लिये प्रशिक्षण केन्द्र स्थापित किया गया है। जहां प्राकृतिक खेती की जा रही है और साथ ही साथ किसानों को प्राकृतिक खेती के संबंध में प्रशिक्षण भी दिया जाता है।

आमजन से की भेंट

भोपाल। उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने अमहिया निवास रीवा में आमजनों से भेंट की। उन्होंने लोगों को होली की बधाई दी तथा उनकी समस्यायें सुनीं। उप मुख्यमंत्री ने प्राप्त आवेदनों पर तत्काल समाधानकारक कार्यवाही के निर्देश दिये।

उप मुख्यमंत्री ने निर्माण कार्यों की समीक्षा की

भोपाल। उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने न्यू सर्किट हाउस राजनिवास रीवा में आयोजित बैठक में विभिन्न निर्माण कार्यों की समीक्षा की। उन्होंने हिनौती गौधाम में 25 हजार गौवंश के संरक्षण के लिये शेड निर्माण कार्यों की समीक्षा करते हुए कहा कि शेड निर्माण कार्य गुणवत्तापूर्ण हो तथा समय सीमा में पूरा हो। उन्होंने बाउण्ड्रीबाल निर्माण सहित शेष कार्यों को शीघ्र पूर्ण करने के निर्देश दिये। रीवा एयरपोर्ट के विस्तारीकरण कार्य में सभी औपचारिकताओं की पूर्ति सुनिश्चित कराकर कार्य को गति देने के निर्देश उप मुख्यमंत्री द्वारा दिये गये। बैठक में अजगरहा से इटहा, नीम चौराहा से मनकहरी तथा गड्डी रोड के निर्माण कार्य की समीक्षा के दौरान अद्यतन स्थिति की उप मुख्यमंत्री ने जानकारी ली। उन्होंने सभी तालाब के रखरखाव तथा उसके उन्नयन एवं चिरहुला मंदिर मार्ग विकास व परिसर विकास कार्यों की समीक्षा करते हुए कार्यों को शीघ्र पूर्ण करने के निर्देश दिये। बैठक में कलेक्टर श्रीमती प्रतिभा पाल, आयुक्त नगर निगम डॉ. सौरभ सोनवणे, एसडीएम सिरमौर दृष्टि जायसवाल, एसडीएम हुजूर डॉ. अनुराग तिवारी सहित विभागीय अधिकारी उपस्थित रहे।

परिवार ने मुख्यमंत्री डॉ. यादव का माना आभार

मुख्यमंत्री ने मध्यप्रदेश की खिलाड़ी बिटिया की सुरक्षित स्वदेश वापसी के लिए किए प्रयास

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने अल्बानिया के तिराना शहर में आयोजित वर्ल्ड रेसलिंग चैंपियनशिप रैंकिंग सीरीज़ में हिस्सा लेने गई मध्यप्रदेश की बेटी सुश्री प्रियांशी प्रजापत की सुरक्षित स्वदेशी वापसी के लिए उच्च स्तरीय प्रयास किए जिसके फलस्वरूप खिलाड़ी बेटी वापस भारत पहुंच गई है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सुश्री प्रियांशी को उत्कृष्ट प्रदर्शन, रजत पदक जीतने के लिए बधाई भी दी है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने प्रियांशी के उज्जैन निवासी परिजन से भी आज वीडियो कॉल से आज चर्चा की। प्रियांशी के पिता श्री प्रजापत ने मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने द्वारा दिए गए सहयोग के लिए उनका आभार व्यक्त किया। गत 24 फरवरी से 28 फरवरी तक अल्बानिया में हुई वर्ल्ड रेसलिंग प्रतियोगिता में प्रियांशी ने 26 फरवरी को यह मुकाबला जीता था। प्रियांशी ने कज़ाकिस्तान, अमेरिका और अल्बानिया की पहलवानों को हराकर शानदार प्रदर्शन किया। पिछले वर्ष एशियन सीरीज़ में भी

उन्होंने स्वर्ण पदक जीतकर देश और प्रदेश का नाम रोशन किया था।

उल्लेखनीय है कि हाल ही में मध्य-पूर्व एशिया में बढ़ते युद्ध तनाव के कारण प्रियांशी और उनके साथ गए सभी खिलाड़ी वहाँ फँस गए थे। इस कठिन समय में मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने लगातार खिलाड़ी बिटिया की सुरक्षित वापसी के लिए आवश्यक सभी संसाधन उपलब्ध करवाए। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने हमेशा उन्हें अपनी बेटी के समान स्नेह और समर्थन दिया है। जब वे मध्यप्रदेश कुश्ती क्षेत्र के अध्यक्ष थे, तब भी उन्होंने 2 लाख रुपये की आर्थिक सहायता प्रदान की थी।

'प्रधानमंत्री ने विपरीत परिस्थितियों में समाधान की राह निकाली है'

मध्य पूर्व एशिया में युद्ध की स्थिति में मध्यप्रदेश के निवासियों की सहायता के लिए विशेष व्यवस्थाएं

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि मध्य पूर्व एशिया खाड़ी युद्ध की स्थिति पर मध्य प्रदेश के नागरिकों की सहायता के लिए महत्वपूर्ण व्यवस्थाएं की गई हैं। इसके लिए विशेष कंट्रोल रूम स्थापित किया गया है। मध्यप्रदेश शासन इस बारे में संवेदनशील है। गृह विभाग, मध्यप्रदेश शासन और नई दिल्ली में आवासीय आयुक्त कार्यालय मध्य प्रदेश भवन की टीम तैनात है। सीएम हेल्पलाइन 181 नंबर पर परिजन से प्राप्त हो रही सूचनाओं को गंभीरता से लिया जा रहा है। सभी का पंजीयन और रिकॉर्ड भी रखा जा रहा है। भारत शासन के विदेश मंत्रालय से समन्वय स्थापित कर नागरिकों को सुरक्षित वापस स्वदेश बुलवाने की व्यवस्था की गई है। इस अवधि में नागरिकों के लिए भोजन और अन्य व्यवस्थाओं की चिंता की जा रही है। परिजनों से भी संवाद स्थापित किया गया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बताया कि नई दिल्ली में स्थापित कंट्रोल रूम का दूरभाष नंबर 011-26772005, व्हाट्सऐप नम्बर - 9818963273 और ईमेल आईडी - mphelpdeskgulf@gmail.com है।

खाड़ी देशों में फंसे एमपी के निवासियों के लिए मोहन सरकार ने उठाया बड़ा कदम

नई दिल्ली में कंट्रोल रूम शुरू, हेल्पलाइन नंबर भी जारी

भोपाल (नप्र)। खाड़ी देशों में फंसे एमपी के लोगों के लिए मोहन सरकार ने बड़ा कदम उठाया है। इसके साथ ही दिल्ली में उनकी मदद के लिए एक कंट्रोल रूम स्थापित की गई है। सरकार की तरफ से हेल्पलाइन नंबर भी जारी किया गया है। वहां फंसे लोग इन नंबरों पर संपर्क कर सकते हैं। सरकार उन्हें मदद पहुंचाएगी।

नई दिल्ली में कंट्रोल रूम की शुरुआत

मध्यप्रदेश शासन द्वारा वर्तमान अप्रत्याशित परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए खाड़ी देशों में निवासरत मध्यप्रदेश के नागरिकों की सहायता के उद्देश्य से मध्यप्रदेश भवन, नई दिल्ली में 24×7 कंट्रोल रूम की स्थापना की गई है। यह कंट्रोल रूम खाड़ी देशों में अध्ययन, रोजगार, व्यवसाय, पर्यटन अथवा अन्य कारणों से रह रहे प्रदेशवासियों को आवश्यक सहयोग एवं मार्गदर्शन प्रदान करेगा। किसी भी प्रकार की आपात अथवा सामान्य सहायता की आवश्यकता होने पर संबंधित व्यक्ति और उनके परिजन कंट्रोल रूम से संपर्क कर सकते हैं।

हेल्पलाइन नंबर जारी

कंट्रोल रूम के माध्यम से आवश्यकतानुसार भारत सरकार तथा अन्य संबंधित एजेंसियों से समन्वय स्थापित कर सहायता उपलब्ध कराई जाएगी।

24×7 कंट्रोल रूम संपर्क विवरण

दूरभाष- 011-26772005
व्हाट्सएप- 9818963273
ई-मेल- mphelpdeskgulf@-gmail.com

इन नंबरों पर करें संपर्क

वहीं, मध्य प्रदेश शासन ने खाड़ी देशों में रह रहे समस्त मध्यप्रदेशवासियों से अपील की है कि आवश्यकता पड़ने पर उपलब्ध कराए गए संपर्क माध्यमों का उपयोग करें। गौरतलब है कि ईरान के दुबई पर हमले का बाद कई लोग फंस गए थे। इनमें पूर्व विधायक संजय शुक्ला और कई कारोबारी थे। हालांकि उनमें से कुछ लोग लौट आए हैं। अभी भी प्रदेश के अलग-अलग जिलों से खाड़ी के अलग-अलग देशों में फैले हैं। वीडियो जारी कर वे लोग मदद की मांग कर रहे हैं। सरकार के इस कदम खाड़ी देशों में रह रहे लोगों राहत मिलेगी।

करोड़पति कॉन्स्टेबल का 100 करोड़ का गोल्ड-कैश जब्त होगा

आयकर विभाग ने बेनामी माना, सौरभ शर्मा को वास्तविक मालिक, चेतन गौर को बेनामीदार बताया

भोपाल (नप्र)। आरटीओ के पूर्व करोड़पति कॉन्स्टेबल सौरभ शर्मा और उसके सहयोगी चेतन सिंह गौर से जुड़े मामले में बरामद 100 करोड़ रुपए के सोना और नकदी को सरकारी खजाने में जमा किया जाएगा। आयकर विभाग की एडजुडिकेटिंग अथॉरिटी ने भोपाल स्थित बेनामी निषेध इकाई (बीपीयू) की कार्रवाई को सही ठहराया है। अथॉरिटी ने सौरभ शर्मा को सोने का वास्तविक मालिक बताया है।

सौरभ शर्मा दिसंबर 2024 में तब चर्चा में आया था, जब लोकायुक्त, प्रवर्तन निदेशालय और आयकर विभाग ने उसके ठिकानों पर छापामार कार्रवाई की थी। इसी दौरान 18 और 19 दिसंबर की दरमियानी रात भोपाल के मेंडोरी में इनोवा कार से 11 करोड़ रुपए कैश और 51.8 किलो गोल्ड जब्त किए गए थे। इसका लिंक भी सौरभ से जुड़ा था।

इसके बाद सौरभ और उसके सहयोगियों की बेशुमार संपत्ति सामने आई थी। हालांकि, अब तक हुई पूछताछ में सौरभ शर्मा ने यह स्वीकार नहीं किया है कि मेंडोरी में इनोवा कार में मिला सोना और कैश उसका है।

सौरभ, चेतन को अपील का मिलेगा मौका- एडजुडिकेटिंग अथॉरिटी द्वारा आयकर विभाग की बेनामी विंग की कार्रवाई को सही ठहराने के बाद अब सौरभ शर्मा और चेतन सिंह गौर के पास अपील का विकल्प है। दोनों यदि अपील करते हैं, तो सुनवाई के बाद इस पर फैसला होगा।

यदि तय समय सीमा के भीतर अपील नहीं की जाती है, तो भारत सरकार इस मामले में नीलामी की कार्रवाई कर गोल्ड और कैश को जब्त कर सकती है। भोपाल में सौरभ शर्मा के 19 दिसंबर को सुबह छापा पड़ा था। इसी दिन दोपहर 2.06 बजे आरटीओ लिखी रेड प्लेट लगी सफेद रंग की इनोवा कार सामने से गुजरी। आयकर विभाग की टीम को इसी कार में सोना मिला था।

अगस्त 2025 में की गई थी अस्थायी कुर्की

आयकर विभाग की भोपाल स्थित बेनामी निषेध इकाई ने पीबीपीटी अधिनियम, 1988 के तहत अगस्त 2025 में सोना, नकदी और इनोवा वाहन की अस्थायी कुर्की की थी। उस समय इसकी कुल कीमत करीब 52 करोड़ रुपए आंकी गई थी। जांच एजेंसियों के अनुसार बरामद सोना और नकदी का वर्तमान मूल्य करीब 100 करोड़ रुपए आंका गया है। अब एडजुडिकेटिंग अथॉरिटी के फैसले के बाद इन संपत्तियों को जब्त करने की प्रक्रिया शुरू की जाएगी।

चेतन सिंह गौर को बेनामीदार घोषित किया

आयकर विभाग ने इस लेनदेन को पीबीपीटी अधिनियम की धारा 2(9)(ए) के तहत बेनामी लेनदेन माना है। जांच में चेतन सिंह गौर को बेनामीदार और रिटायर्ड आरटीओ कांस्टेबल सौरभ शर्मा को वास्तविक मालिक बताया गया है।

खंडवा में मस्जिद पर पत्थरबाजी करने वाला जाकिर और वसीम गिरफ्तार, कबूतर मारने के लिए पत्थर बरसाए थे

खंडवा (नप्र)। शहर के खड़कपुरा स्थित मस्जिद में मंगलवार रात्रि को नमाज के दौरान हुई पथराव की घटना में कोतवाली पुलिस ने त्वरित कार्रवाई की है। कुल छह आरोपियों में से दो को बुधवार को गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तार आरोपियों की पहचान जाकिर और वसीम के रूप में हुई है। घटना के बाद शहर में तनाव की स्थिति बन गई थी लेकिन पुलिस की सक्रियता से 24 घंटे के भीतर आरोपियों को सलाखों के पीछे भेज दिया गया। मंगलवार रात जब मस्जिद में नमाजी इबादत में मशगूल थे, तभी अचानक मस्जिद की खिड़कियों पर पत्थर आकर गिरे। अचानक हुए इस हमले से नमाज अदा कर रहे लोगों में दहशत फैल गई। तत्काल नमाज समाप्त कर कोतवाली पुलिस को सूचना दी गई।

वरिष्ठ अधिकारियों ने संभाला मोर्चा

घटना की जानकारी मिलते ही आईपीएस अमित कुमार, कोतवाली थाना प्रभारी प्रवीण आर्य और खंडवा सीएसपी अभिनव वारंगे तत्काल पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंचे। आसपास के क्षेत्र में सर्चिंग की गई, लेकिन प्रारंभिक जांच में मौके से कोई प्रत्यक्ष सुराग नहीं मिला। इसके बाद पुलिस की टीम ने मस्जिद परिसर और आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगाली। फुटेज में छह संदिग्ध युवक नजर आए, जिनके चेहरे स्पष्ट रूप से कैद हो गए थे। इसके आधार पर सीएसपी अभिनव वारंगे के नेतृत्व में एक विशेष टीम गठित कर आरोपियों की तलाश शुरू की गई।

नाबालिग भी थे इसमें शामिल

जांच के दौरान सामने आया कि छह में से चार आरोपी नाबालिग हैं। जबकि जाकिर और वसीम बालिग पाए गए। दोनों को बुधवार को गिरफ्तार कर लिया गया। पुलिस ने सख्त संदेश देने के उद्देश्य से दोनों आरोपियों का मस्जिद के पास से जुलूस भी निकाला, ताकि शहरवासियों को यह स्पष्ट हो सके कि कानून हाथ में लेने वालों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाएगी। पुलिस अधिकारियों का कहना है कि जुलूस निकालने का उद्देश्य यह था कि जिन लोगों ने शहर में तनाव फैलाने की कोशिश की, उनके चेहरे जनता के सामने आएं और समाज में ऐसा कृत्य करने वालों के प्रति नकारात्मक संदेश जाए।

पूछताछ में दिया कबूतर उड़ाने का बहाना

खंडवा पुलिस पूछताछ में दोनों आरोपियों ने दावा किया कि वे कबूतरों को उड़ाने के लिए पत्थर मार रहे थे और गलती से पत्थर मस्जिद की खिड़कियों पर जा लगे। हालांकि स्थानीय लोगों ने इस दावे पर सवाल उठाए हैं। क्षेत्रवासियों का कहना है कि आरोपी नशे के आदी हैं और अक्सर नशे की हालत में क्षेत्र में उपद्रव करते रहते हैं। कोतवाली पुलिस ने दोनों आरोपियों को देर शाम विशेष न्यायालय में पेश किया, जहां से उन्हें न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया गया। नाबालिग आरोपियों के संबंध में किशोर न्याय बोर्ड के तहत वैधानिक प्रक्रिया अपनाई जा रही है।

मस्जिद पर पत्थरबाजी के बाद बढ़ रहा था तनाव

- पुलिस ने समय रहते मामले का किया खुलासा
- गिरफ्तारी के बाद आरोपी ने कहा कि कबूतर भगाने के लिए चलाए पत्थर
- पत्थरबाजी में टूट गए थे मस्जिद के शीशे
- आरोपियों की गिरफ्तारी से सुलझ गया मामला

डीआईजी की अपील के बीच हुई घटना

घटना से एक दिन पूर्व ही खंडवा डीआईजी मनोज कुमार राय ने सोशल मीडिया के माध्यम से नागरिकों से अपील की थी कि सभी लोग त्योहारों को शांति और सौहार्द के साथ मनाएं। ऐसे समय में पथराव की घटना ने शहर में कई चर्चाओं को जन्म दे दिया था। हालांकि, पुलिस की तत्परता और 24 घंटे के भीतर की गई कार्रवाई की सोशल मीडिया पर जमकर सराहना हो रही है। नागरिकों ने उम्मीद जताई है कि भविष्य में इस तरह की घटनाओं पर सख्ती से रोक लगेगी और शहर का अमन-चैन कायम रहेगा।

राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग ने भोपाल एम्स और पुलिस को जारी किया नोटिस, 15 दिनों के अंदर मांगा जवाब

भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश के भोपाल स्थित एम्स में एक महिला डॉक्टर के आत्महत्या करने के मामले में राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग ने पुलिस और स्वास्थ्य विभाग को नोटिस जारी किया है। एनएचआरसी के सदस्य प्रियंक कानूनगो ने यह जानकारी दी। डॉक्टर ने विभाग के एचओडी पर प्रताड़ना के आरोप लगाकर घातक कदम उठाया था।

अस्पताल प्रबंधन नहीं कर रही कार्रवाई- प्रियंक कानूनगो ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर पोस्ट के जरिए बताया कि भोपाल के एम्स में महिला असिस्टेंट प्रोफेसर सृष्टि की ओर से एचओडी डॉक्टर परवेज की प्रताड़ना और हुमिलिएशन से तंग आकर बेहोश करने वाली दवाई के ओवरडोज से आत्महत्या करने वाली घटना की शिकायत प्राप्त हुई है। प्रियंक कानूनगो के अनुसार, शिकायत में कहा गया है कि महिला डॉक्टर की ओर से तीन बार प्रताड़ना देने वाले डॉक्टर परवेज के खिलाफ शिकायत करने के बावजूद अस्पताल प्रबंधन ने कार्यवाही नहीं की और मामले को दबाने का प्रयास किया। आखिरकार महिला डॉक्टर ने आत्महत्या कर ली।

भोपाल पुलिस और एम्स प्रबंधन को नोटिस जारी किया- उन्होंने कहा कि शिकायत गंभीर है और संज्ञान लेकर जांच के लिए भोपाल पुलिस, एम्स भोपाल के प्रबंधन और केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय को नोटिस जारी किया गया है। सभी को जांच रिपोर्ट देने के निर्देश दिए गए हैं। प्रियंक कानूनगो ने अपनी पोस्ट में लिखा कि हमारी संवेदनाएं पीड़ित परिवार के साथ हैं। एक होनहार डॉक्टर की आत्महत्या बेहद दुखद है। दोषी को सजा दिलवाना और व्यवस्था में सुधार सुनिश्चित करेंगे।

डॉ. रश्मि वर्मा ने भी दी थी जान

इससे पहले भी भोपाल एम्स में एक महिला डॉक्टर ने आत्महत्या की थी। एम्स भोपाल के इमरजेंसी और ट्रॉमा सेंटर में असिस्टेंट प्रोफेसर डॉक्टर रश्मि वर्मा 11 दिसंबर को अपने हॉस्टल के कमरे में बेहोश पाई गईं, उनकी पल्स रेट और हार्टबीट कमजोर थी। कथित तौर पर महिला डॉक्टर ने एनेस्थेटिक इंजेक्शन का ओवरडोज लिया था। उन्हें उसी रात अस्पताल में भर्ती कराया गया, लेकिन 25 दिनों के बाद मौत हो गई।

रतलाम में ट्रेन के बाथरूम में जज की पत्नी की मिली लाश, दोनों अलग-अलग कोच में कर रहे थे सफर

रतलाम (नप्र)। ट्रेन के बाथरूम में एक महिला पैसेंजर का शव मिला है। वह एक जज की पत्नी थीं। इसके बाद रतलाम रेल मंडल के जावरा स्टेशन पर हड़कंप मच गया। पुलिस ने गेट तोड़कर बाथरूम से शव निकाला है। परिजन शव को अपने साथ लेकर चले गए हैं।

ट्रेन के अंदर ही मिली लोकेशन- वहीं, जीआरपी ने पर जीआरपी को सूचना दी। इसके बाद जीआरपी ने स्टेशन पर लगे सीसीटीवी कैमरों की जांच शुरू की तो स्टेशन पर उतरती महिला नहीं दिखी। निंबाहेड़ा जीआरपी ने आगे के स्टेशनों पर रेल पुलिस को घटना के बारे में जानकारी दी।

पत्नी नजर नहीं आई

दरअसल, जज राजकुमार चौहान और उनकी पत्नी उषा चौहान कांचीगुड़ा-भगत की कोठी एक्सप्रेस में सफर कर रहे थे। दोनों का रिजर्वेशन अलग-अलग कोच में था। मिली जानकारी के अनुसार राजस्थान के सोयत स्टेशन से दोनों निंबाहेड़ा के लिए इस ट्रेन में सवार हुए थे। निंबाहेंड़ा स्टेशन पर ट्रेन पहुंची तो राजकुमार चौहान उतर गए लेकिन पत्नी नहीं उतरी। ऐसे में अपने निर्धारित समय से ट्रेन स्टेशन से रवाना हो गई।

जीआरपी को दी सूचना- जज राजकुमार चौहान ने अपनी पत्नी की तलाश काफी की। साथ ही कॉल लगाया तो उन्होंने उठाया नहीं। इसके बाद उन्होंने निंबाहेड़ा स्टेशन महिला के मोबाइल लोकेशन को ट्रैक करना शुरू किया तो ट्रेन के अंदर ही मिली। इसके बाद महिला जिल बोगी में सवार थी, उसकी तलाशी ली गई। इसके बाद टॉयलेट की जांच की गई तो एक टॉयलेट का दरवाजा अंदर बंद मिला। अंदर से कोई आवाज नहीं आ रही थी।

बाथरूम में मिली लाश- टॉयलेट का दरवाजा तोड़ा गया तो अंदर में जज की पत्नी उषा चौहान की लाश थी। इसके बाद महिला को तुरंत जावरा अस्पताल ले जाया गया है। वहां, डॉक्टरों ने जांच के बाद उसे मृत घोषित कर दिया है। घटना के बाद महिला के परिजन वहां पहुंचे और बिना पीएम करवाए ही शव को अपने साथ ले गए। रतलाम रेल मंडल में ही जावरा स्टेशन आता है।

फ्लाई ऐश उपयोगिता में उत्कृष्ट प्रदर्शन पर मिले चार प्रतिष्ठित राष्ट्रीय पुरस्कार

सतपुड़ा, अमरकंटक और श्री सिंगाजी ने 100 प्रतिशत से अधिक उपयोगिता दर से स्थापित किया नया मानक

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश पॉवर जनरेटिंग कंपनी लिमिटेड ने विद्युत उत्पादन के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण एवं प्रदूषण नियंत्रण के क्षेत्र में अपनी प्रतिबद्धता का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करते हुए राष्ट्रीय स्तर पर बड़ी उपलब्धि अर्जित की है। कंपनी के सतपुड़ा ताप विद्युत गृह सारनी, श्री सिंगाजी ताप विद्युत गृह दोंगलिया व अमरकंटक ताप विद्युत गृह चचाई को फ्लाई ऐश के वैज्ञानिक, सुनियोजित एवं अधिकतम उपयोग के लिये किए जा रहे सतत् प्रयास करने के लिए गोवा में आयोजित 15 वें फ्लाई ऐश उपयोगिता पुरस्कार 2026 समारोह में चार प्रतिष्ठित राष्ट्रीय सम्मानों से नवाजा गया। ऊर्जा एवं पर्यावरण प्रबंधन के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्यों को प्रोत्साहित करने वाली एक प्रतिष्ठित संस्था मिशन एनर्जी फाउंडेशन द्वारा आयोजित राष्ट्रीय समारोह में यह सम्मान प्रदान किए गए।

श्री सिंगाजी ताप विद्युत गृह को मिले दो पुरस्कार

समारोह में सतपुड़ा ताप विद्युत गृह सारनी को स्टेट सेक्टर 500 से 1500 मेगावाट तक वर्ग में और अमरकंटक ताप विद्युत गृह को स्टेट सेक्टर पब्लिक यूटिलिटी 500 मेगावाट से कम वर्ग में फ्लाई ऐश के उत्कृष्ट व असाधारण उपयोग करने करने के लिए पुरस्कृत किया गया। वहीं श्री सिंगाजी ताप विद्युत परियोजना को दो सर्वोच्च सम्मान फ्लाई ऐश के उत्कृष्ट व असाधारण उपयोग करने और ओवरऑल चैंपियन-फ्लाई ऐश मैनेजमेंट एक्सीलेंस के लिए प्रदान किए गए।

एक करोड़ से अधिक मीट्रिक टन फ्लाई ऐश का निस्तारण

श्री सिंगाजी ताप विद्युत गृह दोंगलिया (खंडवा) द्वारा वित्तीय वर्ष 2024-25 के दौरान कुल 61,21,066 मीट्रिक टन ऐश का सफलतापूर्वक निस्तारण एवं उपयोग सुनिश्चित किया गया। यह उपलब्धि 161 प्रतिशत उपयोगिता दर को दर्शाती है। यह न केवल वर्तमान फ्लाई ऐश के शत-प्रतिशत उपयोगिता का प्रमाण है, बल्कि पूर्व में संचित (लीगेसी) ऐश के बड़े पैमाने पर वैज्ञानिक निस्तारण को भी रेखांकित करती है। सतपुड़ा ताप विद्युत गृह सारनी ने वित्तीय वर्ष 2023 से 2025 तक के निर्धारित किए गए लक्ष्य को 119 प्रतिशत की संचयी उपयोगिता दर से आसानी से हासिल कर 34,12,785 मीट्रिक टन रख को निष्पादित किया। अमरकंटक ताप विद्युत गृह चचाई ने वित्तीय वर्ष 2024-25 में 204 प्रतिशत की उपयोगिता दर से 6,66,438 मीट्रिक टन राख का निस्तारण किया। इस प्रकार तीन ताप विद्युत गृहों द्वारा 1,02,00,289 मीट्रिक टन फ्लाई ऐश का निस्तारण किया।

संपादकीय

बेगुनाहों की मौत का दोषी कौन?

ईरान, इजराइल और अमेरिका के बीच जबर्दस्त जंग छिड़े छह दिन हो चुके हैं और इसके जल्द थमने के आसार नहीं है। उल्टे इसका विस्तार ही होता जा रहा है। यह भीषण युद्ध जिन भी कारणों से हो रहा हो, लेकिन इसका कहर उन आम लोगों पर टूट रहा है, जिनका युद्ध से कोई सीधा सम्बन्ध नहीं है। दक्षिणी ईरान के शहर मिनाब में लड़कियों के एक स्कूल पर हुए हमले में 160 से ज्यादा छात्राओं और स्कूल स्टाफ के जनाजे एक साथ निकले तो दुनिया के हर संवेदनशील इंसान की आंखें नम हो गईं। ईरान का आरोप है कि यह हमला इजराइल ने किया। जबकि इजराइल ने इस मामले में चुप्पी साध रखी है। अमेरिका ने भी हमले की जिम्मेदारी लेने के बजाए यह कहा है कि हम जांच करवा रहे हैं कि यह हमला किसने किया। अमेरिकी विदेश मंत्री रुबियो ने कहा कि अमेरिका जानबूझकर किसी स्कूल को निशाना नहीं बनाएगा। नागरिक ढांचे को निशाना बनाने में हमारी कोई रुचि नहीं है और साफ तौर पर ऐसा करने का कोई कारण भी नहीं है। इस बीच संयुक्त राष्ट्र संघ के मानवाधिकार कार्यालय ने ईरान में एक लड़कियों के स्कूल पर हुए हमले की जांच कराने की मांग की है। बच्चियों के अंतिम संस्कार का लाइव प्रसारण ईरान के सरकारी टेलीविजन पर अंतिम संस्कार कार्यक्रम प्रसारित किया गया। इस्लामिक रिपब्लिक के झंडे में लिपटे ताबूतों को भीड़ के बीच से ले जाया गया। इस बीच आसपास की आवाज़ें उन माता-पिता के दुख को बयां कर रहीं थीं जिन्होंने अपनी बेटियों को खोया है। ईरानी अधिकारियों के अनुसार शनिवार सुबह स्कूल पर तीन मिसाइलें दागी गईं। उनमें से एक स्कूल पर जा गिरी। यह स्कूल आईआरजीसी के एक अड्डे से करीब 600 मीटर की दूरी पर था। ईरान के राष्ट्रपति मसूद पेजेश्कियान ने इसे 'बर्बर कृत्य' बताते हुए इसे 'हमलावरों की ओर से किए गए अनगिनत अपराधों के रिकॉर्ड का एक और काला पन्ना' कहा। इस दर्दनाक घटना ने बारह साल पहले पाकिस्तान में आतंकी संगठन तहरीक ए तालिबान (टीटीपी) द्वारा पेशावर के एक आर्मी स्कूल पर हमला कर 132 स्कूली बच्चों समेत 145 लोगों की मौत को घाट उतारने की याद ताजा करा दी। हालांकि पाक सुरक्षा बलों ने कुछ हमलावरों को मार गिराया। बताया जाता है कि टीटीपी ने यह हमला स्त्री शिक्षा की लड़ाई लड़ने वाली मलाला युसुफजई को नोबेल का शांति का पुरस्कार देने के विरोध में किया था। यह उनके मूर्खतापूर्ण कट्टरपंथी सोच का ही नतीजा थी। पेशावर की घटना तो सीधे तौर पर आतंकी हमला था, लेकिन ईरान में जो हुआ, वह आपसी युद्ध का नतीजा ज्यादा है। यह घटना इतनी हृदय विदारक थी कि भारत में जिसने भी यह दृश्य देखा, उसकी आंखों से आंसू निकल आए। यह बात अलग है कि पाकिस्तान और उसकी सरकार पर इसका कोई असर नहीं हुआ। वह भले ही टीटीपी को आतंकी संगठन बताती हो, लेकिन खुद कई आतंकी संगठनों को पोस रही है। जाहिर है कि किसी को आम और बेगुनाहों लोगों के मारे जाने की कोई चिंता नहीं है। देशों को, राजनेताओं को अपने स्वार्थों से मतलब है। ईरान में मरहूम अयातुल्लाह खामेनेई ने जो किया वह सही है, यह कोई नहीं कह सकता, लेकिन इजराइल या अमेरिका उसका बदला आम लोगों की हत्याएं करके ले, यह भी कहीं से उचित नहीं ठहराया जा सकता। उधर ईरान भी बदले की आग में झुलस रहा है और किसी कीमत पर झुकने को तैयार नहीं है। जबकि अमेरिका, इजराइल और अन्य पश्चिमी देश ईरान को सबक सिखाने पर आमादा हैं। आने वाले दिन और कठिन होने वाले हैं।

युद्ध और बच्चे : क्या दोष है उनका

नजरिया

चित्रा माली

सहायक प्रोफेसर गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विवि क्षेत्रीय केंद्र कोलकाता।

युद्ध के विषय में महात्मा गांधी ने कहा था 'जब तक युद्ध के कारणों को नहीं समझा जाएगा और उनको जड़ से नष्ट नहीं किया जाएगा तब तक युद्ध को रोकने के सारे प्रयास व्यर्थ सिद्ध होंगे। क्या आधुनिक युद्धों का प्रमुख कारण दुनिया की तथाकथित दुर्बल प्रजातियों के शोषण के लिए मची अमानवीय होड़ नहीं है ?' महात्मा गांधी के युद्ध के संदर्भ में दिए गए विचार आज भी प्रासंगिक है। वर्तमान में इजरायल के द्वारा ईरान पर किए गए हमले को बानगी के तौर पर देखा जा सकता है। इस हमले में 150 बच्चियों के मारे जाने की पुष्टि हुई है और साथ ही अयातुल्ला खामेनेई की नातिन जेहरा मोहम्मदी की भी हत्या हो गई है जो महज 14 माह की थी। दोनों देशों के राजनीतिक पक्ष या विपक्ष से परे सिर्फ देश के भविष्य या कहें विश्व के भविष्य को केंद्र में रखकर बात कर रही हूं। दो या दो से अधिक राष्ट्रों के बीच सशस्त्र सेनाओं के संघर्ष को युद्ध कहा जाता है। लेकिन इस युद्ध से सबसे अधिक प्रभावित,बच्चे,बूढ़े और महिलाएं होती हैं और उनके द्वारा लगातार युद्ध का नकार किया जाता रहा है। युद्ध का नकार सर्वप्रथम मोहिस्ट दार्शनिक स्कूल द्वारा किया गया था। बावजूद इसके कि वे युद्धरत पॉलिटिकल समय में रहते थे और किलेबंदी के विज्ञान को विकसित कर रहे थे। 20वीं शताब्दी में युद्ध के नकार और युद्ध की विभीषिका के खतरों को खत्म करने के दुखोबोर्स (विश्व शांति के लिए कार्य करने वाला एक संप्रदाय) के द्वारा नग्न होकर सिलसिलेवार प्रदर्शन किए गए थे। नग्न प्रदर्शन का मकसद अधिक से अधिक लोगों को आकर्षित करना और युद्ध की विभीषिका से रू-ब-रू करवाना था। यह नग्न प्रदर्शन एक रणनीति के तहत किए गए थे। जिनमें आधुनिक नारों का समावेश किया गया था। जिसमें 'निशस्त्रीकरण के लिए कपड़े उतारना' और 'शांति के लिए नग्नता' जैसे नारों का इस्तेमाल किया गया था। युद्धों को रोकने के लिए व शांति को कायम रखने के लिए अहिंसक प्रयास महिलाओं के द्वारा अधिक किए गए हैं क्योंकि वे ही युद्धों की अधिक विक्टिम रही हैं। इनमें वूमेंस पीस पार्टी,इंटरनेशनल कमिटी ऑफ वीमेन फ़ॉर पर्मानेंट पीस ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इस संदर्भ में अमेरिकी कांग्रेस की पहली महिला सदस्य जीनेट रानकिन ने अमेरिका के महायुद्धों में शामिल होने के प्रस्तावों का अकेले विरोध किया था।

द्वितीय विश्वयुद्ध का विरोध करने वाली वे एकमात्र महिला थीं। इसके अतिरिक्त भी महिलाओं के द्वारा युद्धों के खिलाफ अहिंसक प्रतिरोधों की एक व्यापक श्रृंखला है जो नए नए तरीकों से प्रतिकार करती आई हैं और आज भी कर रही है। बच्चे किसी भी देश का भविष्य होते हैं और अगर भावी भविष्य को उज्वल देखना चाहते हैं तो बच्चों को गरिमामय,सम्मानपूर्ण और स्वतंत्रतापूर्वक विकास के अवसर प्रदान किए जाने आवश्यक है। दो विश्व युद्धों की विभीषिका के बाद मानवाधिकारों की सार्वभौमिक घोषणा 10 दिसंबर 1948 में की गई थी, लेकिन इसके भी पूर्व 1924 में राष्ट्र संघ ने बाल अधिकारों की घोषणा जारी की थी जिससे देश के भविष्य को संरक्षित संवर्धित किया जा सके। संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा जारी मानवाधिकारों की सार्वभौमिक घोषणा के अंतर्गत भी संयुक्त राष्ट्र संघ ने विशेष हिदायत दी है कि 'बचपन पर विशेष ध्यान और सहायता की आवश्यकता है। बच्चों के विकास और खुशहाली के लिए उसे आवश्यक संरक्षण और सहायता मिलनी चाहिए जिससे वह समाज में अपनी जिम्मेदारी पूर्ण रूप से निभा सकें। 'बच्चों को समाज में अपने विशिष्ट व्यक्तित्व के साथ जीने के लिए तैयार किया जाना चाहिए और उनका पालन - पोषण संयुक्त राष्ट्र संघ के घोषणा - पत्र के आदर्शों की भावना शांति,सहिष्णुता, स्वतंत्रता, समानता और परस्पर एकता की भावना के अनुरूप होना चाहिए। मानवाधिकारों के सार्वभौमिक घोषणा - पत्र के अनुच्छेद 24 में भी प्रत्येक बच्चे को 'नस्ल, रंग, लिंग, भाषा, धर्म, राष्ट्रीय या सामाजिक मूल,संपत्ति या जन्म पर आधारित किसी भी तरह के भेदभाव के बिना अपने परिवार,समाज और राज्य से संरक्षण के ऐसे साधन प्राप्त करने के अधिकार को मान्यता दी गई है जो उसकी नाबालिग हैसियत के अनुसार आवश्यक है। बच्चे के नाम,पंजीकरण और राष्ट्रीयता प्राप्त करने के अधिकार को भी इस अनुच्छेद में मान्यता दी गई है। बच्चे की देखरेख और शिक्षा संबंधी अधिकार उसके अभिभावकों को दिए गए हैं'। 1959 में संयुक्त राष्ट्र संघ ने भी बाल अधिकारों की घोषणा की थी। नागरिक और राजनीतिक अधिकारों की अंतरराष्ट्रीय प्रसंविदा 1966 में (अनुच्छेद 23 व 24 में) तथा आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक अधिकारों की अंतरराष्ट्रीय प्रसंविदा 1966 के (अनुच्छेद 10) में भी बच्चों के कल्याण से जुड़ी विशिष्ट संस्थाओं और अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं से संबंधित विधानों और प्रपत्रों को मान्यता प्रदान की गई है। तदुपरांत 20 नवंबर 1989 में बाल अधिकारों का अंतरराष्ट्रीय अभिसमय (कन्वेंशन) हुआ तथा उसकी सिफारिशों को 1990 में लागू कर दिया गया।

26 जनवरी 1990 में सत्र के पहले ही दिन 61 राष्ट्रों ने इस बाल-अधिकार के अंतरराष्ट्रीय समझौते पर हस्ताक्षर कर दिए थे। वर्तमान में इस अंतरराष्ट्रीय समझौते पर विश्व के 193 राष्ट्रों की सरकारों ने हस्ताक्षर कर दिए हैं। बाल अधिकारों के अंतरराष्ट्रीय अभिसमय में 54 अनुच्छेद हैं जिनमें विविध प्रकार के प्रावधानों को भी शामिल किया गया है। बाल अधिकारों के अंतरराष्ट्रीय अभिसमय में बच्चों की सुरक्षा पर अधिक बल दिया गया है। 'शारीरिक तथा मानसिक रूप से अपरिपक्व होने के कारण,बच्चों की सुरक्षा के लिए विशेष उपायों और देखभाल की आवश्यकता है। इसमें जन्म से पूर्व तथा बाद में भी समुचित कानूनी संरक्षण प्राप्त होना चाहिए '। बाल अधिकारों के अंतरराष्ट्रीय अभिसमय में सर्वप्रथम बच्चा किसे माना जाए उसकी उम्र क्या हो इस पर काफी विचार विमर्श के बाद तथा विभिन्न देशों में आंशिक विधिक योग्यता के बावजूद मानवाधिकारों की दृष्टि से 18 वर्ष से कम आयु के व्यक्ति को बच्चा/बालक माना जाएगा। इसी के साथ यह भी तय हुआ कि बाल - अधिकार में प्रत्येक अधिकार की समान हैसियत होगी और किसी एक अधिकार के नाम पर दूसरे किसी अधिकार का अतिक्रमण नहीं किया जा सकेगा। अभिसमय में यह भी माना गया कि बच्चा अधिकारों का सक्रिय भोक्ता है उसे परिवार की संपत्ति की तरह नहीं माना जा सकता है प्रत्येक बच्चे को प्राकृतिक अधिकार के साथ जीवन के अधिकार, नागरिक, सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक अधिकारों की भी स्वीकृति प्रदान की गई है। प्रत्येक बच्चे का एक नाम और राष्ट्रीयता हो पारिवार संबंधी जानकारी हो इसका भी ध्यान रखा गया है। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के साथ सूचना प्राप्ति का अधिकार और हानिकारक सूचनाओं से बचाव के अधिकार को भी शामिल किया गया है। सबसे महत्वपूर्ण बात इस अभिसमय की यह है कि इसमें बच्चों की निजता - प्राइवेसी के अधिकार पर भी ध्यान दिया गया है तथा उल्लेख किया गया है कि बच्चे के आत्मसम्मान और प्रतिष्ठा को क्षति नहीं पहुंचाई जा सकती है।बच्चे के विकास के अधिकार में शिक्षा,मनोरंजन, खेलों में भाग लेने व कलात्मक गतिविधियों में सहभागिता करने का और इनके साधन प्राप्त करने का तथा अपने से संबंधित न्यायिक और प्रशासनिक मामलों में भी अभिव्यक्ति का अधिकार है। इस अधिकार के अंतर्गत ही माता-पिता के तलाक संबंधी मामलों में भी बच्चे की राय ली जाती है। इन सभी अधिकारों में प्राथमिकता,बच्चे के शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य और संरक्षण को दी गई है और बीमार हो जाने पर स्वास्थ्य सुविधा पाने का भी अधिकार है। बच्चों की खरीद फरोख्त, अपहरण, व्यापार तथा स्वतंत्रता से वंचित न किए जाने सामाजिक सुरक्षा,सामाजिक बीमा और आर्थिक शोषण से मुक्ति के प्रावधान को भी शामिल किया गया हैं। किसी भी बच्चे को उसके माता पिता से जबरन अलग नहीं किया जा सकता है, अवैध रूप से कहीं भी नहीं भेजा जा सकता है तथा वापस आने पर प्रतिबंध नहीं लगाया जा सकता है।

इस अभिसमय के अनुच्छेद 38 में उल्लेख किया गया है कि 'सशस्त्र संघर्ष (युद्ध) की स्थिति में नागरिकों को बचाने के अंतरराष्ट्रीय कानूनों के तहत अपने दायित्वों की पूर्ति के अनुरूप ही,समस्त सदस्य देशों को युद्ध से प्रभावित बच्चों के संरक्षण और देखभाल सुनिश्चित करने के लिए सभी आवश्यक प्रयास करेंगे'। इसके अतिरिक्त शरणार्थी, विकलांग, अल्पसंख्यक व आदिवासी बच्चों के लिए विशेष प्रावधान को स्वीकार किया गया है। किसी भी बच्चे को उसके अधिकारों से वंचित न किया जाए और उनके साथ किसी भी प्रकार का दुर्व्यवहार न हो इसकी जिम्मेदारी माता पिता,अभिभावक,राज्य के साथ साथ संपूर्ण मानव समाज व मानव जाति की भी है इसका अभिप्राय यह है कि अगर कोई भी बच्चा अपने अधिकारों से वंचित किया जाता है तो यह पूरे समाज के साथ साथ पूरे विश्व की गैरजिम्मेदारी को प्रदर्शित करता है। वर्तमान में जारी इजरायल और ईरान युद्ध और इसके पूर्व इजरायल और हमास युद्ध से प्रभावित बच्चों के वीडियोज और तस्वीरों से हम उनकी स्थिति का अंदाजा लगा सकते हैं कि किस प्रकार से उनसे उनके जीवन जीने के अधिकार को छीना जा रहा है और उनके अन्य अधिकारों का भी लगातार हनन हो रहा है। बच्चों के अधिकारों का हनन कहीं न कहीं मानवता के क्षरण का भी प्रतीक है इसलिए आज बच्चों के अधिकारों और अधिकारों के हनन के प्रति और अधिक सजग होने की आवश्यकता है। युद्धों पर सर्वाधिक फिल्में अमेरिका और रूस में बनी है। जिसमें प्रथम विश्व युद्ध और द्वितीय विश्वयुद्ध की हर घटना को दर्ज किया गया है। यूरोप की एक एक जगह में युद्ध की दास्तान है। जिसमें युद्ध की विभीषिका के साथ युद्ध का मलाल भी शामिल है। हमारे देश में वर्ष 2023 में एक फिल्म 'बवाल' आयी थी। अत्यंत साधारण सी दिखने वाली यह फ़िल्म एक संदेश संप्रेषित करती है खासकर युद्ध को लेकर। फिल्म में वर्ल्ड वॉर म्यूजियम, गैस चेम्बर, नोर्मंडी,ओमाहा बीच और ऐनी फ्रेंक का घर दिखाया जाता है। ऐनी फ्रेंक महज 13 साल की लड़की थी जो अपने परिवार के साथ नाजी सेना के खौफ से छुपी हुई थी। वह लेखक बनना चाहती है इसलिए प्रत्येक दिन की हर घटना को डायरी में दर्ज करती रहती है। आज ऐनी फ्रेंक नहीं है लेकिन उसकी डायरी उसे आज भी जिंदा रखे हुए है। ऐनी फ्रेंक की तरह ही और भी कई सारी बच्चियां हो सकती थी जो इस हमले की भेट चढ़ गई है। अभी और भी कई सारे बच्चे हैं जिनके बहुत सारे सपने भी हैं। उन्हें भी अतीत की बुरी यादों के बरक्स सुनहरे भविष्य और जीवन जीने का अधिकार है और समूचे विश्व की यह जिम्मेदारी है कि उनके जीवन को संरक्षित,सुरक्षित और संवर्धित करें ताकि उन्हें उनका सुनहरा भविष्य मयस्सर हो। यही मानवतापूर्ण सह-अस्तित्व के लिए और विश्व के बेहतर भविष्य के लिए आवश्यक है।

खामेनेई विवाद और नैतिक राजनीति का प्रश्न

भारत-ईरान संबंध

अरुण कुमार डनायक

लेखक गांधी विचारों के अध्येता हैं!

भारत-ईरान संबंध केवल समकालीन कूटनीति नहीं, बल्कि प्राचीन व्यापारिक संपर्कों और गहरे सांस्कृतिक आदान-प्रदान पर आधारित हैं। मध्यकाल में फ़ारसी भाषा ने भारतीय दरबारों, प्रशासन और साहित्य को गहराई से प्रभावित किया। 1739 में नादिर शाह के आक्रमण ने मुग़ल साम्राज्य को कमजोर किया, जो इस निकटता के बीच निहित राजनीतिक तनाव का भी संकेत था। स्वतंत्र भारत में गुटनिरपेक्ष नीति के कारण, अमेरिका-समर्थित शाह के दौर में भी भारत-ईरान संबंध व्यावहारिक बने रहे और 1960-70 के दशक में तेल इसका प्रमुख आधार रहा। 1979 की इस्लामी क्रांति के बाद राजशाही समाप्त हुई और ईरान इस्लामिक गणराज्य बना, 1989 के बाद अली खामेनेई सर्वोच्च नेता बने। भारत ने इन सभी चरणों में संबंध बनाए रखे, जो उसकी कूटनीतिक व्यावहारिकता का संकेत है।

ईरान लंबे समय तक भारत का प्रमुख तेल आपूर्तिकर्ता रहा, किंतु 2018 में अमेरिकी प्रतिबंधों के बाद नई दिल्ली को आयात घटाना पड़ा। इस घटनाक्रम ने स्पष्ट कर दिया कि भारत की पश्चिम एशिया नीति वैश्विक शक्ति-संतुलन से अलग नहीं चल सकती। इसी परिप्रेक्ष्य में चाबहार बंदरगाह का रणनीतिक महत्व और बढ़ जाता है—यह परियोजना पाकिस्तान को बायपास कर अफगानिस्तान और मध्य एशिया तक भारत की पहुंच सुनिश्चित करती है तथा चीन-समर्थित ग्वादर के प्रभाव का संतुलन भी बनाती है। यद्यपि अमेरिकी प्रतिबंधों के दबाव में भारत ने अपना निवेश काफी हद तक घटा दिया है। अंतर्राष्ट्रीय उत्तर-दक्षिण परिवहन गलियारा भारत-ईरान-रूस के बीच एक ऐसे वैकल्पिक व्यापार मार्ग की संभावना प्रस्तुत करता है, जो यूरोप तक पहुंच का नया द्वार खोल सकता है। संकट की परिस्थितियों में ईरान ने अंतरराष्ट्रीय मंचों—विशेषकर संयुक्त राष्ट्र—पर भारत के विरुद्ध कठोर रुख अपनाने से परहेज़ किया और अपेक्षाकृत संयमित दृष्टिकोण रखा।

खामेनेई के कार्यकाल में राजनीतिक असहमति और मानवाधिकारों को लेकर लगातार अंतरराष्ट्रीय आलोचना होती रही है। 2009 का ग्रीन मूवमेंट, 2019 के आर्थिक विरोध और 2022 में 22 वर्षीय कुर्द महिला महसा अमीनी की हिजाब नियमों के उल्लंघन के आरोप में हिरासत और उसी दौरान हुई मृत्यु ने वैश्विक ध्यान आकर्षित किया। 'स्त्रियों की जिन्दगी और स्वतंत्रता' का नारा व्यापक असंतोष का प्रतीक बन गया। हाल के इज़रायल-ईरान सैन्य तनाव के बीच आर्थिक कठिनाइयों और प्रतिबंधों को लेकर भी विरोध की आवाज़ें उठीं, जिन्हें सरकार ने राष्ट्रीय सुरक्षा का मामला बताया। पश्चिमी मानवाधिकार संगठनों ने ईरानी शासन की आलोचना की, जबकि नेतृत्व ने इसे संप्रभुता और स्थिरता का प्रश्न बताया।

भारत में वामपंथी और उदारवादी समूहों ने ईरान में मानवाधिकार उल्लंघनों पर चिंता जताई, जबकि सरकार ने 'आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप न करने' की नीति बनाए रखी। दक्षिणपंथियों ने धार्मिक शासन की आलोचना की, पर रणनीतिक दृष्टि से ईरान को महत्वपूर्ण साझेदार माना। 2016 में चाबहार समझौते पर व्यापक विरोध नहीं हुआ, और यह संकेत देता है कि भारत की पश्चिम एशिया नीति भावनात्मक आग्रहों से अधिक दीर्घकालिक सामरिक और आर्थिक हितों पर आधारित रही है।

28 फरवरी 2026 को अमेरिका-इज़राइल हमलों में अली खामेनेई की मौत ने क्षेत्रीय अस्थिरता बढ़ा दी। युद्ध के तुरंत बाद समाप्त होने की उम्मीद निरस्त रही, क्योंकि ईरान के संभावित प्रतिशोध ने तनाव और तेज कर दिया। इस बीच ब्रिटेन और फ्रांस ने अमेरिका को रक्षात्मक सहयोग देने की घोषणा की। होर्मुज जलडमरूमध्य पर ईरान के नियंत्रण के कारण तेल आपूर्ति बाधित हुई और कीमतें 7-10% तक बढ़ीं। अमेरिकी शेयर बाजार शुरुआती गिरावट से उबरकर लगभग स्थिर बंद हुआ, जबकि भारतीय बाजार में तीव्र गिरावट शुरू हो गई।

भारतीय परंपरा मृत्यु पर शालीनता और मौन की अपेक्षा करती है। परंतु यह भी उतना ही आवश्यक है कि उन नीतियों की आलोचना की जाए, जिन्होंने राजनीतिक असहमति, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और महिला अधिकारों को प्रभावित किया हो।

यहीं एक महत्वपूर्ण प्रश्न उठता है—क्या विदेश नीति केवल व्यावहारिक हितों पर आधारित होनी चाहिए, या उसमें सैद्धांतिक राजनीति और नैतिकता का भी स्पष्ट स्थान होना चाहिए? भारत ने अफगानिस्तान में तालिबान शासन को औपचारिक मान्यता नहीं दी, किंतु मानवीय और रणनीतिक कारणों से संपर्क बनाए रखा है। यह उदाहरण दर्शाता है कि कूटनीतिक आवश्यकताएँ अक्सर नैतिक असहमतियों पर भारी पड़ जाती हैं। परंतु एक लोकतांत्रिक समाज के लिए यह विचार आवश्यक है कि क्या राष्ट्रीय हितों की परिभाषा में मानवाधिकार और नैतिक मूल्य भी शामिल होने चाहिए, या उन्हें केवल अवसरानुकूल विषय माना जाएगा? युद्ध की पूर्व चेतावनियों के बावजूद प्रधानमंत्री मोदी की इज़राइल यात्रा और राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार की आकलन-चूक को आज भले संसदीय विमर्श से टाल दिया जाए, लेकिन इतिहास इसे कभी नहीं भूलेगा। खामनेई की मौत ने नैतिक दुविधा को गहरा कर दिया है, क्योंकि यह दमन और संप्रभुता के संघर्ष को तीव्र बनाती है, जहां भारत को रणनीतिक हितों के साथ नैतिक प्रतिबद्धता का संतुलन साधना पड़ता है। यदि किसी विदेशी नेता की लक्षित हत्या अंतरराष्ट्रीय कानून का उल्लंघन करती है, तो उसका विरोध आवश्यक है। संयुक्त राष्ट्र चार्टर के अनुच्छेद 2(4) के अनुसार किसी राष्ट्र की संप्रभुता पर बल-प्रयोग निषिद्ध है। गांधीवादी दृष्टि हमें दो सत्यों को समानांतर स्वीकारने की सीख देती है—अन्याय और दमन का नैतिक प्रतिरोध, तथा हिंसा एवं युद्ध का संपूर्ण परित्याग। किसी शासन की नीतियों ने स्त्री स्वतंत्रता, अभिव्यक्ति और नागरिक अधिकार सीमित किए हैं; ऐसे में मानवाधिकारों का पालन प्राथमिक कर्तव्य है। दमनकारी नीतियों का महिमामंडन और युद्धोन्माद का समर्थन मानवता के मूल्यों के विरुद्ध है। भारत विज्ञान और प्रौद्योगिकी में विश्व को पश्चिम की तुलना में सीमित योगदान कर सकता है, पर बुद्ध एवं गांधी की शिक्षाओं में निहित आध्यात्मिक ज्ञान से वह विश्वशांति का संदेश दे सकता है और शक्ति में विवेक व हित में नैतिकता के मार्ग पर चलने का प्रेरक बल रखता है। स्वामी विवेकानंद ने पूरब और पश्चिम के बीच संतुलन की आवश्यकता बताते हुए कहा कि पूर्व की आध्यात्मिकता और पश्चिम की प्रगतिशीलता एक-दूसरे से सीखकर मानवता के समग्र कल्याण में सहयोग कर सकती हैं।

ज्वालामुखी के साथ सेल्फी

अनूठी प्रकृति

संजीव शर्मा

ज्वालामुखी नाम सुनते ही रोंगटे खड़े हो जाते हैं..आग का दरिया, चारों ओर बहता लाल आग सा दहकता लावा, रासायनिक गैसे और बहुत कुछ..इसके पास जाना तक नामुमकिन होता है। लेकिन हम बात कर रहे हैं एक जैसे ज्वालामुखी की जहां न आग है, न लावा, फिर भी धरती अपने अंदर जमा सामग्री बाहर उड़ेल रही है। यह ज्वालामुखी ऐसा है जिसे आप छू सकते हैं, इसके पास खड़े हो सकते हैं, फोटो खिंचवा सकते हैं और इसके बाद भी आपको घबराहट के स्थान पर सुकून मिलेगा...यह 'मड वॉल्कानो' यानि मिट्टी वाला ज्वालामुखी।

मड वॉल्कानो (Mud Volcano) वाकई प्रकृति का एक अनोखा और रहस्यमयी चमत्कार है। खास बात यह है कि भारत का एकमात्र सक्रिय मड वॉल्कानो अंडमान और निकोबार द्वीप समूह में बाराटांग द्वीप (Baratang Island) पर स्थित है। वैसे, गूगल गुरु के मुताबिक दुनिया भर में केवल 2500 के आसपास मड वॉल्कानो हैं लेकिन हमारे देश में अंडमान के अलावा ये कहीं और नहीं मिलते।

जैसा की हम सभी जानते हैं कि सामान्य ज्वालामुखी लावा उगलते हैं, लेकिन मड वॉल्कानो या मिट्टी के ज्वालामुखी ठंडी कीचड़, पानी और गैसों का मिश्रण बाहर निकालते हैं। यहाँ कोई लावा या आग नहीं होती—बस बुलबुले बनते हैं, कीचड़/मिट्टी धीरे-धीरे बहता रहता है और छोटे-छोटे गड्ढे या टीले बन जाते हैं। आमतौर पर मड वॉल्कानो का कारण पृथ्वी की गहराई में जैविक सामग्री से मीथेन और अन्य गैसें निकलने को माना जाता हैं। ये गैसें दबाव बनाकर कीचड़ और पानी को ऊपर धकेलती हैं। जानकारों का यह भी कहना है कि अंडमान में टेक्टॉनिक प्लेटों के दबाव के कारण इसतरह के ज्वालामुखी बन रहे हैं । मड वोल्केनो का तापमान लगभग 29-30 डिग्री सेल्सियस और स्वभाव क्षारीय होता है।

अब तक मिली जानकारी के मुताबिक अंडमान द्वीपों में कुल 11 मड वोल्केनो हैं। जहां तक सबसे प्रमुख मड वॉल्कानो की बात है तो यह बाराटांग द्वीप पर है, जो पोर्ट ब्लेयर से लगभग 100-150 किमी दूर है। स्थानीय लोग इसे जलकी कहते है। वैसे, अंडमान और निकोबार द्वीप समूह के बारे में सबसे रोचक बात यह भी है कि हमारे देश का लावा वाला एक सक्रिय ज्वालामुखी बैरन आइलैंड भी यहीं है, और कीचड़ वाला मड वॉल्कानो भी।

जियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया के अध्ययन में पता चला कि बाराटांग के मड वॉल्कानो से निकली मिट्टी ओलिगोसीन युग (Oligocene age) अर्थात् करीब 2.3 करोड़ साल पुरानी है। एकतरह से यह मिट्टी और इससे जुड़े अध्ययन हमें पृथ्वी के उस समय के भूगर्भीय इतिहास को समझने में मदद कर सकते हैं । हम बाराटांग में जिस मड वॉल्कानो को देखने गए वह पिछले साल अक्टूबर में फटा है और यह घटना भी करीब 20 साल के बाद घटी है इसलिए यहां पर्यटकों का तांता लगा हुआ है । वन विभाग के अधिकारियों के साथ हम भी घटना स्थल तक गए। मड वॉल्कानो फटने के कारण यहां 3-4 मीटर ऊंचे टीले बन गए हैं और फुटबॉल के मैदान जैसे करीब 500-1000 वर्ग मीटर क्षेत्र में कीचड़ फैल गया । देखने में यह एरिया लावा वाले ज्वालामुखी फटने की तरह ही लगता है और यहां बने टीलों से अभी भी मिट्टी बह रही है और बुलबुले के रूप में गैस बाहर निकल रही हैं।

जब हमने मड वॉल्कानो के बारे में वन विभाग, अन्य संबंधित विभागों और इंटरनेट की मदद ली तो जानकारी मिली कि अंडमान के मड वॉल्कानो कहीं न कहीं 2004 के सुमात्रा-अंडमान भूकंप और उसके साथ आई सुनामी से संबंधित हैं। अब तो वैज्ञानिक इन मड वॉल्कानो को मंगल ग्रह (Mars) पर मौजूद संभावित मड वॉल्कानो के साथ मिलाकर अध्ययन कर रहे हैं। वैज्ञानिकों का मानना है कि बाराटांग के मड वॉल्कानो की संरचना मंगल गृह की इसी तरह की संरचनाओं से काफी मिलती-जुलती है। कुल मिलाकर यह भी पृथ्वी के तमाम चमत्कारों में से एक है और आने वाले समय में अध्ययन के बाद शायद यह कहीं ऐसे रहस्य उजागर करने का जरिया बने जिन्हें पृथ्वी ने अब तक अपने गर्भ में छिपाकर रखा है।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

अगर मैं आपसे पूछूँ कि आपकी न्यूसेंस वेल्यू है या नहीं

व्यंग्य

नंदकिशोर बर्वे

लेखक व्यंग्यकार हैं।

बताइए अगर मैं आपसे पूछूँ कि आपकी कुछ न्यूसेंस वेल्यू है, या नहीं ? तो आपको कैसा लगेगा ? यहाँ यह बात स्पष्ट कर लें कि 'न्यूसेंस वेल्यू' का हिंदी अर्थ गूगल काका उपद्रव मूल्य या परेशानी का मूल्य बताते हैं. पर 'न्यूसेंस वेल्यू' की जो व्यंजना है , वहां तक उपद्रव या परेशानी मूल्य पहुँच ही नहीं सकता. इसलिए हम भी अपनी बात को क्यों हल्की करें ? सो 'न्यूसेंस वेल्यू' से ही काम चलाएंगे.

तो मैं आपसे पूछ रह था कि आपकी कुछ न्यूसेंस वेल्यू है, या नहीं ? अरे आप तो बुरा मान गये. इसमें बुरा मानने जैसे कोई बात नहीं है. भैये यह युग ही ऐसा है कि आदमी ने, बल्कि कहें कि सज्जन आदमी ने भी अपनी कुछ न कुछ तो 'न्यूसेंस वेल्यू' रखनी ही चाहिए. क्योंकि 'न्यूसेंस वेल्यू' आपको महत्वपूर्ण व्यक्ति ही नहीं बनाती बल्कि चर्चा में भी बनाये रखती है. विश्वास न हो तो कोई भी टी वी चेनल या सोशल मीडिया स्क्रोल कर के देख लो. वो कहते हैं, ना कि जो दिखता है, वही बिकता है. यहाँ बिकता है का अर्थ परंपरागत न होकर, इस डिजिटल युग में जिसके जितने ज्यादा व्यू , वो उतना बिकाऊ. क्योंकि यहाँ तो दिखने के ही पैसे मिल रहे हैं. सो हर आदमी बिकना चाहता है यहाँ ! इसलिए 'न्यूसेंस वेल्यू' होना आज के जमाने में एक आवश्यक शर्त ही समझो.अब जब आवश्यक शर्त हो ही गई है, तो हर आदमी के सामने नयी चुनौती हो गई है कि अपनी अपनी कुछ तो 'न्यूसेंस वेल्यू' रखो ही. तो साहब 'न्यूसेंस वेल्यू' का प्रदर्शन करने के लिए अलग से कुछ करने की ज़रूरत नहीं होती. यह काम तो घर, गली, मोहल्ले, नुक्कड़ या चौराहे से लेकर सदनों तक कहीं भी किया जा सकता है. इसके प्रदर्शन में जो जितना अधिक लापरवाह मुंहफट और अड़ियल होगा उसकी उतनी अधिक 'न्यूसेंस वेल्यू' सिद्ध होगी.

तमाम संस्थाओं , संगठनों में 'न्यूसेंस वेल्यू धारी' सदस्य के प्रति पदाधिकारी विशेष रूप से सतर्क रहते हैं. उसे देखते ही उनके कान खड़े हो जाते हैं, और आँखें फटी रहा जाती है. और मन में डर बना रहता है, कि अब यह पता नहीं कौनसी कारस्तानी कर बैठे. एक बार ऐसी ही एक संस्था की बैठक में एक 'न्यूसेंस वेल्यू धारी' ने कह दिया कि इस संस्था का कुच्छ नहीं हो सकता , क्योंकि इस संस्था के आधे पदाधिकारी तो मूर्ख हैं. इस पर हल्ला तो होना ही था. और दबाव में उसने अपने शब्द वापस लिए और बोला 'मैं शपथपूर्वक कहता हूँ कि इस संस्था के आधे पदाधिकारी मूर्ख नहीं हैं !' तब कहीं मामला शांत हुआ. पर वह जो कहना था वह तो उसने कह ही डाला.

इधर अपने यहाँ सदनों में भी कई सदस्य 'न्यूसेंस वेल्यू धारी' हो चले हैं. इनके सदन में आते ही अध्यक्ष महोदय एक्स्ट्रा सचेत हो जाते हैं. 'न्यूसेंस वेल्यू धारी' अपनी बात को वजनदार बनाने के लिए बम फोड़ना कहते हैं. वैसे बम फोड़ना परिस्तिथि सापेक्ष है, कहाँ और किस नीयत से बम फोड़ा उस पर उसकी रचनात्मकता या दूसरी चीजें निर्भर होती है. 'न्यूसेंस वेल्यू धारी' अपनी शर्तों पर सदन को चलाना चाहते हैं. और इस प्रकार ये एक नई परम्परा डालने के गर्व से भर उठते हैं. फिर उनके समर्थकों की वाह वाही इनको और भी प्रोत्साहित करती है. और ये नई निचाइयों की ओर लुढ़कते जाते हैं. यह लुढ़कन उन्हें गौरव देती है ऐसा वे मानते हैं.

'न्यूसेंस वेल्यू धारी' की तुलना अगर सकरात्मक रूप से करनी हो तो कस्तूरी मृग से करेंगे और नकारात्मक करनी हो तो उपमाओं का कोई टोटा नहीं. इनमें से किसी को भी यह भान नहीं होता कि हम क्या चीज़ (!) हैं? 'न्यूसेंस वेल्यू धारी' व्यक्ति जिधर निकल जाता है, अपनी उपस्थिति की गंध बिखेरता जाता है. फिर इस गंध से कोई कितनी भी नाक भौं सिकोड़े.

सबसे बड़ी विडम्बना यही है कि इस 'यस सर' युग में कोई कसी को बता नहीं सकता कि सर आपकी 'न्यूसेंस वेल्यू' से संगठन या संस्था का नुकसान हो रहा है. न सचिव, न वैद्य और न ही गुरु. जबकि परम्परा यह रही है कि ये तीनों प्रिय बोलने के लिए नहीं होते.क्योंकि इनके प्रिय बोलने से सम्बन्धित व्यक्ति कितना भी बड़ा क्यों न हो उसका पराभव निश्चित है. यह शास्त्रोक्त कथन है.

पर यह बात भी उतनी ही तथ्यात्मक है, कि यदि 'न्यूसेंस वेल्यू धारी' अपने साथ अपने संगठन , संस्था या मोहल्ले, परिवार, घर को बर्बाद करने पर तुला हो, तो फिर उसको डूबने से बचाने वालों को भी 'न्यूसेंस वेल्यू धारी' घोषित किया जा सकता हैं. और ऐसा स्वयं कौन घोषित होना चाहेगा ?

जयंती विशेष

डॉ. लोकेन्द्र सिंह

छत्रपति शिवाजी महाराज के किलों पर केंद्रित पुस्तक 'हिन्दवी स्वराज्य दर्शन' के लेखक

छत्रपति शिवाजी महाराज से सीखें जल प्रबंधन

पहाड़ी क्षेत्रों में हजारों फीट की ऊंचाई बने दुर्गों पर पानी का प्रबंध कहाँ से किया जाए कि वर्षभर पशुओं और मनुष्यों का जीवन चलता रहे। यहाँ वर्षा जल के संग्रह से बेहतर उपाय कोई और हो नहीं सकता। इसलिए शिवाजी महाराज ने वर्षाजल को सहेजने के प्रबंध दुर्गों पर किए हैं। शिवाजी महाराज के निर्देश थे कि किला बनाना शुरू करने से पहले अच्छी तरह देख लिया जाए कि पानी की व्यवस्था कैसे होगी? पानी आसानी से उपलब्ध न हो और फिर भी उसी जगह किला बनाना जरूरी हो, तो पत्थर फोड़कर तली में मजबूत टंकी बनाई जाए, जो इतनी विशाल हो कि वहाँ बारिश के दिनों में संगृहीत पानी सालभर काम आए। एक ही टंकी से संतुष्ट न हों, क्योंकि युद्ध के समय तोपें चलती हैं और उस वक्त उनकी आवाज से बचने के लिए काफी पानी खर्च होता है। इसलिए पानी का बहुत जतन किया जाए।

सह्याद्रि के उत्तुंग शिखरों पर आसमान से बातें करने वाले गिरि दुर्ग हों या फिर समुद्री लहरों के बीच मुस्कुराते जल दुर्ग, उनकी व्यवस्थाएं देखकर ध्यान आता है कि हिन्दवी स्वराज्य के योजनाकार, वास्तुकार, अभियंता और निर्माण में योगदान करनेवाले सभी शिल्पकार एवं श्रमिक अपने कार्य-कौशल में सिद्धस्थ थे। सुरक्षा पक्ष हो या फिर कला पक्ष, सबका बारीकी से विचार किया गया। इसके साथ ही बुनियादी आवश्यकताओं की चिंता भी की गई। भारत में जहाँ भी आपने दुर्ग देखे होंगे, उनमें जलस्रोत की व्यवस्था देखी ही होगी। परंतु हिन्दवी स्वराज्य के किलों में जलस्रोतों का प्रबंधन रचनात्मक ढंग से किया गया है। हजारों फीट की ऊंचाई पर बारह महीने पानी की व्यवस्था बनाए रखना चुनौतीपूर्ण था। कुशल योजनाकारों ने बुद्धिमत्तापूर्ण ढंग से दुर्गों पर जलाशयों का निर्माण किया है। किसी भी दुर्ग पर एक-दो नहीं अपितु अलग-अलग हिस्सों में कई जलाशयों का निर्माण किया जाता था। हम हिन्दवी स्वराज्य की राजधानी दुर्ग दुर्गेश्वर श्रीरायगढ़ की ही बात करें, तो वहाँ छोटे-बड़े 84 जलाशयों का निर्माण किया गया है। चूँकि रायगढ़ पर अधिक संख्या में लोग रहते थे इसलिए यहाँ बड़ी संख्या में जल निकायों का निर्माण किया गया। श्रीरायगढ़ के प्रसिद्ध जल निकाय हैं- गंगा सागर तालाब, हत्ती तालाब, कुशावर्त तालाब, हनुमान टांकी, बारह टांकी इत्यादि।

पहाड़ी क्षेत्रों में हजारों फीट की ऊंचाई बने दुर्गों पर पानी का प्रबंध कहाँ से किया जाए कि वर्षभर पशुओं और मनुष्यों का जीवन चलता रहे। यहाँ वर्षा जल के संग्रह से बेहतर उपाय कोई और हो नहीं सकता। इसलिए शिवाजी महाराज ने वर्षाजल को सहेजने के प्रबंध दुर्गों पर किए हैं। शिवाजी महाराज के निर्देश थे कि किला बनाना शुरू करने से पहले अच्छी तरह देख लिया जाए कि पानी की व्यवस्था कैसे होगी? पानी आसानी से उपलब्ध न हो और फिर भी उसी जगह किला बनाना जरूरी हो, तो पत्थर फोड़कर तली में मजबूत टंकी बनाई जाए, जो इतनी विशाल हो कि वहाँ बारिश के दिनों में संगृहीत पानी सालभर काम आए। एक ही टंकी से संतुष्ट न हों, क्योंकि युद्ध के समय तोपें चलती हैं और उस वक्त उनकी आवाज से बचने के लिए काफी पानी खर्च होता है। इसलिए पानी का बहुत जतन किया जाए।

बारिश का पानी बहकर व्यर्थ न चला जाए इसलिए हिन्दवी स्वराज्य के गिरी दुर्गों में ढलान वाले क्षेत्रों में बांध बनाकर छोटे-बड़े तालाबों का निर्माण किया और

वर्षाजल को इनमें सहेजने की व्यवस्था की। जल में कचरा बहकर न मिले, इसका भी प्रबंध किया जाता था। कुशावर्त तालाब में उसके अवशेष दिखायी देते हैं। पहाड़ से बहकर आनेवाला पानी अपने साथ मिट्टी, पेड़ों से गिरे फूल-पत्ते और अन्य कचरा लेकर आएगा, यदि यह पानी सीधे तालाब में गिरेगा तब तालाब में पानी कम गाद अधिक इकट्ठी हो जाएगी। पानी छनकर तालाब में पहुँचे इसके लिए तालाब का जो परकोटा बनाया गया है, उसमें जालीदार पत्थर लगाए गए हैं। इसके अलावा कुशावर्त तालाब को दो हिस्सों में बाँटा गया है, एक हिस्से के पानी का उपयोग पेयजल के रूप में और दूसरे हिस्से के पानी का उपयोग अन्य कार्यों के लिए किया जाता था। तालाब में क्षमता से अधिक पानी एकत्र न हो, इसलिए पानी के निकासी की भी व्यवस्था यहां देखी जा सकती है। कुशावर्त तालाब में जब क्षमता से अधिक पानी एकत्र हो जाता था, तो वह गोमुख से होकर दुर्ग से नीचे पहुँच जाता था। यहाँ मिट्टी में दबा हुआ गोमुख अभी भी देखा जा सकता।

चारों ओर से पानी से घिरे जलदुर्ग में भी मीठे पानी का स्रोत होना चाहिए, इसका भी ध्यान रखा जाता था। समुद्र का खारा पानी तो प्यास नहीं बुझा सकता, इसलिए जलदुर्गों में रहनेवाली सेना और उनके घोड़ों एवं अन्य पशुओं के लिए मीठे पानी का प्रबंध करना आवश्यक हो जाता है। जलदुर्गों में भी एक से अधिक मीठे पानी के जलाशय तैयार किए जाते थे। हमने खांदेरी और कोलाबा दुर्ग में मीठे पानी के तालाब देखे थे। कोलाबा दुर्ग के पुष्करणी तालाब का तो वास्तु भी दर्शनीय है।

किलों में पानी के निकायों/जलाशयों के निर्माण की पद्धति भी अनूठी और अनुकरणीय थी। दुर्ग में भवन एवं तटबंधी के लिए पत्थरों की आवश्यकता पड़ती थी। हजारों फीट ऊंचे पहाड़ों पर नीचे से पत्थर चढ़ाना हो या फिर समुद्र में जलदुर्ग बनाने के लिए पत्थरों की पूर्ति करना हो, सरल और सहज नहीं था। इसलिए योजनाकारों ने चातुर्य दिखाते हुए कहावत 'एक पंथ दो काज' को चरितार्थ किया। भवन इत्यादि निर्माण के लिए जहाँ से पत्थर निकाले जाते थे, उसे ही जलाशय के रूप में परिवर्तित कर दिया जाता था। अर्थात् कुछ तालाब अलग से नहीं खोदने पड़ते थे।

राजधानी रायगढ़ पर जल प्रबंधन से जुड़ी एक और वैज्ञानिक संरचना देखने को मिलती है, जो बताती है कि हमारे पुरखे विज्ञान में कितने उन्नत थे। कितनी बारिश हुई है, इसे मापने के लिए 'रेन गॉग मीटर' नाम के यंत्र का उपयोग किया जाता है। इस यंत्र को खुले और ऊंचे स्थान पर लगाया जाता है। इसके साथ ही इस बात का भी ध्यान रखा जाता है कि आस-पास कोई पेड़ या ऊंची दीवार न हो। ताकि बारिश का पानी किसी वास्तु से टकराने के बजाय सीधे इस यंत्र में आकर गिरे, जिससे बारिश की मात्रा को सही तरह से मापा जा सके। हिन्दवी स्वराज्य की राजधानी में भी वर्षा को मापने की इसी तरह की व्यवस्था बनायी गई थी। रायगढ़ दुर्ग पर प्रधानमंत्री के आवास के समीप खुले स्थान पर एक छोटा-सा कक्षनुमा निर्माण है। इस संरचना में भीतर एक छोटा-सी टंकी है और छत में तीन छिद्र हैं, जिनमें से बारिश का पानी भीतर आता है और नीचे टंकी में एकत्र होता है। इस टैंक में जितना पानी एकत्र होता है, उसके आधार पर अनुमान लगा लिया जाता था कि समूचे हिन्दवी स्वराज्य में कितनी बारिश हुई है।

जल प्रबंधन को लेकर हिन्दवी स्वराज्य में इस स्तर की व्यवस्था थी। यह व्यवस्थाएं बताती हैं कि शिवाजी महाराज पर्यावरण संरक्षण, जल संरक्षण, जल प्रबंधन, तकनीक और विज्ञान को लेकर सजग थे। वर्षा जल के उपयोग की जैसी दृष्टि हिन्दवी स्वराज्य में दिखायी देती है, वैसी अन्यत्र कहीं नहीं है। जल प्रबंधन के विविध पक्षों पर गहन विचार करके छत्रपति शिवाजी महाराज ने आवश्यक व्यवस्थाएं खड़ी की थीं। जल प्रबंधन को लेकर महाराज की जो सोच थी, उसका अनुकरण आज भी करें, तो जल संकट को लेकर अनेक प्रकार की चुनौतियों से पार पा सकते हैं।

दृष्टिकोण

डॉ. नरेश गौतम

सहायक प्रोफेसर, श्री रावतपुरा सरकार विश्वविद्यालय, रायपुर

आहत भावनाओं का कारोबार

2014 के बाद देश में 'भावनाएँ आहत होने' की घटनाएँ जैसे अचानक सामान्य राजनीतिक शब्दावली का हिस्सा बन गईं। हर दूसरे दिन कोई न कोई समूह अपनी आस्था, संस्कृति या पहचान के अपमान का दावा करता दिखाई देता है। सवाल यह है कि ये लोग कौन हैं, जिनकी भावनाएँ इतनी शीघ्र आहत हो जाती हैं? वे किस सामाजिक मानसिकता से आते हैं? क्या सचमुच यह संस्कृति की रक्षा है, या असुरक्षा, कुंठा और सत्ता-सम्मत आक्रोश का विस्फोट? हजारों कुंठाएँ लेकर समाज में घूमते ये लोग संख्या, शोर और राजनीतिक संरक्षण के बल पर नैतिकता का ठेका अपने हाथ में लेना चाहते हैं। विडंबना यह है कि इस देश में सबसे अधिक आहत भावनाएँ अक्सर उन्हीं की होती हैं, जिनकी संवेदनाएँ सबसे कमज़ोर और प्रतिक्रियाएँ सबसे तीखी होती हैं। बलात्कार की खबर आती है, वे चुप रहते हैं। दलित की भीड़ द्वारा हत्या होती है, वे चुप रहते हैं। किसी कमजोर व्यक्ति का सार्वजनिक अपमान होता है, वे चुप रहते हैं। आदिवासी को जंगल से बेदखल किया जाता है, वे चुप रहते हैं। किसी महिला को 'इज़्ज़त' के नाम पर जला दिया जाता है, वे चुप रहते हैं। महिलाओं के साथ अमानवीय हिंसा होती है, वे चुप रहते हैं। लेकिन जैसे ही कोई इन अपराधों पर सवाल उठाता है, वे भड़क उठते हैं। अचानक उनकी आस्था खतरे में आ जाती है, उनकी संस्कृति अपमानित हो जाती है, उनकी भावनाएँ आहत हो जाती हैं। क्या उनकी भावनाएँ उस समय अवकाश पर चली जाती हैं, जब किसी लड़की के साथ दरिंदगी होती है? जब किसी दलित युवक को सरेआम पीट-पीटकर मार दिया जाता है? जब किसी आदिवासी का घर उजाड़ दिया जाता है? जब किसी मुस्लिम को सिर्फ उसकी पहचान के कारण अपमानित किया जाता है?

हाथरस की घटना इस देश की सामूहिक चेतना पर एक काला धब्बा है। उस समय भी कुछ लोग न्याय की मांग करने के बजाय साजिश खोजने में व्यस्त थे। पीड़िता की चीख से अधिक उन्हें अपनी छवि और सत्ता की चिंता थी। यह कैसी नैतिकता है, जो अपराधी से ज़्यादा प्रश्न पूछने वाले से नाराज़ होती है? धर्म, जो मूलतः करुणा और प्रेम की शिक्षा देता है, उसे डर और हिंसा का औज़ार बना दिया

गया है। डॉ. भीमराव आंबेडकर ने चेताया था कि जब धर्म सामाजिक न्याय के मार्ग में अवरोध बनने लगे, तो उसका पुनर्विचार आवश्यक है। महात्मा गांधी ने भी धर्म का सार अहिंसा बताया था। लेकिन आज धर्म का अर्थ भीड़ की ताकत, नारे की आवाज़ और असहमति पर हमले तक सीमित कर दिया गया है। यदि धर्म के नाम पर हिंसा हो, आस्था के नाम पर हत्या हो, संस्कृति के नाम पर महिलाओं को जिंदा जला दिया जाए, तो यह धर्म नहीं, सामूहिक पाखंड है। जब इन विषयों पर कोई सवाल उठाता है तो उससे कहा जाता है देश की बदनामी मत करो। लेकिन यह भूल जाते हैं कि देश की बदनामी सवालों से नहीं, अपराधों से होती है। देश की बदनामी लेख लिखने से नहीं, बेटियों की चीख से होती है। गुस्सा लेखन पर आता है, अपराध पर नहीं। तकलीफ शब्दों से होती है, सामूहिक हिंसा से नहीं।

यह चयनात्मक आक्रोश दरअसल सत्ता-समर्थित संवेदनहीनता का परिचायक है। सवाल पूछना अपराध नहीं है; सवाल पूछना लोकतंत्र की आत्मा है। यदि हर आलोचना हमला लगती है, तो समस्या आलोचक में नहीं, उस असुरक्षा में है जो सच से डरती है। समाज को तय करना होगा क्या वह भावनाओं के नाम पर हिंसा को ढकता रहेगा? धर्म के नाम पर अन्याय को सही ठहराता रहेगा? जाति और पितृसत्ता की सड़ांध को संस्कृति कहकर बचाता रहेगा? या फिर वह कठिन, असुविधाजनक, लेकिन आवश्यक सच का सामना करेगा? क्योंकि अंततः इतिहास भावनाओं से नहीं, न्याय से लिखा जाता है। जो लोग यह कहकर खुश हो रहे थे कि बुलडोजर चलाना न्यायिक प्रक्रिया का हिस्सा है, आज जब वही कार्रवाई उनके दरवाजे तक पहुँची है, तो उन्हें पीड़ा हो रही है। यह कैसी मानसिकता है, जो दूसरे के दुख में सुख ढूँढती है, लेकिन जब वही दुख अपने हिस्से आता है तो न्याय की दुहाई देने लगती है? समाज का नैतिक स्तर इस बात से तय होता है कि वह कमजोर के साथ खड़ा होता है या शक्तिशाली के साथ।

भगोरिया

कुमार सिद्धार्थ

परंपरा के साथ दिखे राजनीति के रंग

आदिवासी अंचल का प्रसिद्ध लोकपर्व भगोरिया इस बार 2 मार्च को झाबुआ के उत्कृष्ट मैदान में पूरे उत्साह, परंपरा और बदलते सामाजिक-राजनीतिक रंगों के साथ देखने को मिला। होली से पहले लगने वाले भगोरिया हाटों की श्रृंखला में यह मेला क्षेत्र के सबसे बड़े आयोजनों में से एक रहा, जिसमें आसपास के सैकड़ों गांवों से लगभग एक लाख से अधिक आदिवासी महिला-पुरुष, युवक-युवतियां और बच्चे शामिल हुए।

सुबह से ही झाबुआ शहर की ओर आने वाले मार्गों पर ग्रामीणों के समूह दिखाई देने लगे थे। कोई पैदल, कोई मोटरसाइकिल से तो कोई ट्रैक्टर-ट्रॉली में भरकर मेले में पहुंच रहा था। पांच से दस किलोमीटर दूर बसे गांवों से लोग पारंपरिक वेशभूषा में सजे हुए उत्सव में शामिल होने के लिए निकले। जैसे-जैसे दिन चढ़ता गया, उत्कृष्ट मैदान में भीड़ बढ़ती गई और दोपहर तक पूरा मैदान रंगों, संगीत और नृत्य से भर गया।

भगोरिया को आदिवासी समाज में केवल मेला नहीं, बल्कि सामाजिक मिलन का अवसर माना जाता है। भील-भिलाला समुदाय में सदियों से यह परंपरा रही है कि होली से पहले अलग-अलग स्थानों पर भगोरिया हाट भरते हैं, जहां लोग आपसी मेल-मिलाप करते हैं, रिश्ते तय होते हैं और सामूहिक उत्सव मनाया जाता है। भगोरिया मेल-मिलाप, आनंद और उल्लास का उत्सव है। माना जाता है कि इसमें युवा अपनी पसंद के साथी को गुलाल लगाकर या पान खिलाकर अपने प्रेम को अभिव्यक्त करते हैं। भगोरिया में मनपसंद के साथी के साथ भागकर विवाह करने की मान्यता भी प्रचलित है।

इस बार के मेले में भी पारंपरिक स्वरूप साफ दिखाई दिया, लेकिन उसके साथ आधुनिकता की झलक भी नजर आई। युवक-युवतियां रंग-बिरंगे कपड़ों में, आंखों पर काला चश्मा लगाए, हाथों में मोबाइल लिए मेले में घूमते दिखाई दिए। युवतियों के पारंपरिक घाघरा-चोली और चांदी के आभूषणों के साथ आधुनिक फैशन का मेल भी देखने को मिला।

ढोल-मांदल की थाप पर थिरकते समूह- भगोरिया मेले मेले का सबसे आकर्षक दृश्य बड़े-बड़े ढोल और मांदल की थाप पर पारंपरिक आदिवासी नृत्य किया जाता है, जिसमें विभिन्न दल ग्रामीण पारंपरिक वेशभूषा में भाग लेते हैं। अलग-अलग गांवों से आए लोग अपने दल के साथ मैदान में प्रवेश करते और गोल घेरा बनाकर नृत्य करने लगते। कई जगह युवक-युवतियों के अलग दल थे, तो कहीं पूरा गांव एक साथ नाचता दिखाई दिया।

ढोल की तेज आवाज और सामूहिक नृत्य का उत्साह इतना अधिक था कि पूरा मैदान मानो एक साथ थिरक रहा हो। बुजुर्ग भी पीछे नहीं रहे और कई स्थानों पर उन्हें भी नृत्य में शामिल होते देखा गया।

झंडों के साथ निकले जुलूस, दिखे राजनीति के रंग- इस बार के भगोरिया मेले की एक विशेष बात यह रही कि इसमें विभिन्न राजनीतिक दलों के नेतृत्व में आदिवासी समुदाय के जुलूस भी शामिल हुए। दोपहर के बाद अलग-अलग दिशाओं से ढोल-नगाड़ों और मंजीरों के साथ झंडे लेकर समूह मैदान की ओर बढ़ते दिखाई दिए। इन जुलूसों में सैकड़ों की संख्या में महिला-पुरुष शामिल थे। कई समूहों के आगे-आगे स्थानीय नेता चल रहे थे, जबकि पीछे युवक-युवतियां नाचते-गाते हुए आगे बढ़ रहे थे।

मेले में भारतीय जनता पार्टी, कांग्रेस और भारतीय आदिवासी संघ से जुड़े कार्यकर्ता अपने-अपने झंडों के साथ पहुंचे। हालांकि यह राजनीतिक उपस्थिति उत्सव के माहौल पर हावी नहीं हुई, लेकिन यह साफ दिखाई दिया कि भगोरिया जैसे बड़े सामाजिक आयोजनों में अब राजनीतिक दल भी सक्रिय रूप से भाग लेने लगे हैं।

स्थानीय लोगों का कहना था कि भगोरिया हमेशा से समाज का उत्सव रहा है, लेकिन अब इसमें जनसमूह अधिक होने के कारण राजनीतिक दल भी अपनी मौजूदगी दर्ज कराते हैं।

मेले में लगीं दुकानें, झूले और फोटो स्टूडियो- उत्कृष्ट मैदान में मेले की रौनक बढ़ाने के लिए दर्जनों झूले लगाए गए थे। बच्चों के लिए छोटे-बड़े झूले, खिलौनों की दुकानें, रंगीन डंडे, चूड़ियां, बिंदियां और सजावटी सामान बिक रहा था। भगोरिया हाट (बाजार) में जरूरत की वस्तुएं, मिठाइयाँ और पारंपरिक आभूषण बिकते हैं। खाने-पीने की दुकानों पर भी काफी भीड़ रही। कुल्फी, पानी-पताशे, पकौड़ी, मिठाई, चाट और स्थानीय व्यंजन लोगों को आकर्षित कर रहे थे।

मेले में फोटो खिंचवाने का भी विशेष उत्साह दिखाई दिया। कई अस्थायी फोटो स्टूडियो लगाए गए थे, जहां युवक-युवतियां अलग-अलग पोज में तस्वीर खिंचवा रहे थे। मोबाइल कैमरे के साथ-साथ पारंपरिक फोटोग्राफी का आकर्षण भी बना रहा। पारंपरिक चांदी के गहनों और कढ़ाई वाले ब्लाउज के साथ युवा धूप का चश्मा और ब्रांडेड जूते पहनकर कैमरे के सामने पोज देते नजर आए।

शांतिपूर्ण रहा आयोजन, प्रशासन सतर्क- मेले में हजारों की भीड़ होने के बावजूद पूरा आयोजन शांतिपूर्ण रहा। पुलिस और प्रशासन की ओर से सुरक्षा के पर्याप्त इंतजाम किए गए थे। मैदान के आसपास पुलिस बल तैनात रहा और यातायात व्यवस्था भी नियंत्रित रखी गई। प्रशासनिक अधिकारियों के अनुसार मेले के दौरान किसी प्रकार की अप्रिय घटना की सूचना नहीं मिली। आदिवासी समाज के लोग अनुशासित तरीके से समूहों में आए और उत्सव में शामिल होकर शाम तक वापस लौट गए।

भगोरिया पर्व होली के सात दिन पहले से शुरू होकर होलिका दहन तक चलता है। यह मुख्य रूप से मध्यप्रदेश के झाबुआ, आलीराजपुर, धार, बड़वानी और खरगोन जिलों के विभिन्न गाँवों में साप्ताहिक बाजार के दिन आयोजित होता है। भगोरिया मेला आदिवासी संस्कृति, उमंग और जीवन को करीब से जानने का एक अनूठा अवसर प्रदान करता है।

बदलते समय के साथ बदलता भगोरिया – स्थानीय बुजुर्ग बताते हैं कि पहले भगोरिया में लोग बैलगाड़ियों से आते थे और केवल मांदल-ढोल की आवाज सुनाई देती थी। अब मोटरसाइकिल, मोबाइल और डीजे भी दिखाई देते हैं। पहले यह केवल सामाजिक मेल-मिलाप का पर्व था, अब इसमें बाजार, मनोरंजन और राजनीति भी जुड़ गई है।

इसके बावजूद भगोरिया की मूल भावना आज भी वही है – मिलना, नाचना, गाना और समुदाय के साथ खुशी बांटना।

झाबुआ के उत्कृष्ट मैदान में लगा इस वर्ष का भगोरिया मेला एक बार फिर यह साबित कर गया कि आदिवासी अंचल की परंपराएं आज भी जीवित हैं और बदलते समय के साथ नए रंगों को अपनाते हुए आगे बढ़ रही हैं।

पर्यावरण संरक्षण की अनूठी पहल, कंडे की होली का दहन कार्यक्रम संपन्न

- कंडे की होली का आयोजन समिति द्वारा 6 वर्षों से निरंतर आयोजन किया जा रहा है

धार। पर्यावरण संरक्षण की अनूठी पहल के रूप में कंडे की होली का दहन कार्यक्रम संपन्न हुआ। कंडे की होली आयोजन समिति द्वारा 6 वर्षों से निरंतर आयोजन किया जा रहा है जो आने वाले समय में अभियान का रूप लेगा। पर्यावरण संरक्षण की अनूठी पहल का सभी ने स्वागत किया है । संघ के पंच परिवर्तनों में से पर्यावरण संरक्षण को लेकर भी लगातार आह्वान किया जा रहा है। इस वर्ष मुख्यमंत्री ने भी आह्वान किया था। अतिथि संघ के विभाग कार्यवाह अरविंद चौधरी रहे। उन्होंने विधि विधान से पूजन कर होलिका दहन किया। कंडे की होली आयोजन समिति समिति के अध्यक्ष सचिन दवे, संयोजक अभिषेक मिश्रा , समिति के संरक्षक घनश्याम शर्मा, वरिष्ठ पत्रकार डॉ अशोक शास्त्री, राजेश शर्मा, समाजसेवी राधेश्याम मुकाती, धर्मेंद्र जोशी, एडवोकेट निलेश शर्मा सहित समाजजन, महिला- पुरुष इस आयोजन में सम्मिलित हुए ।

ग्राम भटगांव युवती,युवक गोलीकांड

प्राथमिक , वैज्ञानिक साक्ष्य के आधार पर मृतक अरूण पुरबिया पर प्रकरण दर्ज करके विवेचना में जुटी पुलिस

सोहागपुर। प्राथमिक साक्ष्य, वैज्ञानिक साक्ष्य कथनों के आधार पर सोहागपुर पुलिस ने विगत दिवस युवक, युवती की गोली लगने से मौत के मामले में पुलिस ने मृतक अरूण पुरबिया के विरुद्ध धारा 103(1) बीएनएस एवं 25,27 आर्म्स एक्ट का पाया जाना से प्रकरण दर्ज कर विवेचना में लिया है। पुलिस ने बताया कि इस प्रकरण में मृतिका रिंकी के परिजनों एवं अन्य बयानों के आधार पर प्रकरण में आए वैज्ञानिक,तकनीकी सबूत आधार पर पाया गया कि रिंकी के परिजन रात्रि 11:30 बजे सो गए थे ।गर्मी लगने से कूलर चालू किया गया था । इस कारण बाहर की आवाज सुनाई नहीं दे रही थी। घटनाक्रम की जानकारी सुबह उठकर बहू ने दी थी। मौके पर एफ .एस .एल. टीम के द्वारा वैज्ञानिक सबूत एवं घटनास्थल से जुटाए गए सबूत कि अरुण पुरबिया के पास से बाएं हाथ में रखी पिस्टल कट्टा मैगजीन तीन जिंदा कारतूस, SAFESILO INSECTICIDE जहर की डिब्बी, प्रेगनेंसी किट, फोर्स कंडोम का पैकेट, मोबाइल, मोटरसाइकिल एवं रिंकी के मोबाइल को भी सबूत में लिया गया है। इसके अतिरिक्त दोनों मृतकों के मोबाइल नंबरों की सी डीआर साइबर सेल से प्राप्त की गई । मृतक अरुण पुरबिया का मोबाइल चेक किया गया। उसके द्वारा व्हाट्सएप से उसके भाई अखिल को घटना के पूर्व सुसाइड कर लेने का मैसेज फॉरवर्ड किया गया।लड़की के प्रेम प्रसंग से परेशान होने के संबंध में व्हाट्सएप पर चैटिंग की गई ।अरुण के मोबाइल के यूट्यूब अकाउंट की हिस्ट्री में आए तथ्यों के आधार पर रिंकी से प्रेम प्रसंग के चलते परेशान होकर अरुण के द्वारा अवैध कट्टा से रिंकी को गोली मारी,फिर स्वयं गोली मारकर आत्महत्या कर ली। दोनों मर्ग जांच में आए प्राथमिक साक्ष्य, वैज्ञानिक साक्ष्य, तकनीकी साक्ष्य व कथनों के आधार पर प्रथम दृश्टया आरोपी मृतक अरुण पुरबिया के विरुद्ध धारा 103(1) बीएनएस एवं 25,27 आर्म्स एक्ट का पाया जाना से प्रकरण दर्ज कर विवेचना में लिया गया है।प्रकरण में आगे विवेचना विधि अनुसार की जाएगीद्य उल्लेखनीय है कि सोहागपुर को समीपवर्ती ग्राम भटगांव में सोमवार सुबह गोली लगने से युवक-युवती की मौत हो गई थी। युवक ने युवती को मारा और फिर खुद गोली मार लेने की आशंका थी। जिसमें सोहागपुर एसडीओ पुलिस संजू चौहान, नगर निरीक्षक उषा मरावी, शोभापुर पुलिस चौकी प्रभारी सुरेश चौहान एवं एफ एस एल नर्मदापुरम टीम ने मौके का मुआयना किया था। जिसमें युवती की पहचान रिंकी पुरबिया (21) पिता सुरेश पुरबिया निवासी भटगांव तहसील सोहागपुर एवं युवक का अरुण पुरबिया (28) ग्राम गोरा मछवाई तहसील भारकच्छ जिला रायसेन रहने वाला था।

नीता हितेंद्र शर्मा गुर्जर गोड ब्राह्मण महिला महासभा की जिला अध्यक्ष मनोनीत

धार। मध्य प्रदेश प्रांतीय महिला सभा की प्रांतीय महिला अध्यक्ष श्रीमती प्रीति पुरोहित ने अखिल भारतीय महिला महासभा की राष्ट्रीय अध्यक्ष माया त्रिवेदी की सहमति से धार जिले की कर्मठ समाज सेवी एवं पूर्व जिला महा सचिव नीता शर्मा को धार जिला गुर्जर गोड ब्राह्मण महिला सभा का जिला महिला अध्यक्ष मनोनीत किया है। धार जिला गुर्जर गोड समाज ने नीता हितेंद्र शर्मा को जिला महिला सभा का अध्यक्ष मनोनीत होने पर बहुत-बहुत बधाइयां और शुभकामनाएं दी है । प्रतिभा शर्मा, उषा शर्मा, प्रीति शर्मा, भारती तिवारी, हर्षा तिवारी ,रेखा उपाध्याय ,रानी जोशी, अलका पांडे ,रीता जोशी, हेमा शर्मा ,दीप्ति शर्मा आदि ने बधाइयां दी।

महिला दिवस 8 मार्च को 'अधिकार, न्याय और कार्यवाही' की थीम पर होंगे विशेष कार्यक्रम

भोपाल(नप्र)। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर महिलाओं और बालिकाओं के अधिकारों, सुरक्षा और न्याय तक उनकी सुलभ पहुँच को सुगम बनाने के लिये 'अधिकार, न्याय, कार्यवाही -महिलाओं और बालिकाओं के लिए' थीम पर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन स्वर्ण जयंती सभागार में किया जाएगा। कार्यक्रम की अध्यक्षता महिला एवं बाल विकास मंत्री सुश्री निर्मला भूरिया करेंगी।

कार्यक्रम का उद्देश्य महिलाओं और बालिकाओं को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करना, न्याय प्राप्ति की प्रक्रिया को सरल और सुलभ बनाना तथा समाज में सुरक्षा और सम्मान का वातावरण मजबूत करना है। कार्यक्रम में विभिन्न विषयों पर संवाद और जागरूकता सत्र आयोजित किए जाएंगे, जिनमें घरेलू हिंसा कानून की जानकारी, न्याय चौपाल के माध्यम से कानूनी सहायता के मॉडल, मानसिक स्वास्थ्य और सायबर सुरक्षा जैसे महत्वपूर्ण विषय शामिल रहेंगे।

कार्यक्रम में सामाजिक संस्थाओं द्वारा अपने अनुभव और सफल पहल साझा की जाएंगी, ताकि महिलाओं के अधिकारों की रक्षा और उनके सशक्तिकरण के लिए प्रभावी मॉडल सामने आ सकें। साथ ही घरेलू कामकाजी महिलाओं द्वारा पॉवर वॉक के माध्यम से आत्मविश्वास, स्वाभिमान और महिला शक्ति का संदेश दिया जाएगा।

सचिव राज्य महिला आयोग के श्री सुरेश तोमर, सामुदायिक पुलिसिंग के डीआईजी श्री विनीत कपूर, महिला सुरक्षा शाखा के स्पेशल डीजी श्री अनिल कुमार, सेवानिवृत्त एडीजी प्रशिक्षण श्रीमती अनुराधा शंकर महिला सुरक्षा और सशक्तिकरण के विभिन्न आयामों पर अपने विचार साझा करेंगी। इस अवसर पर विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य करने वाली महिलाओं को सम्मानित भी किया जाएगा। साथ ही सायबर वेलबीइंग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से राज्य महिला आयोग और अहान फाउंडेशन के बीच एमओयू भी होगा।

आज पुलिस की होली, खूब थिरके पुलिसकर्मी

सोहागपुर। होली उत्सव के उपरांत आज सोहागपुर पुलिस थाना कर्मचारियों, अधिकारियों के साथ होली मिलन समारोह आयोजित किया गया। जिसमें सेमरी हरचंद एवं शोभापुर पुलिस चौकी के अधिकारी एवं कर्मचारियों ने इस समारोह में भाग लिया।इस अवसर पर एसडीओ पुलिस संजू चौहान परिवार सहित शामिल हुए। वहीं एएसआई गणेश राय आदि समस्त पुलिस कर्मचारी उपस्थित थे। उल्लेखनीय है कि पुलिस होली उपरांत दूसरे दिन होली उत्सव मनाती है। इस अवसर सभी ने सूखी होली खेलकर एक दूसरे को गुलाल, रंग लगाकर होली की बधाइयां दीद्य इस अवसर पुलिस कर्मियों होली को होली की तरह लेकर खूब थिरके। पुलिस अधिकारियों ने पुलिस परिवार की तरफ से सभी सोहागपुर, सेमरी हरचंद एवं शोभापुर के नागरिकों को होली की बधाई एवं शुभकामनाएं दी हैं।

नव विवाहिता ने शादी के दो दिन बाद खा लिया जहर, मृत्यु, एसडीओ पुलिस सोहागपुर जांच अधिकारी

सोहागपुर। पिपरिया स्टेशन थाना से मार्ग डायरी सोहागपुर पुलिस को प्रेषित की गई है। जिसमें नव विवाहिता ने शादी के 02 दिन बाद जहर खा लिया था। जिसकी इलाज दौरान मृत्यु हुई है। सोहागपुर पुलिस ने असल मर्ग कायम करके मामले की जांच कर रही है। मृतिका नव विवाहिता होने के कारण मामले की गंभीरता को देखते हुए अनुविभागीय अधिकारी पुलिस संजू चौहान करेंगे। पुलिस ने बताया कि

पिपरिया स्टेशन थाना रोड की सूचना के आधार पर मृतिका भारती पति अरुण धानक 21 वर्ष निवासी ग्राम पाटनी थाना बाड़ी जिला रायसेन हाल पिता का घर बरैयाखेड़ी थाना सोहागपुर है।जिसकी शादी 25 फरवरी 2026 को ग्राम पाटनी थाना बाड़ी के अरुण धानक से हुई थी । 27 मार्च 2026 को मायके वाले भारती को लेकर आए थे। नव विवाहिता ने अज्ञात कारणों के चलते 28 मार्च 2026 को जहरीला पदार्थ खा लिया था। मायके वाले इलाज के लिए प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र पिपरिया लेकर गए थे। यहां इलाज के दौरान भारती की मृत्यु हो गई थी।स्टेशन रोड पुलिस पिपरिया के द्वारा प्राथमिक जांच कार्यवाही की गई है। भारती नव विवाहिता थी।इस कारण मामले का पंचनामा पिपरिया नायाब तहसीलदार नीरज बैस ने बनाया था। पिपरिया थाना स्टेशन रोड से मर्ग डायरी सोहागपुर पुलिस को प्राप्त होने पर असल मर्ग कायम कर जांच में लिया गया है।मृतिका नव विवाहिता होने के कारण अग्रिम जांच कार्यवाही अनुविभागीय अधिकारी (पुलिस) सोहागपुर संजू चौहान के द्वारा की जाएगी।

भोपाल-जबलपुर-उज्जैन में फिल्मी गानों पर थिरके पुलिस के अफसर-कर्मचारी

भोपाल में डीजीपी सहित आला अधिकारी रहे मौजूद; इंदौर-ग्वालियर में भी जश्न

भोपाल(नप्र)। भोपाल में गुरुवार को नेहरू नगर स्थित पुलिस परेड ग्राउंड में होली मिलन समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में डीजीपी कैलाश मकवाना, पुलिस कमिश्नर संजय कुमार, एसीपी, आरआई सहित कई वरिष्ठ अधिकारी और पुलिसकर्मी मौजूद रहे। समारोह के दौरान डीजे की धुन पर पुलिस अधिकारी और कर्मचारी फिल्मी गीतों पर जमकर झूमते नजर आए। पुलिस लाइन में आयोजित इस होली मिलन समारोह में रंग-गुलाल के साथ खास तौर पर कीचड़ और मिट्टी की होली भी खेली गई। कार्यक्रम में पहुंचे पुलिसकर्मी और उनके परिजन कीचड़ और मिट्टी में सराबोर दिखाई दिए। आयोजन स्थल पर सभी के लिए खाने-पीने और स्नैक्स की व्यवस्था भी की गई । वहीं ग्वालियर, उज्जैन में भी पुलिसकर्मियों के होली मिलन समारोह का आयोजन हुआ।

इंदौर में मोबाइल फोन अंदर ले जाने की अनुमति नहीं

इंदौर पुलिस कमिश्नर संतोष सिंह के सरकारी बंगले पर गुरुवार को होली मिलन कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस मौके पर शहर के वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों और टीआई को आमंत्रित किया गया था। अधिकारियों के लिए सुबह करीब आधे घंटे का समय निर्धारित किया गया था।

सूत्रों के अनुसार कार्यक्रम के दौरान किसी भी अधिकारी को मोबाइल फोन अंदर ले जाने की अनुमति नहीं थी। वहीं अन्य पुलिस स्टाफ को शहर में ड्यूटी पर तैनात रखा गया था।

इधर क्राइम ब्रांच थाने में डीजे लगाकर पुलिसकर्मियों ने होली का जश्न मनाया और जमकर डांस किया। वहीं शहर के कुछ थानों में स्टाफ ने अपने स्तर पर एक-दूसरे को रंग लगाकर होली की बधाई दी। होली के कार्यक्रमों की शुरुआत डीआरपी लाइन से की गई थी।

होलिका दहन से होली तक 72 घंटे की ड्यूटी- पुलिस अधिकारियों के अनुसार होलिका दहन से लेकर होली खेलने तक शहर में सुरक्षा व्यवस्था के लिए पुलिस ने लगातार 72 घंटे ड्यूटी की थी। परंपरा के अनुसार पुलिसकर्मी होली के अगले दिन सामूहिक रूप से उत्सव मनाते हैं।

टीम वर्क को मजबूत करना मुख्य उद्देश

सहायक पुलिस आयुक्त एमपी नगर मनीष भारद्वाज ने कहा कि हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी भोपाल पुलिस लाइन में होली मिलन समारोह का विशेष आयोजन किया गया है। इस कार्यक्रम में सभी पुलिस अधिकारी और कर्मचारी आपसी सौहार्द के साथ मिलकर त्योहार मनाते हैं। उन्होंने कहा कि इस तरह के आयोजनों का उद्देश्य टीमवर्क को मजबूत करना और आपसी समन्वय बढ़ाना है।

आरआई भोपाल जयसिंह तोमर ने कहा कि हर वर्ष परंपरा के अनुसार धुलेड़ी के बाद पुलिस का विराट होली महोत्सव आयोजित किया जाता है। इस आयोजन में वरिष्ठ अधिकारियों से लेकर थानों तक के सभी अधिकारी-कर्मचारी शामिल होते हैं। उन्होंने कहा कि होली रंगों और खुशियों का त्योहार है, इसलिए सभी लोग कानून-व्यवस्था का पालन करें और देश की उन्नति में अपना योगदान दें।

ग्वालियर में जमकर झूमे पुलिसकर्मी

इधर, ग्वालियर में होली के दौरान 72 घंटे की ड्यूटी पूरी करने के बाद गुरुवार को पुलिस लाइन में पुलिस अफसरों और जवानों ने होली का उत्सव मनाया। इस दौरान अधिकारी और कर्मचारी रंग-गुलाल में सराबोर नजर आए और डीजे पर होली गीतों पर जमकर नाचे। एसएसपी धर्मवीर सिंह ने सभी अधिकारियों और कर्मचारियों को होली की शुभकामनाएं देकर समारोह की शुरुआत की। इसके बाद अफसरों और जवानों ने एक-दूसरे को रंग और गुलाल लगाया।

होली गीतों पर थिरके पुलिस अधिकारी- कार्यक्रम में आयो नंदगांव से होली खेलन सहित कई होली गीतों पर एसएसपी, एएसपी, सीएसपी, डीएसपी और महिला पुलिस अधिकारी भी थिरकते नजर आए। पूरे परिसर में उत्सव का माहौल रहा।

पंडाल में अधिकारियों और जवानों के लिए अलग व्यवस्था- पुलिस लाइन में होली समारोह के लिए विशेष पंडाल बनाया गया था। इसमें आईजी, डीआईजी, एसएसपी, एडिशनल एसपी, सीएसपी, डीएसपी और थाना प्रभारियों के लिए अलग व्यवस्था की गई थी, जबकि बाद में जवानों के लिए कार्यक्रम रखा गया। कार्यक्रम के दौरान डीजे पर रंग बरसे, होरी खेले रघुवीरा और अन्य होली गीत बजाए गए। वहीं कुछ पुलिसकर्मियों ने ढोलक और हारमोनियम पर पारंपरिक होली गीत भी गाए।

छतरपुर के जैतपुर पट्टी गांव में जादू-टोना को लेकर बढ़ा तनाव, पुलिस टीम को भी ग्रामीणों ने घेरा

छतरपुर (नप्र)। मध्यप्रदेश के छतरपुर जिले के किशनगढ़ थाना क्षेत्र के जैतपुर पट्टी गांव में जादू-टोना के शक को लेकर दो समुदायों के बीच तनाव की स्थिति बन गई। गांव में अहिरवार समाज और गौंड आदिवासी समुदाय के बीच विवाद इतना बढ़ गया कि आक्रोशित ग्रामीणों ने मौके पर पहुंची पुलिस की गाड़ी को भी घेर लिया।

अकाल मौतों की वजह से अंधविश्वास फैला- जानकारी के मुताबिक आदिवासी बाहुल्य गांव जैतपुर पट्टी में कुछ समय से हो रही अकाल मौतों को लेकर ग्रामीणों में अंधविश्वास फैल गया है। आदिवासी समुदाय के कुछ लोग इन मौतों के लिए अहिरवार परिवारों पर जादू-टोना करने का आरोप लगा रहे हैं, जिसके चलते दोनों पक्षों के बीच लगातार विवाद की स्थिति बनी हुई है।

घर जाने की कोशिश की- आरोप है कि कुछ दिनों पहले ही गांव के एक निवासी राजेश अहिरवार के घर में आग लगा दी गई थी। इस घटना के बाद से गांव में माहौल और ज्यादा तनावपूर्ण हो गया है। इसके बाद से गांव की स्थिति खराब होती जा रही है।

बीती रात फिर बढ़ा विवाद- बीती रात गांव के खोवे लाल अहिरवार और कुछ आदिवासी ग्रामीणों के बीच दुकान से सामान लेने और पैसे के लेन-देन को लेकर विवाद हो गया। देखते ही देखते मामला बढ़ गया और बड़ी संख्या में ग्रामीण एकत्र हो गए। सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची, लेकिन ग्रामीणों ने छतरपुर पुलिस की गाड़ी को घेर लिया। इससे पहले भी मध्य प्रदेश में पुलिस पर हमले के मामले सामने आए हैं।

घर में कैद रहे अहिरवार परिवार

खोवे लाल अहिरवार का कहना है कि विवाद के दौरान उनके घर को चारों तरफ से घेर लिया गया था और सैकड़ों की संख्या में लोग लाठी-डंडे लेकर पहुंच गए थे। उन्होंने बताया कि उनकी मदद के लिए पास के जैतपुरा गांव से भीम आर्मी के कुछ कार्यकर्ता भी पहुंचे थे। गौरतलब है कि कुछ दिन पहले भी जादू-टोना के शक में सिंगरौली में हत्या हुई थी।

क्यों बढ़ा विवाद

- गांव में अहिरवार और आदिवासी समाज के बीच है विवाद
- अकाल मौतों की वजह से जादू-टोना का शक
- दोनों पक्षों में लगातार बन रही विवाद की स्थिति
- पुलिस की टीम भी ग्रामीणों ने घेरा
- पुलिस ने दर्ज किए मामले

किशनगढ़ थाना प्रभारी कमलजीत सिंह के अनुसार जादू-टोना के शक को लेकर दोनों समुदायों के बीच लंबे समय से तनाव बना हुआ है। पुलिस ने दोनों पक्षों की शिकायत पर मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है और गांव में स्थिति पर नजर रखी जा रही है।

शंभू दरबार में फागों की प्रस्तुति देर रात तक चली, नारियल दहन के साथ फूलों की होली

सोहागपुर। श्री शंभू दरबार पलाश कालोनी में हर साल की तरह इस वर्ष हुए परम्परागत होलिका महोत्सव बड़े धूमधाम से पंडित प्रकाश मनमोहन मुद्गल के सानिध्य में मनाया गया। इस अवसर पर नारियलों से निर्मित होली का दहन किया गया एवं गुलाल एवं फूलों की होली खेली गई। इसी अवसर पर स्थानीय कलाकारों प्रबुद्ध दुबे ,संजय तिवारी,श्याम सुंदर रावत, सत्यम दुबे,शैलेंद्र श्रीवास्तव, धनसिंह मैहर, अनिल ठाकुर द्वारा होली के रसिया एवं फागों की प्रस्तुति दी । जिसका आनंद नागरिकों ने देर रात तक उठाया। आध्यात्मिकगुरु पंडित प्रकाश मनमोहन मुद्गल ने बताया कि नारियल की होलिका दहन का कार्यक्रम ब्रह्मलीन गृहस्थ संत पंडित मनमोहन मुदगल जी महाराज के द्वारा प्रारंभ किया गया था । जिसे श्री शंभू भक्त मंडल एवं पलाश परिसर वासियों के सहयोग से निरंतर परंपरा को जीवंत बनाए रखा है। इस अवसर पर महाराज जी ने आए हुए सभी भक्तों को होली की शुभकामनाओं एवं आशीर्वाद प्रदान किया । इस अवसर पर नगर ही नहीं अन्य नगरों के श्री शंभू दरबार के भक्त उपस्थित थे।

जिला स्तरीय युवा संसद कार्यक्रम के तहत भाषण प्रतियोगिता का आयोजन

बैतूल (निप्र)। प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस के अटल सभागार में यूथ संसद कार्यक्रम के तहत आपातकाल के 50 वर्ष, लोकतंत्र के लिए सबक विषय पर जिला स्तरीय भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें जिले भर के महाविद्यालय से सैकड़ों प्रतिभागियों ने सहभागिता की। प्रतियोगिता में मुख्य अतिथि के रूप में जिला विकास सलाहकार समिति सदस्य श्री सुधाकर पवार, विशेष अतिथि जन भागीदारी समिति के अध्यक्ष घनश्याम मदान, श्री ऋषिराज सिंह परिहार, प्राचार्य जेएच स्नातकोत्तर महाविद्यालय बैतूल डॉ मीनाक्षी चौबे उपस्थित थी। मेरा युवा भारत की जिलाधिकारी श्रीमती सुषमा गवली ने बताया कि युवाओं में छिपी हुई प्रतिभाओं को निखारने का एक अनूठा अवसर भारत सरकार द्वारा चलाया जा रहा है। जिसके माध्यम से ग्रामीण अंचल से लेकर राष्ट्रीय स्तर तक के मंच तक प्रतिभा पहुंचाने के लिए कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर जिला विकास सलाहकार समिति सदस्य श्री सुधाकर पवार ने कहा कि आज प्रतिभाओं की कोई भी कमी किसी भी क्षेत्र में नहीं है, केवल मंच की इन्हें आवश्यकता है। प्राचार्य मीनाक्षी चौबे ने बताया कि सदैव हमारा जिला प्रतिभाओं का जिला रहा है, जो पांच बच्चे चयनित होकर राज्य स्तर पर जाएंगे एवं हमारे जिले का प्रतिनिधित्व करते हुए अपना परचम लहराएंगे। भाषण प्रतियोगिता में कु लतिका साहू, आदित्य राठौर, स्नेहा बोस, योगी देशमुख, सोनाली आहके द्वारा क्रमश प्रथम द्वितीय तृतीय, चतुर्थ एवं पंचम स्थान प्राप्त किया गया। वहीं समापन सत्र में प्रतिभागियों को डॉ अनिता सोनी एवं अतिथियों द्वारा स्मृति चिन्ह एवं प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया। भाषण प्रतियोगिता में चयन समिति के रूप में डॉ.राजेश शेषकर, श्री युगल किशोर सरले, श्री सुशील उदयपुर, श्रीमती गौरी गौरी बालपुरी, श्री अशोक मालवीय द्वारा सहयोग किया गया।कार्यक्रम का आभार संयोजक डॉ जीपी साहू एवं मंच संचालन प्रो संतोष पवार द्वारा किया गया। इस अवसर पर प्रो शंकर सातनकर, श्री धनंजय ठाकुर, डॉ गीता माली डॉ साधना ठाकुर, डॉ ममता राजपूत, प्रो निर्मल विश्वास, प्रो संदीप राने, श्री रामनारायण शुल्क, हनुमत राव पांसे, श्री वीरेंद्र बिलगैया उपस्थित थे।

रायसेन में जिला स्तरीय कबड्डी प्रतियोगिता का समापन

रायसेन (निप्र)। पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग के 'राष्ट्रीय ग्राम स्वराज अभियान' के अंतर्गत नवाचार एवं पारंपरिक खेल प्रोत्साहन हेतु जिला स्तरीय कबड्डी प्रतियोगिता का भव्य आयोजन खेल परिसर रायसेन में संपन्न हुआ। इस प्रतियोगिता में जिले के सभी सात विकासखण्डों की टीमों ने अपनी प्रतिभा का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। जिला स्तरीय कबड्डी प्रतियोगिता का समापन कार्यक्रम सांची विधायक डॉ प्रभुराम चौधरी के मुख्य आतिथ्य में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में नगर पालिका अध्यक्ष श्रीमती सविता सेन, स्थानीय जनप्रतिनिधि तथा अधिकारी भी उपस्थित रहे।

संक्षिप्त समाचार

चैत्र नवरात्रि की तैयारियों को लेकर श्री महामाई सेवा समिति की बैठक

वीरपुर स्थित महामाई माता मंदिर डांगवाली में व्यवस्थाओं की समीक्षा, श्रद्धालुओं की सुविधा सर्वोपरि

विदिशा (निप्र)। चैत्र नवरात्रि उत्सव विक्रम संवत 2083 के अवसर पर सिरोंज के ग्राम वीरपुर स्थित श्री महामाई माता मंदिर डांगवाली में आयोजित होने वाले तिथिवार कार्यक्रमों की तैयारियों को लेकर श्री महामाई सेवा समिति की महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई। बैठक में सिरोंज विधायक उमाकांत शर्मा, कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता एवं पुलिस अधीक्षक श्री रोहित काशवानी सहित अन्य अधिकारी मौजूद रहे। मंदिर परिसर में आयोजित बैठक के दौरान विभिन्न विभागों को जिम्मेदारियां सौंपी गईं, ताकि नवरात्रि में आने वाले श्रद्धालुओं को किसी भी प्रकार की असुविधा का सामना न करना पड़े। बैठक से पूर्व विधायक श्री उमाकांत शर्मा ने कलेक्टर एवं पुलिस अधीक्षक सहित अन्य अधिकारियों के साथ मंदिर पहुंचकर विधिवत पूजा-अर्चना की तथा मंदिर की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर प्रकाश डाला। बैठक को संबोधित करते हुए विधायक श्री शर्मा ने पूर्व वर्षों की भांति इस वर्ष भी भव्य एवं सुव्यवस्थित आयोजन सुनिश्चित करने पर बल दिया। उन्होंने विभागवार दायित्वों के प्रभावी क्रियान्वयन पर विस्तार से चर्चा की। कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता ने कहा कि मंदिर एवं मेले में आने वाले श्रद्धालुओं को किसी प्रकार की परेशानी न हो, यह प्रशासन की प्राथमिक जिम्मेदारी है। उन्होंने स्पष्ट निर्देश दिए कि किसी भी विभाग की ओर से लापरवाही की शिकायत नहीं आनी चाहिए। समय पर बिजली, पेयजल, स्वास्थ्य सेवाएं और सुरक्षा के बेहतर प्रबंध सुनिश्चित किए जाएं। साथ ही उन्होंने कहा कि इस प्रकार के बड़े आयोजनों के माध्यम से शासकीय योजनाओं और कार्यक्रमों का व्यापक प्रचार-प्रसार भी किया जा सकता है। बैठक में लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी, ऊर्जा, स्वास्थ्य, पुलिस, शिक्षा, लोक निर्माण विभाग, एमपीआरडीसी, जनपद पंचायत, नगरीय निकाय, वन विभाग, जल संसाधन, महिला एवं बाल विकास सहित विभिन्न विभागों को आवश्यक जिम्मेदारियां सौंपी गई।

अपर कलेक्टर ने लंबित आवेदनों की समीक्षा कर शिकायतों के त्वरित निराकरण के दिए निर्देश

विदिशा (निप्र)। अपर कलेक्टर श्री अनिल कुमार डामोर ने आज लंबित आवेदनों की समीक्षा बैठक के दौरान सीएम हेल्पलाइन एवं समाधान ऑनलाइन पोर्टल पर दर्ज विभागीय शिकायतों की अद्यतन स्थिति का विस्तार से जायजा लिया। उन्होंने संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया कि प्राप्त शिकायतों का समयसीमा में गुणवत्तापूर्ण निराकरण सुनिश्चित किया जाए, जिससे आमजन को अनावश्यक प्रतीक्षा न करनी पड़े। अपर कलेक्टर ने कहा कि सीएम हेल्पलाइन एवं समाधान ऑनलाइन जैसे प्लेटफॉर्म शासन और जनता के बीच सीधा संवाद स्थापित करने के सशक्त माध्यम हैं। अतः शिकायतों के निराकरण में लापरवाही बरतने वाले अधिकारियों के विरुद्ध कार्यवाही की जाएगी। उन्होंने विभागवार लंबित प्रकरणों की सूची की समीक्षा कर शीघ्र निराकरण के निर्देश दिए। बैठक में शिकायतों के निस्तारण की गुणवत्ता, समयसीमा पालन तथा फीडबैक की स्थिति पर भी चर्चा की गई। अधिकारियों को निर्देशित किया गया कि शिकायतकर्ता से संपर्क कर समाधान की जानकारी दें और प्रकरणों का संतोषजनक निराकरण सुनिश्चित करें।

एचपीवी वायरस टीकाकरण को गंभीरता से नहीं लेने पर सिविल सर्जन तथा जिला टीकाकरण अधिकारी को नोटिस जारी करने के निर्देश

बैठक में कलेक्टर ने विभागीय कार्यो तथा सीएम हेल्पलाईन की समीक्षा कर दिए दिशा-निर्देश

रायसेन (निप्र)। कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में आयोजित टीएल बैठक में कलेक्टर श्री अरूण कुमार विश्वकर्मा द्वारा सीएम हेल्पलाईन, विभागीय गतिविधियों तथा योजनाओं की साप्ताहिक प्रगति की विस्तृत समीक्षा की गई। कलेक्टर श्री विश्वकर्मा ने विभागवार और अधिकारीवार सीएम हेल्पलाईन निराकरण की विस्तृत समीक्षा करते हुए अधिकारियों को संतुष्टिपूर्ण निराकरण में तेजी लाने के निर्देश दिए। उन्होंने सभी जिला अधिकारियों, एसडीएम, जनपद सीईओ, सीएमओ को निर्देशित किया कि सीएम हेल्पलाईन पर प्रकरण प्राप्त होते ही निराकरण की कार्यवाही प्रारंभ की जाए। कलेक्टर श्री विश्वकर्मा ने जिला अस्पताल से संबंधित सीएम हेल्पलाईन शिकायतों की संख्या में लगातार बढ़ोत्तरी होने तथा निराकरण की गति धीमी होने पर नाराजगी जाहिर करते हुए सिविल सर्जन डॉ यशपाल बाल्यान को कार्यप्रणाली में सुधार लाने एवं सीएम हेल्पलाईन का प्राथमिकता से निराकरण हेतु निर्देशित किया। कलेक्टर श्री विश्वकर्मा ने नॉन अटेन्डेन्ट शिकायतों की समीक्षा के दौरान कहा कि सीएम हेल्पलाईन नॉन अटेन्डेन्ट रहना यह दर्शाता है कि संबंधित अधिकारी अपने कार्य में प्रति गंभीर नहीं है। भविष्य में कोई भी सीएम हेल्पलाईन नॉन अटेन्डेन्ट ना रहे, यह अधिकारी सुनिश्चित करें। बैठक में स्वास्थ्य विभाग की समीक्षा के दौरान कलेक्टर श्री विश्वकर्मा ने जिले में एचपीवी (ह्यूमन पैपिलोमा वायरस) टीकाकरण की जानकारी लेते हुए कहा कि जिले में 14052 महिलाओं को टीका लगाया जाना है, जिसके विरूद्ध प्रगति बेहद कम है। उन्होंने टीकाकरण कार्य गंभीरता से नहीं लेने और जिला अस्पताल की अव्यवस्थाओं को लेकर नाराजगी व्यक्त करते हुए सिविल सर्जन डॉ यशपाल बाल्यान को नोटिस जारी करने के निर्देश दिए। इसके अतिरिक्त जिला टीकाकरण अधिकारी को भी नोटिस जारी करने के लिए कहा। साथ ही सीएमएचओ को प्रतिदिन मॉनीटरिंग हेतु निर्देशित किया। उल्लेखनीय है कि सर्वाइकल कैंसर भारत में महिलाओं में होने वाला दूसरा सबसे जानलेवा कैंसर है। इस गंभीर बीमारी की रोकथाम के उद्देश्य से भारत सरकार द्वारा राष्ट्रव्यापी एचपीवी (ह्यूमन पैपिलोमा वायरस) टीकाकरण अभियान प्रारंभ किया गया है। कलेक्टर श्री विश्वकर्मा ने संकल्प से समाधान अभियान की समीक्षा करते हुए अधिकारियों से कहा कि अभियान के तहत अधिक से अधिक लोगों तक शासन की योजनाओं का लाभ पहुंचाया जाए।

शमशाबाद में सात मार्च को मुख्यमंत्री जी का आगमन

विधायक, कलेक्टर और एसपी ने किया तैयारियों का संयुक्त निरीक्षण

विदिशा (निप्र)। आगामी 7 मार्च को मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के प्रस्तावित शमशाबाद आगमन को लेकर प्रशासनिक तैयारियों का जायजा लिया गया है। कार्यक्रम के मद्देनजर आज स्थानीय विधायकश्री सूर्य प्रकाश मीणा, कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता एवं पुलिस अधीक्षक श्री रोहित काशवानी ने संयुक्त रूप से हेलीपैड, रथ रूट तथा मुख्य कार्यक्रम स्थल का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान अधिकारियों ने हेलीपैड पर सुरक्षा, बैरिकेडिंग, फायर ब्रिगेड, एम्बुलेंस एवं अन्य आवश्यक व्यवस्थाओं की समीक्षा की। साथ ही मुख्यमंत्री के आगमन से कार्यक्रम स्थल तक निर्धारित रथ रूट का भी बारीकी से अवलोकन किया गया। मार्ग में यातायात प्रबंधन, सुरक्षा व्यवस्था, साफ-सफाई एवं स्वागत द्वारों की तैयारियों को लेकर संबंधित विभागों को आवश्यक निर्देश दिए गए। मुख्य कार्यक्रम स्थल पीएम श्री शासकीय बालक हायर सेकेंडरी स्कूल में मंच निर्माण, बैठक व्यवस्था, पेयजल, विद्युत आपूर्ति, शौचालय, पार्किंग एवं आमजन की सुविधाओं की विस्तार से समीक्षा की गई। अधिकारियों को समय-सीमा में सभी कार्य पूर्ण करने तथा किसी भी प्रकार की लापरवाही न बरतने के निर्देश दिए गए। कलेक्टर ने संबंधित विभागों के अधिकारियों से समन्वय बनाकर कार्य करने तथा सुरक्षा मानकों का विशेष ध्यान रखने को कहा। वहीं पुलिस अधीक्षक ने सुरक्षा व्यवस्था को लेकर विस्तृत प्लान तैयार करने एवं संवेदनशील बिंदुओं पर अतिरिक्त बल तैनात करने के निर्देश दिए। स्थानीय विधायक श्री मीणा ने कहा कि मुख्यमंत्री के आगमन को लेकर क्षेत्रवासियों में उत्साह है और कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए सभी विभाग समन्वित प्रयास करें। प्रशासन द्वारा कार्यक्रम को सुव्यवस्थित एवं गरिमामय रूप से आयोजित करने हेतु आवश्यक तैयारियाँ युद्धस्तर पर की जा रही हैं। स्कूल में आयोजित बैठक में सभी बिन्दुओं पर पृथक पृथक चर्चा कर क्रियान्वयन हेतु अधिकारियों को दायित्व सौपे गए हैं।इस अवसर पर शमशाबाद नगर परिषद की अध्यक्ष जिला पंचायत सीईओ श्री ओपी सनोडिया एसडीएम श्री अजय प्रताप सिंह पटेल समेत विभिन्न विभागों के जिला व खंड स्तरीय अधिकारी मौजूद रहे।

सरसों भी बनी भावांतर योजना का हिस्सा, कृषि वर्ष 2026 में किसानों को मिली बड़ी सौगात

सरसों के भावांतर योजना में शामिल होने से खुश हैं सीहोर के सरसों उत्पादक किसान

सीहोर (निप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में मध्यप्रदेश सरकार द्वारा वर्ष 2026 को कृषि वर्ष के रूप में मनाए जाने का निर्णय प्रदेश के किसानों के लिए नई उम्मीद और विश्वास लेकर आया है। सरकार लगातार किसानों की आय बढ़ाने और उनकी फसलों को उचित मूल्य दिलाने के उद्देश्य से महत्वपूर्ण फैसले ले रही है। इसी क्रम में हाल ही में प्रदेश सरकार ने सरसों की फसल को भी भावांतर भुगतान योजना में शामिल करने का निर्णय लेकर किसानों को बड़ी राहत प्रदान की है। इससे पहले सोयाबीन फसल पर भावांतर योजना का लाभ दिलाकर सरकार ने किसानों के हित संरक्षण की अपनी प्रतिबद्धता को साबित किया था, वहीं अब सरसों उत्पादक किसानों को भी इस योजना से जोड़ा जाना कृषि क्षेत्र के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है।

प्रदेश सरकार के इस निर्णय से खासतौर पर रबी सीजन में सरसों की खेती करने वाले किसानों में उत्साह और संतोष का वातावरण देखा जा रहा है। किसानों का कहना है कि बाजार में कीमतों के उतार-चढ़ाव के कारण उन्हें अक्सर आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता था, लेकिन भावांतर योजना के माध्यम से अब उन्हें न्यूनतम मूल्य की सुरक्षा मिल सकेगी। सीहोर जिले के ग्राम धनखेड़ी निवासी सरसों उत्पादक किसान श्री संजय बामनिया ने मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि प्रदेश सरकार किसानों की वास्तविक समस्याओं को समझते हुए लगातार निर्णय ले रही है। उन्होंने बताया कि सरसों को भावांतर योजना में शामिल किया जाना किसानों को उचित दाम दिलाने वाला फैसला है, जिससे खेती को मजबूती मिलेगी और किसानों का आत्मविश्वास भी बढ़ेगा। किसानों का मानना है कि वर्ष 2026 को कृषि वर्ष घोषित करना केवल एक औपचारिक घोषणा नहीं बल्कि कृषि को केंद्र में रखकर विकास की नई दिशा तय करने का प्रयास है। सिंचाई, फसल संरक्षण, समर्थन मूल्य और बाजार सुरक्षा जैसे विषयों पर सरकार की सक्रियता से खेती लाभकारी बनने की ओर अग्रसर है। किसान श्री बामनिया ने कहा कि प्रदेश सरकार खेती को घाटे का सौदा नहीं बल्कि सम्मानजनक और लाभकारी व्यवसाय बनाने की दिशा में लगातार कार्य कर रही है। सरसों को भावांतर योजना में शामिल किए जाने से प्रदेश के लाखों किसानों को प्रत्यक्ष लाभ मिलेगा। किसानों का कहना है कि सरकार के ऐसे निर्णय खेती के प्रति नई ऊर्जा पैदा करते हैं और युवाओं को भी कृषि से जुड़ने के लिए प्रेरित करते हैं। कृषि वर्ष के दौरान लिए जा रहे किसान हितैषी निर्णय यह संदेश दे रहे हैं कि प्रदेश सरकार का मूल लक्ष्य किसान समृद्धि के माध्यम से ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाना है।

रंगपंचमी पर करीला मंदिर में उमड़ेगी आस्था, कलेक्टर व एसपी ने व्यवस्थाओं का लिया जायजा

विदिशा (निप्र)। रंगपंचमी के अवसर पर बड़ी संख्या में आने वाले श्रद्धालुओं को ध्यान में रखते हुए करीला मंदिर में की जा रही व्यवस्थाओं का कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता एवं पुलिस अधीक्षक श्री रोहित काशवानी ने संयुक्त रूप से स्थल भ्रमण कर निरीक्षण किया। अधिकारियों ने विभिन्न विभागों के अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश प्रदान किए। निरीक्षण के दौरान सुरक्षा व्यवस्था, पेयजल आपूर्ति, स्वास्थ्य सुविधाओं, यातायात प्रबंधन एवं भीड़ नियंत्रण की व्यवस्थाओं की विस्तार से समीक्षा की गई। कलेक्टर ने निर्देश दिए कि आवागमन सुचारू रूप से संचालित रहे, इसके लिए पार्किंग, बैरिकेडिंग एवं मार्ग संकेतक सुव्यवस्थित किए जाएं। वहीं पुलिस अधीक्षक ने संवेदनशील बिंदुओं पर अतिरिक्त पुलिस बल तैनात करने एवं सीसीटीवी निगरानी की व्यवस्था सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। स्वास्थ्य विभाग को अस्थायी चिकित्सा शिविर, एम्बुलेंस एवं प्राथमिक उपचार की समुचित व्यवस्था रखने के निर्देश दिए गए। साथ ही लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग को पेयजल की पर्याप्त उपलब्धता एवं स्वच्छता बनाए रखने पर विशेष ध्यान देने को कहा गया।

माता जानकी की पूजा-अर्चना : निरीक्षण से पूर्व कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता एवं पुलिस अधीक्षक श्री रोहित काशवानी सहित अन्य अधिकारियों ने मंदिर पहुंचकर माता जानकी के दर्शन कर विधिवत पूजा-अर्चना की और क्षेत्र की सुख-समृद्धि की कामना की। प्रशासन द्वारा रंगपंचमी के अवसर पर श्रद्धालुओं की सुविधा एवं सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए सभी आवश्यक व्यवस्थाएं सुनिश्चित की जा रही हैं, ताकि आयोजन शांतिपूर्ण एवं व्यवस्थित ढंग से संपन्न हो इस अवसर पर जिला पंचायत सीईओ श्री ओपी सनोडिया, सिरोंज एसडीएम,एसडीओपी के अलावा विभिन्न विभागों के जिला व खंड स्तरीय अधिकारी साथ मौजूद रहे।

साइबर फ्रॉड के आरोपी से वापस दिलाएं रुपए, पीड़ित बोला पुलिस का शुक्रिया

नर्मदापुरम पुलिस की दिल्ली में दबिश

नर्मदापुरम (निप्र)। साइबर फ्रॉड केस में नर्मदापुरम पुलिस ने एक बड़ी सफलता हासिल की। पुलिस और साइबर सेल की कड़ी मेहनत से न केवल पीड़ित को रुपए वापस दिलाएं। पुलिस ने देश की राजधानी में पहुंचकर साइबर फ्रॉड करने वाले आरोपी को भी खोज निकाला। जिसे पुलिस ने अरेस्ट कर नर्मदापुरम लेकर आई।

साइबर फ्रॉड में ट्रांसफर हुए 1.80लाख रुपए वापस मिलने पर पीड़ित परिजन कुलदीप वर्मा ने एसपी सांई कृष्णा थोटा के पास पहुंचकर पुलिस टीम को धन्यवाद ज्ञापित किया। पीड़ित ने लोगों से साइबर फ्रॉड से बचने, अनजान लिंक, एपीके फाइल को डाउनलोड न करने की अपील की। पुलिस के मुताबिक फरियादिया प्रीति वर्मा निवासी नर्मदापुरम है, जो टीचर है। उनके साथ में एक महीने पहले एक अनजान कॉल आया। अज्ञात व्यक्ति ने स्वयं को बैंक कर्मी बताया और क्रेडिट कार्ड के चार अंक पीछे के बताएं। जो सही थे। इसके बाद क्रेडिट कार्ड की प्रक्रिया अपडेट करने के बहाने उसने दो तीन मिनट प्रोसेस की और ओटीपी मांगा। जिससे 1,80 लाख रुपए खाते से ट्रांसफर कर लिए थे। जांच के दौरान तकनीकी साक्ष्य एवं बैंक ट्रांजेक्शन डिटेल का विश्लेषण किया। रुपए जिस खाते में ट्रांसफर हुई, वह खाता दिल्ली निवासी आरोपी सुरेंद्र उर्फ प्रेम कुमार के नियंत्रण में पाया गया। देहात थाना प्रभारी निरीक्षक सौरभ पांडे, सहायक उप निरीक्षक दीपक पाराशर, प्रवीण शर्मा, आरक्षक चेतन नरवरे एवं साइबर सेल नर्मदापुरम से संदीप यदुवंशी, प्रशांत राजपूत एवं दीपेश सोलंकी की संयुक्त टीम द्वारा त्वरित कार्रवाई करते हुए दिल्ली पहुंचकर आरोपी सुरेन्द्र उर्फ प्रेम कुमार को हिरासत में लिया। आरोपी को वैधानिक प्रक्रिया पूर्ण कर न्यायालय के समक्ष निर्धारित समय सीमा में प्रस्तुत किया गया। पूछताछ में आरोपी ने धोखाधड़ी में अपनी संलिप्तता स्वीकार की है। मामले में अन्य संभावित आरोपियों एवं तकनीकी साक्ष्यों के संबंध में आगे की जांच जारी है। फिर रुपए वापस कराने की प्रक्रिया की। सोमवार को उसके बैंक खाते से रुपए वापस आ गए। रुपए वापस आने पर पीड़िता के देवर कुलदीप वर्मा एसपी ऑफिस पहुंचें और एसपी सांई कृष्णा थोटा, उनकी टीम का शुक्रिया अदा किया।

साइबर ठगी से बचने एपीके, अनजान लिंक ओपन न करें

एसपी साईंकृष्णा थोटा ने बताया साइबर फ्रॉड केस में रुपए वापस आने के साथ आरोपी की भी गिरफ्तारी करने बड़ी सफलता है। जनता से मेरी अपील है कि साइबर ठगों से बचने का सबसे अच्छा तरीका है कि अनजान लिंक या एपीके फाइल को डाउनलोड न करें। कोई भी एप केवल गूगल प्ले स्टोर या आधिकारिक बेवसाइट से ही डाउनलोड कर इंस्टॉल करें।

वन विभाग की प्लांटेशन एरिया में दोबारा अतिक्रमण की कोशिश

नर्मदापुरम (निप्र)। नर्मदापुरम जिले के बानापुरा रेंज की झाड़बीड़ा बीट में प्लांटेशन की जमीन पर अब दोबारा कब्जा करने की तैयारी है। उक्त जमीन पर अतिक्रमण करने के लिए टपरिया बनाई जा रही है। 5 दिन पहले ही 27 फरवरी को राजस्व और पुलिस के साथ मिलकर फॉरेस्ट के अमले ने संयुक्त रूप से अतिक्रमण हटाया। जिसमें करीब 230 अधिकारी और कर्मचारी थे। जेसीबी से उक्त जमीन पर गड्ढे भी किए। ताकि अतिक्रमण न कर सकें। बावजूद अब फिर से प्लांटेशन की जमीन तीन से चार टपरिया बन गई है। यह टपरिया किसने बनाई। उनके नाम सामने नहीं आ पाएं है। टपरिया बनने की जानकारी से रेंजर ज्ञान सिंह पवार अनजान है। उनका कहना है कि टपरिया की जानकारी मुझे नहीं है।

राइट क्लिक

खामेनेई की मौत पर भारत में खिंची सियासी रेडलाइन के मायने

अजय बोकिल

लेखक सुबह सवेरे के कार्यकारी प्रधान संपादक हैं।
संपर्क-
9893699939
ajaybokil@gmail.com

ईरान के सर्वोच्च धार्मिक नेता और दुनिया भर में शिया मुसलमानों के रहनुमा अयातुल्लाह अली खामेनेई के अमेरिका और इजराइल द्वारा किए गए खात्मे पर भारत में सियासत की नई रेड लाइन खिंच गई है। देश में कांग्रेस और अन्य विपक्षी पार्टियां 'खामेनेई की हत्या' पर 'मोदी सरकार की चुप्पी' को भारतीय विदेश नीति पर प्रश्न चिन्ह बता रही हैं। कांग्रेस की वरिष्ठ नेता श्रीमती सोनिया गांधी ने एक अंग्रेजी अखबार में लिखे लेख में खामेनेई मामले में मोदी सरकार के रवैये को 'चिंताजनक चुप्पी' करार देते हुए संसद में इस पर तुरंत चर्चा की मांग की। उन्होंने खामेनेई की 'लक्षित हत्या' पर भारत सरकार के मौन को 'जिम्मेदारी से पीछे हटना' करार देते हुए कहा कि अब हमे अपनी नैतिक शक्ति के 'पुनर्अन्वेषण' और उसे स्पष्टता और प्रतिबद्धता के साथ व्यक्त करने की तत्काल आवश्यकता है। नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने कहा कि इस स्थिति में हमारी चुप्पी तटस्थता नहीं है। विपक्षी दलों की ओर से यह भी आरोप लगाया गया कि भारत की विदेश नीति 'संतुलित' न होकर किसी एक पक्ष में झुकी ज्यादा प्रतीत होती है। इसके जवाब में भाजपा सांसद निशिकांत दुबे ने पोस्ट किया कि भारत में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी की हत्या पर भी 1984 में कोई प्रतिक्रिया नहीं दी थी, ऐसे में भारत की कौन सी विवशता है। हालांकि भारत सरकार ने गुरूवार को खामेनेई के निधन पर अपनी आधिकारिक संवेदना व्यक्त कर दी है, लेकिन पीएम मोदी अभी भी विपक्ष के निशाने पर हैं। भारत सरकार ने इस पूरे मामले में कोई अधिकृत बयान जारी न कर, केवल विश्वशांति कायम रखने और संवाद से विवाद सुलझाने की वकालत की है। हमने न तो इजराइल- अमेरिका द्वारा ईरान पर हमले का समर्थन किया और न ही खामेनेई के मारे जाने की निंदा की। अलबत्ता प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने हमले के दो दिन बाद मध्य पूर्व के खाड़ी देशों के कुछ राष्ट्राध्यक्षों से बात की और वहां रह रहे भारतीयों की सुरक्षा को लेकर चिंता जताई। चूंकि इस संघर्ष के सभी पक्ष हमारे दोस्त हैं, इसलिए हम सभी के साथ हैं या किसी के भी साथ नहीं है। इसका एक अर्थ यह भी निकाला गया कि विश्व की बड़ी आर्थिक और सैनिक ताकत होते हुए भी भारत की वैश्विक मंच पर कोई खास आवाज नहीं है।

मोदी सरकार पर आरोप है कि उसने एक ऐसे देश, जिसके साथ भारत के सदियों से मित्रतापूर्ण रिश्ते रहे हैं, के सर्वोच्च धार्मिक नेता की मौत पर राजकीय शोक घोषित करना तो दूर, सामान्य दुख तक नहीं जताया। परोक्ष रूप से यह भारत में रह रहे मुसलमानों और खासकर शिया मुसलमानों की भावनाओं की अनदेखी है। जबकि भारत का सरकार का रवैया इस बात का संकेत है कि तीन देशों की आपसी लड़ाई में हमारी चिंताएं केवल हमारे अपने हित हैं आतंकवाद पर 'जीरो टालरेंस' के चलते हम ऐसे किसी भी पक्ष के साथ खड़े नहीं दिखना चाहते, जो प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से आंतकवाद का हिमायती हो।

श्रीमती सोनिया गांधी ने जो कहा, जरा उसे तथ्यों, तर्कों, रणनीतिक और व्यावहारिक पैमाने पर परखें। ईरान में 1979 में जब तत्कालीन अमेरिका समर्थित राजा शाह पहलवी को हटाकर इस्लामिक क्रांति हुई, तब भारत में जनता पार्टी की सरकार थी। उस सरकार ने भी कट्टर इस्लामिक क्रांति का खुलेमन से स्वागत नहीं किया था। जो प्रतिक्रिया थी, वह भारत और ईरान के ऐतिहासिक और रणनीतिक रिश्तों के आधार पर थी। लेकिन उसी इस्लामिक क्रांति के शिल्पकार अयातुल्लाह रोहिला खामेनेई का जब 3 जून 1989 को निधन हुआ तो तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गांधी ने भारत में तीन दिन का राजकीय शोक घोषित किया था। ऐसा ही शोक तब पाकिस्तान ने भी घोषित किया था। लेकिन इस बार पाकिस्तान ने कोई राजकीय शोक घोषित नहीं किया। उलटे ईरान के मामले में वह विरोधी खेमे में खड़ा दिखाई दिया। हो सकता है कि सोनिया गांधी लेख के बहाने राजीव गांधी की मुस्लिम हितैषी नीतियों की याद दिला रही हों। याद करें, यही वो समय था, जब देश में शाह बानो और राम मंदिर की राजनीति सिर उठा रही थी। साम्प्रदायिक ध्रुवीकरण की चक्की चलने लगी थी। तुष्टीकरण के भंवर में फंसी कांग्रेस का मुस्लिम वोट बैंक खिसकने लगा था, जो अभी भी आंशिक रूप में ही लौटा है। अब कांग्रेस की कोशिश इसी वोट को और मजबूत करने की हो। क्योंकि जल्द ही केरल और असम जैसे राज्यों में विस चुनाव हैं, जहां मुसलमानों की बड़ी आबादी है। एक बात और याद रखें। अयातुल्लाह खामेनेई केवल शिया मुसलमानों के नेता थे। उनमें भी मुख्युतः बारह इमामो (अरबी में इत्ना आशारिया) को मानने वाले शियाओं के सर्वोच्च नेता थे। लिहाजा उनका दुखी और आक्रोशित होना स्वाभाविक है। ये बारह इमाम अरब में ई.स. 599 से लेकर 869 तक हुए (सुन्नी मुसलमान इसमें विश्वास नहीं करते)। बारह शब्द इस विश्वास पर आधारित है कि पैगंबर मुहम्मद के परिवार से बारह पुरुष वंशज (अली इब्न अबी तालिब से लेकर मुहम्मद अल-मेहदी तक) वो इमाम हैं, जिन्होंने इस्लाम में दैवी प्रेरणा से शरिया की धार्मिक और न्यायसंगत व्याख्या की। इनमे से आखिरी इमाम अल मेहदी को शिया अमर मानते हैं, जबकि बाकी 11 में से दो की हत्या और नौ को जहर देकर मार दिया गया। मारने वाले भी उनके करीबी ही थे। वैसे इस्लाम के शिया सम्प्रदाय में भी कई उपसम्प्रदाय हैं। मसलन जैदी शियाओंऔर रहस्यवादी अलेवी शियाओं का कोई एक धार्मिक नेता नहीं है। जैदी पांच और अलेवी दो इमामों को ही मानते हैं। शियाओं का एक और उपसम्प्रदाय कासेनिया शियाओंका है, जो चार इमामों को मानते हैं। जबकि दाउदी बोहरा 21 इमामों को मानते हैं और उनके सर्वोच्च धार्मिक नेता सैयदना साहब और इस्माइली आगाखानी शियाओंके सर्वोच्च नेता प्रिंस आगाखान हैं।

भारत में करीब 25 करोड़ मुसलमानों में से करीब 20 फीसदी शिया हैं और कुल शियाओंमें 80 फीसदी बारह इमामत को मानने वाले हैं। भारत में 80 फीसदी मुस्लिम वोटर सुन्नी हैं। अगर सोनिया गांधी इसी वर्ग को एड्रेस कर रही हैं तो कांग्रेस को वोट की दृष्टि से कितना फायदा होगा, समझा सकता है। जबकि ईरान के मसले में विश्व में शिया सुन्नी-विभाजन एक बार फिर से और गहरा गया है। जहां तक राजकीय शोक घोषित करने की बात है तो दुनिया में ईरान के अलावा केवल शिया बहुल इराक ने तीन दिन का राजकीय शोक घोषित किया। एक और शिया बहुल देश अजरबैजान ने केवल शोक जताया। बाकी सुन्नी देश खामोश ही हैं। भारत में भी जो विरोध प्रदर्शन हो रहे हैं, वो मुख्ये रूप से बारह इमामतपंथी शिया मुसलमान ही कर रहे हैं। इसमें भी कश्मीर घाटी में हो रहे प्रदर्शन के पीछे वहां की स्थानीय राजनीति ज्यादा है।

अमूमन कोई भी देश किसी महान व्यक्तित्व के निधन पर शोक तभी जताता है, यदि वह राष्ट्राध्यक्ष हो अथवा उसका कोई सकारात्मक वैश्विक योगदान हो। दिवंगत अयातुल्लाह ईरान में इस्लामिक क्रांति करने वाले अयातुल्लाह रोहिला के उत्तराधिकारी थे न कि उस क्रांति के शिल्पकार। महिलाओं के बारे में उनकी सोच तो जगजाहिर है ही। अलबत्ता खामेनेई को इस बात का श्रेय जरूर दिया जा सकता है कि उन्होंने ईरान में इस्लामिक सत्ता को स्टील फ्रेम में बदलने के लिए पूरी ताकत लगा दी और इसके खिलाफ उठने वाली हर आवाज को कुचलने में रत्तीभर संकोच नहीं किया। ईरान की पहचान को उदार इस्लाम की जगह कट्टर इस्लाम से जोड़ा और विश्व में अपने दुश्मनों को कमजोर करने के लिए तीन बड़े आतंकी संगठन खड़े किए, उन्हें पाला पोसा। साथ ही उन्होंने महाबली अमेरिका की दादागिरी को निर्भीकता से चुनौती दी और ईरान को परमाणु शक्ति बनाने के लिए पूरी ताकत झोंक दी।

जहां तक भारत के साथ ईरान के रिश्तों की बात है तो यह मोटे तौर पर ठीक ही रहे हैं। यूं तो ईरानियों को आर्यों की अलग हुई शाखा के रूप में भी माना जाता है। उनकी फारसी भाषा हमारी संस्कृत जितनी ही पुरानी और समृद्ध है। लेकिन यह वही ईरान है, जहां इस्लाम के आगमन के बाद वहां के लोगों ने अपने ही पुरूखों का पारसी धर्म मानने वालों को देश छोड़ने पर विवश किया। ईरान में अपनो के प्रति असहिष्णुता की कहानी तभी से शुरू होती है, जो आज तक जारी है। ईरान और भारत के बीच लोग आते-जाते रहे हैं। व्यापार भी होता रहा है। मुगलों के जमाने में बादशाह हुमायूं ईरान से लौटकर कई ईरानी विद्वानों को साथ लेता आया। उसका नतीजा यह हुआ कि मुगल दरबार की राजभाषा फारसी बनी, जिसका कुछ असर अभी तक है।

ईरानियों ने भारत को जो दिया, वैसे ही लूटा भी। नादिरशाह दुर्रानी 1739 में ईरान से ही आया था, और वो अपने साथ कोहिनूर, दरिया-ए-नूर जैसे बेशकीमती हीरे और मुगल बादशाह के सोने से बने अप्रतिम तख्ते ताऊस के साथ साथ अकूत सोना-चांदी लूट कर ले गया। यही नहीं, उसने दिल्ली में कत्लेआम किया, जिसमें मरने वाले बड़ी तादाद में मुसलमान ही थे। कोहिनूर तो अंग्रेज ले गए, लेकिन बेशकीमती दरिया-ए-नूर हीरा आज तक ईरान ने हमे नहीं लौटाया। वह ईरानी सेंट्रल बैंक में रखा है। और तख्ते ताऊस को तोड़-ताड़ कर उसका सोना और जवाहरात ईरानी राजा ने अपने सिंहासन में जड़वा लिए। नादिरशाह के बाद उसके उत्तराधिकारी अहमदशाह अब्दाली ने भारत को चार बार लूटा और देश में उभरती मराठों की ताकत को पंगु बनाकर चला गया।

अगर खामेनेई के निधन पर शोक का नैतिक आधार ढूंढे तो भारत आजाद होने के बाद ईरान के तत्कालीन शाह के साथ हमारे रिश्ते ठीक ही थे, लेकिन उसका झुकाव मुस्लिम होने के कारण पाकिस्तान की तरफ ज्यादा रहा। इस्लामिक क्रांति के बाद ईरान की विदेश नीति शिया-सुन्नी तराजू पर ज्यादा निर्धारित होने लगी। वहां के शासकों ने भारत के मामले में संतुलन बरतने की कोशिश की। अयातुल्लाह अली खामेनेई ने कश्मीर मुद्दे पर केवल एक बार भारत का खुलकर साथ 1991 में दिया था, जब तत्कालीन प्रधानमंत्री नरसिंहराव की पहल पर उसने संयुक्त राष्ट्र संघ में इस्लामिक देशों के संगठन द्वारा कश्मीर पर भारत के खिलाफ लाए गए प्रस्ताव का विरोध कर उसे रूकवा दिया था। तो क्या कांग्रेस उसी का अहसान का बदला चुकाना चाह रही है? इस एक उदाहरण को छोड़ दिया जाए तो भारत के मुसलमानों और कश्मीर को लेकर ईरान का रवैया भारत के अनुकूल नहीं रहा है। जबकि हमने ईरान की कई तरह से मदद की और करते आ रहे हैं। कश्मीर से धारा 370 हटाने पर ईरान ने भारत की खुलकर आलोचना की तो भारत ने उसका कड़ा विरोध 'हमारे आंतरिक मामले में दखल' के रूप में किया था। अयातुल्लाह कई बार भारत के मुसलमानों की स्थिति को लेकर सवाल उठाते रहे, लेकिन भारत ने इसे आपसी रिश्तों में कटुता तक नहीं पहुंचने दिया। अयातुल्लाह खामेनेई 1990 में एक बार भारत यात्रा पर आए थे और वो कर्नाटक और श्रीनगर गए थे। उन्होंने श्रीनगर में मुसलमानों की सभा को सम्बोधित किया था। कहते हैं कि उनके भाषण के बाद वहां शिया और सुन्नियों में भाईचारा बढ़ गया था। इसी पर वहां अब आंतरिक राजनीति हो रही है।

अब सवाल ये कि भारत को और उसके प्रधानमंत्री को खामेनेई की मौत पर अपनी प्रतिक्रिया क्या और कैसी देनी चाहिए थी? या फिर चुप रहना ही बेहतर था? अगर ईरान को भारत हितैषी के रूप में देखें तो इतिहास इसकी बहुत पुष्टि नहीं करता और हर धार्मिक नेता के निधन पर देश को प्रतिक्रिया देना आवश्यक नहीं है। वैसे भी कूटनीति में नैतिकता की परिभाषा व्यापक राष्ट्रीय हितों से तय होती है। फिर भी मोदी मानवीय आधार पर शोक जता सकते थे। लेकिन लगता है, उन्होंने किसी 'भावुक नैतिकता' और 'वोट बैंक को एड्रेस' करने की जगह व्यावहारिकता को तरजीह दी। इसके पीछे कारण अमेरिकी दबाव के साथ साथ इजराइल से हमारी बढ़ती नजदीकी और बदलता वर्ल्ड ऑर्डर है। आज ईरान के साथ भारत तो क्या दुनिया का कोई भी देश खुलकर नहीं खड़ा है। रूस और चीन भी केवल बयानों की बाटियां सेंक रहे हैं, ऐसे में भारत ईरान के साथ हमदर्दी जताकर भी क्या हासिल कर लेता। कर भी लेता तो इस बात की क्या गारंटी है कि ईरान में यही सत्ता कायम नहीं रहेगी और भविष्य में भारत किसी संकट में फंसेगा तो क्या ईरान उसका आंख मूंदकर समर्थन करेगा? बेशक परमाणु बम बनाने के नाम पर अमेरिका और इजराइल ने ईरान के साथ जो किया है, वो भी वैश्विक आतंकवाद ही है, लेकिन आतंकी संगठनों को पोस कर ईरान भी प्रकारांतर से वही कर रहा है। ऐसे में 'वेट एंड वॉच' ही ज्यादा भली है या अति उत्साह में कोई प्रतिक्रिया देना?

राजधानी में आत्मीयता और सौहार्द्र के साथ रंगों का पर्व मनाया गया। वहीं हिंदू उत्सव समिति ने पुराने भोपाल में होली पर जुलूस निकाला गया था। दिनभर हुरियारों की टोली गली-मोहल्लों में देखी गई। इस अवसर पर बच्चों ने भी होली पर्व का आनंद उठाया गया। फोटो: प्रवीण वाजपेई

हर आंगन में सुख, शांति और समृद्धि के नए रंग बिखेरता है होली का उत्सव: मुख्यमंत्री

हिंदू उत्सव समिति द्वारा पुराने भोपाल में होली पर जुलूस निकाला गया

ब्रज बरसाने और होली गीतों के साथ मयूर नृत्य की मनमोहक प्रस्तुति से सराबोर हुआ वातावरण

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने बुधवार को मुख्यमंत्री निवास में आयोजित होली मिलन समारोह में प्रदेशवासियों को उत्साह, उमंग और समरसता के पावन पर्व होली की बधाई और मंगलकामनाएं दीं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि यह उत्सव हर आंगन में सुख, शांति और समृद्धि के नए रंग बिखेरे और समाज में सद्भाव-सकारात्मकता और एकता का रंग सदा चटक रहे यही कामना है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सभी से आत्मीयता और सौहार्द के साथ त्यौहार मनाने का आह्वान किया। वहीं हिंदू उत्सव समिति द्वारा पुराने भोपाल में होली पर जुलूस निकाला गया था।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने होली पर मुख्यमंत्री निवास पहुंचे नागरिकों के साथ होली की मंगलकामनाओं का आदान-प्रदान किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने मुख्यमंत्री निवास पधारे संतों से आशीर्वाद प्राप्त किया। वरिष्ठ और गणमान्य नागरिकों का अभिवादन किया तथा सभी आगंतुकों पर पुष्प वर्षा एवं गुलाल उड़ाकर मेजबान के रूप में सबका स्वागत किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सांस्कृतिक प्रस्तुति देने वाले कलाकारों को गुलाल लगाया और पारम्परिक वाद्य यंत्रों के साथ उनके सुर में सुर भी मिलाया।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव को मुख्यमंत्री निवास पधारे राज्य मंत्री श्री नरेंद्र शिवाजी पटेल, वरिष्ठ सांसद श्री विष्णु दत्त शर्मा, विधायक श्री रामेश्वर शर्मा, नगर निगम अध्यक्ष श्री किशन सूर्यवंशी, मुख्य सचिव श्री अनुराग जैन, अपर मुख्य सचिव श्री नीरज मंडलोई, श्री मनु श्रीवास्तव, श्री शिवशेखर शुक्ला, प्रमुख सचिव श्री उमाकांत उमराव, सचिव परिवहन एवं आयुक्त जनसंपर्क श्री मनीष सिंह, खाटू श्याम मंदिर भोपाल के प्रमुख प्रचारक पूज्य अनिल आनंद महाराज सहित कई जनप्रतिनिधियों, गणमान्य नागरिकों, पत्रकार गण और वरिष्ठ अधिकारियों ने मंगल कामनाएं दीं।

मुख्यमंत्री निवास में आयोजित होली मिलन समारोह में उड़ते रंग गुलाल और पुष्प वर्षा के बीच, ब्रज-बरसाने के होली गीतों, पारंपरिक संगीत और मयूर नृत्य के साथ उल्लास और उमंग से सराबोर वातावरण में सभी ने शालीनता के साथ पर्व का आनंद लिया। मंच पर प्रस्तुति दे रहे कलाकारों ने रंग बरसे, होली के दिन दिल खिल जाते हैं, होली खेलें रघुवीरा, आज ब्रज में होली रे रसिया जैसे होली गीतों का सस्वर गायन कर सभी के उल्लास को दोगुना कर दिया। मुख्यमंत्री निवास में होली पर्व पर आयोजित मिलन समारोह में सभी को गुजिया, बालूशाही, ठंडाई सहित कई परंपरागत व्यंजन परोसे गए।

शिवराज ने जन्मदिन पर परिवार संग रोपे पौधे, पीएम ने दी बधाई

अब मामा कोचिंग, चलित अस्पताल जैसी शुरुआत करेंगे

भोपाल (नप्र)। केन्द्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान का 5 मार्च गुरुवार को जन्मदिन था। शिवराज ने अपने 66वें जन्मदिन पर भोपाल के स्मार्ट पार्क में परिवार के साथ पौधारोपण किया। इसके बाद उन्होंने मीडिया से चर्चा में आगामी योजनाओं के बारे में बताया। शिवराज ने बताया कि इस जन्मदिन से वे पांच संकल्प ले रहे हैं। जिसमें पर्यावरण संरक्षण, शिक्षा, सेवा, सहायता और प्रतिभा प्रोत्साहन के लिए काम करेंगे।

पीएम मोदी ने दी बधाई

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने केंद्रीय मंत्री चौहान को बधाई देते हुए एक्स पर लिखा- केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान जी को उनके जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनाएं। वे अपने विनम्र स्वभाव और जनता से जुड़ाव के लिए प्रशंसित हैं। वे हमारे किसानों के कल्याण और कृषि क्षेत्र के विकास के लिए अथक परिश्रम कर रहे हैं। हम उनके दीर्घायु और स्वस्थ जीवन की कामना करते हैं।

इन मुद्दों पर काम करेंगे शिवराज

पर्यावरण संरक्षण- पेड़ केवल लकड़ी का ढांचा नहीं, करोड़ों जीवों का घर और हमारी ऑक्सीजन की फैक्ट्री हैं। धरती का तापमान कम करना है, तो हर हाल में पेड़ लगाना है।

केंद्रीय मंत्री शिवराज चलाएंगे 'मामा कोचिंग' जन्मदिन पर लिए 5 संकल्प

केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान विदिशा, रायसेन और सीहोर जिले के भैरूंदा में मामा कोचिंग शुरू करेंगे। जहां विदिशा संसदीय क्षेत्र के आर्थिक रूप से कमजोर छात्रों को प्रतियोगी परीक्षाओं की फ्री कोचिंग मिलेगी। इसमें मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग की परीक्षाएं शामिल हैं। दरअसल, शिवराज 5 मार्च को अपने 66वें जन्मदिन पर 5 संकल्प लेने जा रहे हैं। ये पर्यावरण, सेवा, सहायता, शिक्षा और प्रतिभा प्रोत्साहन से जुड़े हैं। मामा कोचिंग क्लासेस- पैसे की कमी किसी बच्चे के भविष्य की बाधा नहीं बनेगी। विदिशा, रायसेन और भैरुंदा में हम बेहतरीन और मुफ्त कोचिंग शुरू कर रहे हैं ताकि गरीब का बच्चा भी अफसर बन सके।

प्रतिभा सम्मान- माता-पिता की स्मृति में विदिशा संसदीय क्षेत्र के मेधावी बच्चों के लिए प्रेम-सुंदर प्रतिभा सम्मान का शुभारंभ किया जाएगा। टॉपर्स को सम्मान राशि दी जाएगी।

मोटराइज्ड ट्राई साइकिल- अब हाथों से साइकिल चलाने का कष्ट नहीं होगा। बैटरी वाली मोटराइज्ड साइकिल से हमारे दिव्यांग भाई-बहन न केवल चलेंगे, बल्कि अपना रोजगार भी कर सकेंगे।

मामा चलित अस्पताल- विदिशा की आठों विधानसभाओं के गांव-गांव और मजरे-टोलों तक अब खुद चलकर आएगा मामा चलित अस्पताल।

युवक के सीने में 4 वार किए, मौत

बॉडी को ऑटो से फेंककर भागे बदमाश

भोपाल (नप्र)। भोपाल के निशातपुरा थाना क्षेत्र में अज्ञात बदमाशों ने युवक की चाकू मारकर हत्या कर दी। वारदात बुधवार रात की है। आरोपियों ने युवक के सीने में चार बार वार किए और बाद में उसका शव बेस्ट प्राइस के पास 80 फीट रोड पर ऑटो से फेंककर फरार हो गए।

मृतक की पहचान अरविंद मीणा (19) पुत्र हल्केराम मीणा, निवासी प्रताप नगर 80 फीट रोड थाना निशातपुरा के रूप में हुई है। पोस्टमार्ट्म के बाद गुरुवार दोपहर शव परिजनों को सौंप दिया गया।

परिजनों के अनुसार अरविंद मीणा एक गारमेंट्स शॉप पर सेल्समैन के रूप में काम करता था। बुधवार शाम तक वह दोस्तों के साथ होली खेल रहा था।

जबलपुर में दो पक्षों के बीच मारपीट और पथराव

तीन थानों की पुलिस ने संभाला मोर्चा, होली की रात हुई घटना

जबलपुर (नप्र)। होली के मौके पर मध्य प्रदेश के जबलपुर में दो पक्षों के बीच पथराव हुआ है। घटना बुधवार रात की छोटी ओमती इलाके में हुई है। दोनों तरफ से पथराव के साथ गोली भी चलाई गई है। घटना की जानकारी मिलते ही पुलिस की टीम मौके पर पहुंची। पुलिस ने उपद्रव कर रहे लोगों को मौके से खदेड़ दिया है। एतिहात के तौर पर पुलिसबल को इलाके में तैनात किया गया है।

जानकारी के अनुसार, पथराव के साथ-साथ भीड़ में फायरिंग भी की गई है। हालांकि फायरिंग किसने की है इसकी जानकारी सामने नहीं आई है। मौके पर बेलबाग, हनुमानताल और कोतवाली की पुलिस टीम मौके पर पहुंची।

मारपीट के बाद पथराव- पुलिस के अनुसार, कुछ लोग कदम तलैया के पास होली खेलने के बाद बैठ हुए थे। इसी दौरान कुछ युवक

आए और वहां बैठे लोगों के साथ गाली-गलौज करने लगे। इसके बाद दोनों पक्षों में मारपीट शुरू हो गई। मारपीट के बाद स्थिति बिगड़ गई और दोनों पक्षों की तरफ से पथराव किया जाने लगा। दावा किया जा रहा है कि इस दौरान फायरिंग भी हुई है।

नहीं, दर्ज हुई एफआईआर- मामले की जानकारी देते हुए सीएसपी सोनू कुर्मी ने बताया कि दोनों ही पक्षों के बीच पुरानी रंजिश चल रही थी। उसी रंजिश को लेकर होली के मौके पर दोनों पक्ष सामने-सामने आ गए। वारदात में कौन-कौन शामिल है इसके लिए आसपास लगे सीसीटीवी फुटेज की तलाश की जा रही है। फिलहाल इस मामले में किसी को भी गिरफ्तार नहीं किया गया है। हालात काबू में हैं। किसी भी पक्ष की तरफ से शिकायत दर्ज नहीं कराई गई है।

सीएसपी सोनू कुर्मी ने बताया कि दो पक्षों के बीच पुरानी रंजिश थी। पुरानी रंजिश के कारण दोनों पक्ष आमने-सामने थे। इस मामले में किसी ने भी शिकायत नहीं दर्ज कराई है। हालात काबू में हैं।